उ० प्र० राजर्षि टण्डन
मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

B.Ed.SE.113

संचार विकल्प : मैनुअल विकल्प

संचार विकल्प :मैनुअल विकल्प

खण्ड़–1	**वास्तविक जीवन के संदर्भ में श्रवण बाधिरता को समझना**	
इकाई–1	श्रवण बाधिरता/ बहरेपन के प्रतिमान के बारे में बुनियादी जागरूकता (चिकित्सा और सामाजिक प्रतिमान)।	**5**
इकाई–2	बहरेपन और संप्रेषण संबंधी चुनौतियों/चिंताओं के बारे में बुनियादी जागरूकता।	**18**
इकाई–3	संस्कृति के संदर्भ में श्रवण बाधिरता पर बुनियादी जागरूकता।	**30**
खण्ड़–2	**भारतीय परिदृश्य में हाथ–संबंधी / मैन्युअल संप्रेषण विकल्पों की अग्रिम समझ**	
/	भारतीय सांकेतिक भाषा के संबंध में घरेलू माहौल को बेहतर बनाने के साथ–साथ परिवारों के लिए प्रशिक्षण और मार्गदर्शन।	**45**
इकाई–5	हाथ–संबंधी/मैनुअल संचार विकल्प का उपयोग करने वाले छात्रों के लिए मुख्यधारा के पाठशालाओं/कक्षाओं को व्यवस्थित करना।	**63**
इकाई–6	संक्षिप्त सामान्य वार्तालापों में प्राकृतिक संकेतों का अभ्यास करना।	**78**
खण्ड़–3	**सांकेतिक भाषा कौशल विकास : उच्च स्तर के ग्रहणशील और अभिव्यंजक कौशल की ओर**	
इकाई–7	बातचीत और चर्चाओं में लिंग, संख्या, व्यक्ति, काल और पहलू को सांकेतिक भाषा में व्यक्त करना सीखना।	**91**
इकाई–8	बातचीत और चर्चाओं के दौरान भारतीय सांकेतिक भाषा में वाक्य संरचना का अभ्यास करना।	**127**
इकाई–9	भारतीय सांकेतिक भाषा पाठ्यक्रम पर विचार - सिद्धांत से अभ्यास तक।	**144**

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

संरक्षक एवं मार्गदर्शक

प्रो0 सत्यकाम — **कुलपति,** उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

विशेषज्ञ समिति

प्रो0 पी0 के0 स्टालिन — **निदेशक,शिक्षा विद्याशाखा,** उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

प्रो0 पी0 के0 पाण्डेय — **आचार्य, शिक्षा विद्याशाखा,** उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

प्रो0 छत्रसाल सिंह — **आचार्य, शिक्षा विद्याशाखा,** उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

प्रो0के0 एस0 मिश्रा — **पूर्व कुलपति एवं पूर्व विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग,** इलाहाबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय, प्रयागराज

प्रो0 धनन्जय यादव — **आचाय, विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग,** इलाहाबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय,प्रयागराज

प्रो0 मीनाक्षी सिंह — **आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग** बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय,वाराणसी

डॉ0 जी0 के0 द्विवेदी — **सह–आचार्य, शिक्षा विद्याशाखा,** उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

डॉ0 दिनेश सिंह — **सह–आचार्य, शिक्षा विद्याशाखा,** उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

लेखक

डॉ0 पी0 रामकृष्णा — **सहायक आचार्य (विशेष शिक्षा) श्रवण बाधिता** जामिया मिलिया इज्लामिया विश्वविद्यालय,नई दिल्ली (इकाई 1,2,3,4,5,6,7,8,,9,)

सम्पादक

डॉ0 नीता मिश्रा — **सहायक आचार्य (विशेष शिक्षा) शिक्षा विद्याशाखा** उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज (इकाई 1,2,3,4,5,6,7,8,9,)

परिमापक

डॉ0 दिनेश सिंह — **सह–आचार्य, शिक्षा विद्याशाखा,** उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज (इकाई 1,2,3,4,5,6,7,8,9,)

समन्वयक

डॉ. नीता मिश्रा — **सहायक आचार्य, (विशेष शिक्षा), शिक्षा विद्याशाखा,** उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज (इकाई 1,2,3,4,5,6,7,8,9,)

प्रकाशक

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

ISBN- **978-93-48987-12-9**

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज सर्वाधिकार सुरक्षित। इस पाठयसामग्री का कोई भी अंश उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

नोट : पाठय सामग्री में मुद्रित सामग्री के विचारों एवं आमड़ों आदि के प्रति विश्वविद्यालय उत्तरदायी नहीं है।

प्रकाशन – उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

प्रकाशक – कुलसचिव , उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज – 2025.

मुद्रक – के0 सी0 प्रिटिंग एण्ड एलाइड वर्क्स , पंचवटी, मथुरा – 281003.

खण्ड परिचय

संप्रेषण विकल्प : हाथ–संबंधी / मैनुअल विकल्प (भारतीय सांकेतिक भाषा)

खण्ड 1 – वास्तविक जीवन के संदर्भ में श्रवण बाधिरता को समझना

इस खण्ड में आप वास्तविक जीवन के संदर्भ में श्रवण बाधिरता या बहरेपन को समझने में अवगत हो सकेंगें। इस खण्ड में कुल तीन इकाईयाँ (इकाई 1 से लेकर इकाई 3 तक) है।

इकाई 1 में आप श्रवण बाधिरता/बहरेपन के प्रतिमान से संबंधित बुनियादी जागरूकता (चिकित्सा और सामाजिक प्रतिमान) से अवगत हो सकेंगें।

इकाई 2 में आप बहरेपन और संप्रेषण संबंधी चुनौतियों/चिंताओं के बुनियादी जागरूकता के बारें जान सकेगें।

इकाई 3 में आप श्रवण बाधित संस्कृति के संदर्भ में बुनियादी जागरूकता से संबंधित विषयों से अवगत हो सकेंगें ।

खण्ड 2 – भारतीय परिदृश्य में हाथ–संबंधी/मैन्युअल संप्रेषण विकल्पों की अग्रिम समझ

इस खण्ड में आप भारतीय परिदृश्य में हाथ–संबंधी/मैन्युअल संप्रेषण विकल्पों की अग्रिम समझ के बारें में समझने में अवगत हो सकेंगें। इस खण्ड में कुल तीन इकाईयाँ (इकाई 4 से लेकर इकाई 6 तक) है।

इकाई 4 में आप भारतीय सांकेतिक भाषा के संबंध में घरेलू माहौल को बेहतर बनाने के साथ–साथ परिवारों के लिए प्रशिक्षण और मार्गदर्शन से अवगत हो सकेंगें।

इकाई 5 में आप हाथ–संबंधी/मैनुअल संप्रेषण विकल्प का उपयोग करने वाले छात्रों के लिए मुख्यधारा के पाठशालाओं/कक्षाओं को व्यवस्थित करनेवाले विषयों के बारें में समझगें।

इकाई 6 में आप संक्षिप्त सामान्य वार्तालापों में प्राकृतिक संकेतों का अभ्यास करने के अलग अलग संकेतों से अवगत हो सकेंगें।

खण्ड 3 – सांकेतिक भाषा कौशल विकास उच्च स्तर के ग्रहणशील और अभिव्यंजक कौशल की ओर

इस खण्ड में आप भारतीय सांकेतिक भाषा कौशल विकास में उच्च स्तर के ग्रहणशील और अभिव्यंजक कौशलों के बारें में अवगत हो सकेंगें। इस खण्ड में कुल तीन इकाईयाँ (इकाई 7 से लेकर इकाई 9 तक) है।

इकाई 7– में आप बातचीत और चर्चाओं में लिंग, संख्या, व्यक्ति, काल और पहलू को सांकेतिक भाषा में व्यक्त करना सीखने के बारें में समझेंगें ।

इकाई 8 –में आप बातचीत और चर्चाओं के दौरान भारतीय सांकेतिक भाषा में वाक्य संरचना का अभ्यास करना सीखेगें ।

इकाई 9– में आप भारतीय सांकेतिक भाषा पाठ्यक्रम पर विचारों से अवगत हो सकेंगें ।

खण्ड 1

वास्तविक जीवन के संदर्भ में श्रवण बाधिता को समझना

इकाई 1

श्रवण बाधिरता/ बहरेपन के प्रतिमान के बारे में बुनियादी जागरूकता (चिकित्सा और सामाजिक प्रतिमान)

इकाई संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 इकाई के उद्देश्य

1.3 बहरेपन के प्रतिमानों की बुनियादी जागरूकता

1.3.1 श्रवण बाधिता की जागरूकता

1.4 बहरेपन के प्रतिमान

1.4.1 सांस्कृतिक प्रतिमान

1.4.2 सामाजिक प्रतिमान

1.4.3 चिकित्सा प्रतिमान

1.4.4 चिकित्सा और सामाजिक प्रतिमान की जागरूकता

1.5 "बड़ा बिग डी" (Big D) और "छोटा स्माल डी" (Small d) को परिभाषित करना

1.6 सारांश

1.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.8 अभ्यास कार्य

1.9 चर्चा के बिन्दु

110 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.1 प्रस्तावना

दुनिया में तीसरी सबसे आम दिव्यांगता श्रवण बाधिता है। श्रवण बाधिता की अलग–अलग स्तर हैं, हल्की सुनने में बाधिता होने से लेकर अत्यधिक बहरे होने तक। विरासत, मातृ–रूबेला या जन्म के समय जटिलताओं के कारण, कुछ संक्रामक रोग जैसे कि मेनिन्जाइटिस, ओटोटॉक्सिक दवाओं का उपयोग, अत्यधिक शोर के संपर्क में आना और उम्र बढ़ना से श्रवण बाधिता हो सकता है। यदि प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल स्तर पर सामान्य कारणों से निपटा जाए तो लगभग श्रवण दोष और श्रवण बाधिता को रोका जा सकता है। कान की बीमारियाँ, श्रवण दोष और श्रवण बाधिता को पहचानने के लिए व्यावसायिक जांच एक प्रभावी उपकरण है, जिस से शीघ्र पहचान और प्रबंधन की व्यवस्था कर सकते है।

सुनने की अक्षमता वाले लोग सांस्कृतिक और भाषाई रुप से अल्पसंख्यक हैं, वे भी समाज में एक जातीय समूह का हिस्सा बनते हैं। सुनने की अक्षमता वाले लोग एक सामूहिक नाम, भाषा, संस्कृति, इतिहास, मूल्य, रीति–रिवाज और व्यवहार मानदंड, समुदाय और रिश्तेदारी की भावनाओं, कला और साहित्य, और सामाजिक/संगठनात्मक संरचनाओं को साझा करते हैं। सुनने की अक्षमता वाले लोगों के साथ रहने वाले लोग जैसे दोस्तों या परिवार, काम के सहयोगियों, उनके संप्रेषण आवश्यकताओं से अवगत नहीं होने की कारण से श्रवण बाधित लोगों के साथ संवाद करते समय चुनौतियों का अनुभव कर सकते हैं। सुनने में कठिनता और श्रवण बाधित लोगों के साथ सुनने में सक्षम वाली जनता संवाद/बातचीत करने की तरीका समझना एक महत्वपूर्ण बात है। संप्रेषण को अनुकूलित करना मुश्किल नहीं है, लेकिन प्राप्त करने वालों के लिए, यह ताजी हवा की सांस हो सकती है। सुनने की अक्षमता वाले लोगों से आत्मविश्वास के साथ संवाद करने के लिए किसी भी व्यक्ति सांकेतिक भाषा सीखना जरुरी होती है। इस प्रकार श्रवण बाधित लोगों के कई सारे बुनियादी विषय जैसे श्रवण बाधिता या बहरेपन और उसके प्रतिमान के बारे में इस इकाई में जानने की कोशिश करेंगें ।

1.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप इस योग्य हो जायेगे कि : –

- बहरेपन के प्रतिमानों की बुनियादी जागरूकता को बहरेपन के प्रतिमानों को समझ सकेगें।
- "बड़ा बिग डी" (Big D) और "छोटा स्माल डी" (Small d) को परिभाषित कर सकेंगे।
- COD की शब्द कव समप्रत्यय का उपयोग कर सकेगें।

1.3 बहरेपन के प्रतिमानों की बुनियादी जागरूकता (चिकित्सा और सामाजिक प्रतिमान)

1.3.1 श्रवण बाधिता की जागरूकता

सुनने की अक्षमता/बहरापन एक छिपी हुई दिव्यांगता है। किसी भी श्रवण बाधित व्यक्ति को आप शायद भीड़ में चिह्नित नहीं कर सकते है, जब तक वह श्रवण बाधित व्यक्ति किसी से संवाद करना शुरू नहीं किया हो। तो आप कैसे जानते हैं कि कोई श्रवण बाधित है, श्रवण बाधित होना कैसा होता है, और आप कैसे संवाद कर सकते हैं ? यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि लोग केवल श्रवण बाधित नहीं होते हैं। श्रवण बाधिता सुनने की अक्षमता की स्तर और प्रकार के आधार पर विभिन्न श्रेणियाँ हैं।

श्रवण बाधित एक ऐसा शब्द है जिसका प्रयोग किसी न किसी प्रकार के बहरेपन से पीड़ित सभी लोगों को शामिल करने के लिए किया जाता है और इसमें वे लोग भी शामिल होते हैं जो कम सुनने वाले होते हैं, हल्के से मध्यम सुनने में अक्षम होते हैं और संभवतः एक या दो श्रवण यंत्र पहनते होंगे। उन्हें स्पष्ट रूप से भाषण सुनने में कठिनाई होती है, लेकिन आम तौर पर वे रोजमर्रा की गतिविधियों में शामिल होने में सक्षम होते हैं। आंशिक रूप से श्रवण बाधित लोगों में सुनने की क्षमता अधिक गंभीर होती है जो रोजमर्रा की गतिविधियों और संचार को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। वे भाषण/होंठ–पठन और सांकेतिक भाषा दोनों का उपयोग कर सकते हैं और संभवतः श्रवण यंत्र पहनते हैं।

श्रवण बाधित लोग, जो अधिक सुनने में अक्षम हैं, उनकी सुनने की क्षमता बहुत कम या बिल्कुल नहीं होती है और जबकि कुछ लोग श्रवण यंत्र पहनते हैं, ये पर्यावरणीय जागरूकता में मदद करने के अलावा और कुछ नहीं करती हैं और भाषण की समझ में ज्यादा मदद नहीं करते हैं। अत्यधिक सुनने में अक्षम लोगों को अलग–अलग प्रकार से विभाजित किया जा सकता है। दरअसल 'बहरे' लोग बचपन के बाद अपनी अधिकांश या पूरी सुनने की संवेदनशीलता खो चुके होते हैं । बोलना उनकी पहली संचार विधि थी इसलिए वे भाषण और होंठ पढ़ने का उपयोग नहीं करते हैं, लेकिन कुछ लोग सांकेतिक (साइन) समर्थित अंग्रेजी का उपयोग करते हैं; अन्य लोग भारतीय सांकेतिक भाषा (आई.एस.एल) का उपयोग करना चुनते हैं।

समुदाय में संचार का हिस्सा बेहद महत्वपूर्ण हैं। लेकिन श्रवण बाधित लोग सुनने में सक्षम लोगों के सामान्य संचार तरीकों को पालन करने में असफल रहते हैं, जैसे चेतावनी के रूप में चिल्लाना, डॉक्टरों के पास अपना नाम सुनना, सड़क पर जानकारी सुनना, या किसी अजनबी के साथ बातचीत करना। इसका मतलब है कि श्रवण बाधित लोग अलग–थलग महसूस कर सकते हैं और उन्हें आपात स्थिति में जानकारी या सहायता प्राप्त करने में कठिनाई हो सकती है। यही कारण है कि श्रवण बाधित लोगों में अवसाद, चिंता और इसी तरह की समस्याओं से प्रभावित होने की संभावना सुनने वाले लोगों की तुलना में दोगुनी होती है।

एक श्रवण बाधित के बारें में आप लोगों की राय क्या हैं ? अगर आप एक श्रवण बाधित व्यक्ति हो आप कैसे महसूस कर रहे हैं ? इसका सुराग पाने के लिए आप अपनी आंखों पर भरोसा करते हैं, और आपके आस–पास क्या हो रहा है, इसके बारे में जानने के लिए आप फर्श में कंपन जैसे अन्य

सुरागों पर भरोसा करते हैं। अक्सर अन्य लोग आपके प्रति अपने व्यवहार के तरीके को बदल देंगे, क्योंकि वे चिढ़ जाते हैं कि उन्हें खुद को दोहराना पड़ता है, या निराश होते हैं कि आप उन्हें नहीं समझते हैं ।

सीमित सुनने की क्षमता वाले या होंठ पढ़ने वाले श्रवण बाधित लोगों से संवाद करते समय, स्पष्ट रूप से बोलने से उनको मदद मिलेगी । इसके साथ–साथ धीरे–धीरे या ज़ोर से बोलने या अपने चेहरे के भावों को बढ़ा–चढ़ाकर बोलने से आप के संवाद को समझने की कोशिश करने वाले श्रवण बाधित लोगों के लिए चीज़ें कठिन हो जाती हैं। वास्तव में ये भी कोशिश करें कि श्रवण बाधित लोगों से संवाद करते समय आप उनके सामने ही रहें और कहीं न मुड़ें या दूसरी ओर न देखें। अगर आप इस तरह संवाद करने से चीज़ें श्रवण बाधित लोगों को स्पष्ट समझ में आता है, लेकिन बातचीत में हम ऐसा हर समय करते हैं, लेकिन हमें इस चीज को ध्यान में रखना जरुरी है। संक्षिप्ताक्षरों का उपयोग किए बिना, पूरे वाक्यों में स्पष्ट रूप से बोलना भी जरुरी है। यदि होंठ पढ़ने वाले आपको पहली बार में समझ नहीं पाता है तो खुद को दोहराने के लिए तैयार रहना भी होगा। यहां तक कि सबसे अच्छे होंठ–पाठक भी सुनने में सक्षमवाले लोगों से कहे गए आधे से भी कम शब्दों को पकड़ पाते हैं, प्राकृतिक चेहरे के भाव और हाथ के इशारे भी वास्तव में संवाद को समझने में मदद कर सकते हैं।

श्रवण बाधित लोगों के साथ संचार करते समय वातावरण में पृष्ठभूमि शोर को कम रखने का प्रयास करें, और यदि आवश्यक हो तो किसी शांत जगह पर चले जाएँ तो बेहतर होगा। यदि आवश्यक हो तो आपने जो बताया उसे दोहराने में संकोच न करें। जब आप होंठ पढ़ने का अनुसरण करने वाले श्रवण बाधित व्यक्ति के साथ संवाद करना शुरू करते हैं, तो आपको चिल्लाना नहीं चाहिए या आपको धीरे–धीरे नहीं बोलना चाहिए, इसके अलावा आपको स्वाभाविक रूप से स्पष्ट बोलने की आवश्यकता है। बातचीत के दौरान आप आमतौर पर जितनी दूरी पर खड़े होते हैं, उतनी ही दूरी पर खड़े होने से दूसरे व्यक्ति को आपके चेहरे के भाव और शारीरिक भाषा को समझने में मदद मिलती है, जिससे बेहतर समझ में भी मदद मिलती है।

1.4 बहरेपन के प्रतिमान

बहरेपन के प्रतिमान को तीन प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है। वे तीन या तो सामाजिक या जैविक विज्ञान में निहित हैं। सांस्कृतिक प्रतिमान, सामाजिक प्रतिमान और चिकित्सा (या दुर्बलता) बहरेपन के तीन प्रतिमान हैं। जिस प्रतिमान के माध्यम से श्रवण बाधित व्यक्ति को देखा जाता है, वह प्रभावित कर सकता है कि आत्म–धारणा के साथ उनको कैसा व्यवहार किया गया है ।

सांस्कृतिक प्रतिमान में, श्रवण बाधिता एक ऐसी संस्कृति से संबंधित होते हैं जिसमें वे न तो अशक्त समझते हैं और न ही दिव्यांग समझते हैं, बल्कि संवाद/बातचीत करने व्याकरणिक संरचना के साथ उनकी अपनी प्राकृतिक भाषा होती है।

चिकित्सा प्रतिमान में, श्रवण बाधिता को अवांछनीय के रूप में देखा जाता है, और इस स्थिति को "ठीक" करने के लिए श्रवण बाधित व्यक्ति के साथ–साथ समाज को भी लाभ माना जाता है।

सामाजिक प्रतिमान में, बहरापन कोई बीमारी या दुर्बलता नहीं बल्कि एक अंतर है। बधिर लोग केवल अन्य लोगों द्वारा बनाई गई बाधाओं के कारण अक्षम होते हैं। बधिर लोगों की अपनी भाषा होती है और वे भाषाई और सांस्कृतिक अल्पसंख्यक होते है। बधिर लोग दृश्य सूचना, प्रौद्योगिकी और दुभाषियों के माध्यम से पहुंच के साथ सामान्य जीवन जी सकते हैं।

1.4.1 सांस्कृतिक प्रतिमान

बहरेपन के सांस्कृतिक प्रतिमान के भीतर, श्रवण बाधित लोग खुद को "दिव्यांगता समूह" के बजाय एक भाषाई और सांस्कृतिक अल्पसंख्यक समुदाय के रूप में देखते हैं। श्रवण बाधित संस्कृति के पैरोकार सांस्कृतिक बहरेपन को बहरेपन से एक विकृति विज्ञान के रूप में अलग करने के लिए बड़ा बिग "डी" "D" (Capital D) का उपयोग करते हैं।

श्रवण बाधित संस्कृति इस मायने में अलग है कि सुनने में असमर्थता को "नुकसान" या कुछ ऐसा नहीं माना जाता है, जो किसी व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। श्रवण बाधित समुदाय के लिए व्यवहार, मूल्यों, ज्ञान और सांकेतिक भाषा के प्रवाह में बहरा होना एक संपत्ति है। बधिरों का भाषा अल्पसंख्यक होने का अनुभव अन्य अल्पसंख्यकों की मूल भाषाओं के समान है जो समूह की पहचान और उनकी संस्कृति के संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण हैं। बधिरों का राष्ट्रीय संघ (NAD) & द नेशनल एसोसिएशन ऑफ द डेफ जैसे श्रवण बाधित संघों और श्रवण बाधित विद्यालयों ने सांकेतिक भाषा और श्रवण बाधित संस्कृति के संरक्षण में बड़ी भूमिका निभाई है। श्रवण बाधित बच्चों के लिए आवासीय विद्यालय समृद्ध संस्कृति और भाषा के प्रसारण में एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करते हैं, क्योंकि वे बच्चों के लिए सांकेतिक भाषा हासिल करने और उसमें महारत हासिल करने और श्रवण बाधित सांस्कृतिक मूल्यों को पारित करने के लिए आदर्श वातावरण हैं। सभी शैक्षिक समायोजन की तरह, यह बधिर संस्कृति का वातावरण श्रवण बाधित बच्चों को मूल्यवान जीवन पाठ और कौशल प्रदान करने के लिए महत्वपूर्ण हैं जो उन्हें किसी भी ऐसे वातावरण में समृद्ध होने में मदद करेंगे। बहरापन एक "व्यक्तिगत त्रासदी" है, इस दृष्टिकोण को अपनाने के बजाय, बहरेपन के चिकित्सा प्रतिमान के विपरीत समझते हुए श्रवण बाधित समुदाय बधिरों के अनुभव के सभी पहलुओं को सकारात्मक रूप में देखते है। श्रवण बाधित बच्चे के जन्म को उत्सव के कारण के रूप में देखा जाता है। श्रवण बाधित लोग बच्चे के पालन–पोषण के दृष्टिकोण को सुनने में सक्षम वाले लोगों के रूप में इंगित करते हैं।

उदाहरण के लिए, सुनने में सक्षम वाले माता–पिता को यह महसूस हो सकता है कि वे अपने अनुभव और सुनने की स्थिति की गहन समझ के कारण अपने सुनने में सक्षम वाले बच्चे से संबंधित करते हैं। यह इस प्रकार है कि एक श्रवण बाधित माता–पिता को श्रवण बाधित बच्चे की परवरिश

करने में आसान अनुभव होंगे क्योंकि श्रवण बाधित माता–पिता को बहरे होने की स्थिति की अंतरंग समझ होती है। श्रवण बाधित माता–पिता की सफलता के प्रमाण शैक्षिक उपलब्धि में प्रकट होते हैं।

जिन श्रवण बाधित बच्चों के माता–पिता बधिर होते हैं और वे जन्म से ही सांकेतिक भाषा में संवाद करते हैं, वे आम तौर पर अपनी शिक्षा में बेहतर प्रदर्शन करते हैं। जिन श्रवण बाधित बच्चों के माता–पिता सुनने में सक्षम हैं, वे अपनी शिक्षा में बेहतर प्रदर्शन नहीं कर सकते हैं, क्योंकि उनके माता–पिता सांकेतिक भाषा का उपयोग नहीं कर सकते हैं।

इस संस्कृति में वे बच्चे जिन्होंने भाषण और होंठ पढ़ने वाले, कृत्रिम उपकरणों जैसे कर्णावत प्रत्यारोपण, श्रवण सहायता प्रौद्योगिकी, और कृत्रिम भाषा प्रणाली जैसे सटीक अंग्रेजी में हस्ताक्षर करनेवाले और उद्धृत भाषण (क्यूड स्पीच) का उपयोग करनेवाले शामिल हैं। जन्म से ही सांकेतिक भाषा सीखने वाले श्रवण बाधित बच्चे भी अपने सुनने में सक्षम वाले समकक्षों के समान दर पर भाषा दक्षता हासिल कर लेते हैं। लेकिन सुनने में सक्षम वाले माता–पिता से पैदा हुए बधिर बच्चों में, जन्म से सांकेतिक भाषा का उपयोग करने वाले बधिर बच्चों की तुलना में भाषा दक्षता विकसित नहीं हो सकती है।

श्रवण बाधित समुदाय के सदस्य बहरेपन को ऑडियोलॉजिकल कारक के बजाय सांस्कृतिक रूप से निर्धारित व्यवहार के मामले के रूप में परिभाषित करते हैं। इस प्रकार, श्रवण बाधित समुदाय के भीतर बहरे लोग होते हैं, लेकिन इन्हीं तक सीमित नहीं हैं, विशेष रूप से जन्मजात बहरे लोग, साथ ही उनके सुनने में सक्षम वाले या श्रवण बाधित बच्चे (श्रवण बाधित वयस्कों के सुनने में सक्षम वाले बच्चों को आमतौर पर CODA कहा जाता हैः श्रवण बाधित वयस्कों का बच्चे), परिवार, दोस्त और उनके सामाजिक नेटवर्क के अन्य सदस्य जिनकी प्राथमिक भाषा उनके राष्ट्र या समुदाय की सांकेतिक भाषा है। बहरेपन का यह सांस्कृतिक प्रतिमान अल्पसंख्यक भाषा समूह के सामाजिक नेटवर्क के प्राकृतिक विकास का प्रतिनिधित्व करता है। सांस्कृतिक प्रतिमान के वैचारिक ढांचे से निहित प्रश्न आते हैं, जैसेः बहरापन उस भौतिक और सामाजिक वातावरण से किस प्रकार प्रभावित होता है जिसमें वह अंतर्निहित है; इस संस्कृति की विशेषता बताने वाले अन्योन्याश्रित मूल्य, रीति–रिवाज, कला रूप, परंपराएं, संगठन और भाषा क्या हैं?

1.4.2 सामाजिक प्रतिमान

सामाजिक प्रतिमान के मुताबिक बहरापन कोई बीमारी या दुर्बलता नहीं बल्कि एक सामाजिक अंतर है। बधिर लोग केवल अन्य लोगों द्वारा बनाई गई बाधाओं के कारण अक्षम होते हैं। बधिर लोगों की अपनी भाषा होती है और वे भाषाई और सांस्कृतिक अल्पसंख्यक होते हैं। बहरेपन का सामाजिक प्रतिमान दिव्यांगता के सामाजिक प्रतिमान से उपजा है। सामाजिक दिव्यांगता की अवधारणा दिव्यांग और अपने परिवार, दोस्तों और संबद्ध सामाजिक और राजनीतिक नेटवर्क लोगों द्वारा बनाई गई थी। मानव सेवा क्षेत्रों और सामाजिक विज्ञान के पेशेवरों ने सामाजिक प्रतिमान में बहुत योगदान दिया। यह प्रतिमान दो कारकों के आधार पर किसी व्यक्ति की अक्षमता का वर्णन करता हैः–

- शारीरिक या मानसिक लक्षण जो इस दिव्यांगता का कारण बनते हैं
- उनका वातावरण, क्योंकि यह दूसरों की धारणा से प्रभावित होता है।

इस दृष्टिकोण के माध्यम से जो श्रवण बाधित हैं, उन्हें सुनने में असमर्थता के कारण अक्षम माना जाता है, जिसे उनके परिवेश में सुनने में सक्षम वाले समकक्षों ने ऐतिहासिक रूप से नुकसान के रूप में देखा है। श्रवण बाधित लोगों को अन्य दिव्यांगता भी हो सकते हैं। दिव्यांग लोग इस बात की पुष्टि करते हैं कि पर्यावरण का बनावट अक्सर उन्हें अक्षम कर देता है। अधिक सुलभ वातावरण में श्रवण बाधित लोगों को बोली जाने वाले भाषा के साथ साथ भारतीय सांकेतिक भाषा तक पहुंच दुभाषिए या अन्य तकनीकी द्वारा होती है जिससे वे अपने आप को अक्षम नहीं समझते हैं। ऐसे क्षेत्र जहां सुनने में सक्षम वाले और श्रवण बाधित व्यक्ति बातचीत करते हैं उसको संपर्क क्षेत्र कहलाते हैं, अक्सर श्रवण बाधित व्यक्तियों को नुकसान में छोड़ देते हैं क्योंकि पर्यावरण उनके सुनने में सक्षम वाले समकक्षों की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया जाता है। मार्था वाइनयार्ड का इतिहास के अनुसार विशेष रूप से मार्था की वाइनयार्ड सांकेतिक भाषा को देखते हुए, इस धारणा का समर्थन करता है। एक समय में, उस जगह के सुनने में सक्षम निवासियों को अपने पड़ोसियों के साथ संवाद करने के लिए अपने बोली जाने वाली भाषा के साथ साथ सांकेतिक भाषा का भी उपयोग करते थे। श्रवण बाधित लोगों और कुछ अक्षमताओं को, चिकित्सा हस्तक्षेप से स्वास्थ्य समस्याओं में सुधार हो सकता है। यह श्रवण बाधित आबादी के कुछ हिस्सों के लिए सच है, क्योंकि कुछ मामलों में चिकित्सा तकनीकों की सहायता से सुनने की क्षमता मिल सकती है। सामाजिक प्रतिमान इस कठोर सच्चाई को स्वीकार करता है कि चिकित्सा हस्तक्षेप सामाजिक मुद्दों को संबोधित नहीं करता है – चाहे उसकी सीमा या सफलता कुछ भी हो।

अक्षम से सक्षम वातावरण में बदलते परिवेश के अलावा, सामाजिक प्रतिमान के समर्थक समाज में दिव्यांग लोगों के पूर्ण एकीकरण का समर्थन करते हैं। वे उन साथियों के साथ अधिकतम एकीकरण को प्रोत्साहित करते हैं जो अपने पाठशाला जैसे वातावरण से अक्षम नहीं हैं। अंततः,सामाजिक प्रतिमान के समर्थकों का लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी लोग "सभी मानवाधिकारों और मौलिक स्वतंत्रता" का आनंद लेने में पूरी तरह सक्षम हों। दिव्यांगता के सामाजिक प्रतिमान "सर्व–समावेशी" विद्यालय वातावरण की विचारधारा का सांस्कृतिक प्रतिमान में पालन नहीं किया जाता है। आवासीय विद्यालय, श्रवण बाधित और सुनने में अक्षम वाले बच्चों को उनके सुनने में सक्षम वाले समकक्षों से अलग करते हैं। इन विद्यालयों का अस्तित्व बधिरों के अनुभव की समग्रता को खारिज करने के बजाय उसकी समग्रता का सम्मान करने और उसे अपनाने का एक उदाहरण प्रदर्शित करता है। जबकि सामाजिक प्रतिमान का हर स्तर पर समावेशन को बढ़ावा देना एक महान सिद्धांत है, लेकिन व्यवहार में हमेशा सबसे अच्छा वातावरण नहीं हो सकता है। बहरेपन के मामले में, मुख्यधारा के विद्यालयी शिक्षा के माहौल में एक बच्चा बहुत कुछ खो सकता है। खराब तरीके से निर्मित मुख्यधारा के वातावरण में, सहपाठियों के साथ संबंधों को बढ़ावा देना मुश्किल हो सकता है और शिक्षकों द्वारा मौखिक रूप से साझा की जाने वाली श्रवण संबंधी महत्वपूर्ण सामग्री छूट सकती है। परिणामस्वरूप, श्रवण बाधित बच्चा शैक्षणिक और सामाजिक रूप से पिछड़ सकता है। आवासीय

विद्यालय की समायोजन में, इन चुनौतियों का एक ही हद तक अनुभव नहीं किया जा सकता है और श्रवण बाधित बच्चों के सामाजिक और शैक्षणिक जीवन को फलने–फूलने की अनुमति देगा।

1.4.3 चिकित्सा प्रतिमान

बधिरता का चिकित्सीय प्रतिमान चिकित्सीय, सामाजिक कल्याण और बहुसंख्यक सांस्कृतिक धारणाओं से उत्पन्न हुआ है, जिनमें सुनने की क्षमता का अभाव एक बीमारी या शारीरिक दिव्यांगता माना जाता है। यह दिव्यांगता के अधिक व्यापक और दूरगामी चिकित्सा प्रतिमान से उपजा है। इस परिप्रेक्ष्य में कि बहरापन एक दुर्बलता है, सुनने में असमर्थता किसी व्यक्ति की पर्यावरणीय संकेतों पर प्रतिक्रिया करने, संवाद करने और संगीत जैसी मुख्यधारा की संस्कृति के पहलुओं का आनंद लेने की क्षमता में हस्तक्षेप करती है । इस प्रतिमान को आमतौर पर उन लोगों के साथ पहचाना जाता है जो ऊँचा सुनने वाला होते हैं और साथ ही ऐसे लोग भी होते हैं जिन्हें बोली जाने वाली भाषा में महारत हासिल करने के बाद श्रवण दिव्यांगता से बाधित हो।

चिकित्सा प्रतिमान के भीतर, बहरेपन की अवधारणा एक "व्यक्तिगत त्रासदी" के दृष्टिकोण से देखा जाता है, जो यह दर्शाता है कि इसे हर संभव तरीके से टाला, मिटाया या सामान्य बनाया जाना चाहिए। अक्सर, बहरेपन को त्रासदी के रूप में देखने वाले पेशेवरों के दृष्टिकोण, बधिर बच्चों के माता–पिता के बीच किसी प्रकार की हानि की प्रतिक्रियाओं को बढ़ावा देते हैं; इस प्रकार, सुनने में सक्षम वाले माता–पिता अपने बच्चे के बहरेपन के निदान को एक त्रासदी के रूप में अनुभव कर सकते हैं, तथा दुःख की प्रतिक्रिया भी कर सकते हैं। इसी तरह, तनाव और क्रोध जैसी सामान्य प्रतिक्रियाएं बहरेपन के लिए आवश्यक रूप से समझने योग्य मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाएं नहीं हैं, लेकिन उन स्थितियों के परिणामस्वरूप हो सकती हैं जिनमें माता–पिता को दूसरों से उनकी आवश्यकताओं और प्रश्नों के लिए पर्याप्त प्रतिक्रिया नहीं मिली हो।

जबकि चिकित्सा नैतिकता और कानून यह निर्देश देते हैं कि यह रोगी (या रोगी के कानूनी प्रतिनिधि) पर निर्भर करता है कि वह अपने इच्छित उपचार का फैसला करें, मुद्रित और पेशेवर साहित्य में कर्णावत प्रत्यारोपण, मौखिक शिक्षा और मुख्यधारा में स्थानन के उपयोग के बारे में चर्चा को तेजी से सामान्य बनाया जा रहा है; ये सभी बहरेपन के चिकित्सा प्रतिमान के तहत लोकप्रिय विकल्प बन रहे हैं।

चिकित्सा प्रतिमान से पता चलता है कि श्रवण यंत्र, कर्णावत प्रत्यारोपण, सहायक श्रवण उपकरण और होंठ पढ़ने जैसी तकनीक के इस्तेमाल से बहरेपन के प्रभाव को कम किया जा सकता है। इसी तरह, डॉक्टर और वैज्ञानिक जो सुनने की क्षमता को बहाल करने वाली तकनीकों की मांग के अनुसार अनुसंधान में लगे हुए हैं। यह विचार कि बहरापन एक "दिव्यांगता" है, सामाजिक कल्याण से संबंधित राजनीतिक वातावरण में आर्थिक परिणाम भी पैदा करता है। यह वह आधार है जिस पर कई विकसित देशों की सरकारें कर्णावर्त प्रत्यारोपण और अन्य उपचारों की लागत के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करती हैं। बधिरता के चिकित्सीय प्रतिमान के अंतर्गत, अंतर्निहित प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठ सकते हैं, जैसेः "किस मानदंड से और किसके द्वारा दिव्यांगता को दुर्बलता माना जाता

है; दिव्यांगता कैसे उत्पन्न हुई; उपलब्ध उपचार के जोखिम और लाभ क्या हैं; दिव्यांगता के अक्षमकारी प्रभावों को न्यूनतम करने के लिए क्या किया जा सकता है?"

बोध प्रश्न

टिप्पणीक – नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए ।

ख – इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की मिलान करें ।

प्र 1. बहरेपन के प्रतिमान के बारें में बताइए ?

_____

_____

_____

प्र 2. बहरेपन के सामाजिक प्रतिमान को आप कैसे समझते है ?

_____

_____

1.4.4 बहरेपन के बारे में चिकित्सा और सामाजिक प्रतिमान की जागरूकता

समाजशास्त्रियों के दृष्टिकोण से बहरेपन को दो तरीकों से देखा जा सकता है, जैसे "चिकित्सा प्रतिमान" और ''सामाजिक प्रतिमान'' ।

चिकित्सा प्रतिमान

चिकित्सा प्रतिमान के अनुसार बधिरता को एक बीमारी और दिव्यांगता के रूप में देखा जाता है। इसका इलाज दवा या शल्य चिकित्सा द्वारा किया जा सकता है, या चिकित्सा पेशेवर से प्रशिक्षण द्वारा प्रबंधित किया जा सकता है। चिकित्सा प्रतिमान के अनुसार बधिर लोगों को उपचार की आवश्यकता है। उन्हें केवल चिकित्सा और उससे संबंधित प्रक्रियाओं से ही सुनने की सक्षण योग्य बनाया जा सकता है।

सामाजिक प्रतिमान

सामाजिक प्रतिमान के अनुसार बहरापन को कोई बीमारी या दुर्बलता के रूप में नहीं देखा जाता है; बल्कि यह उन लोगों के बीच का अंतर के रूप में देखा जाता है जो सुनने में सक्षम वाले लोग और सुनने में अक्षम वाले लोग है। बधिर लोग केवल अन्य लोगों द्वारा उत्पन्न बाधाओं के कारण ही अक्षम होते हैं। बधिर लोगों की अपनी भाषा होती है। वे समाज में किसी भी अन्य अल्पसंख्यक समूह की तरह भाषाई और सांस्कृतिक अल्पसंख्यक हैं। बधिर व्यक्ति दृश्य सूचना, प्रौद्योगिकी और दुभाषियों के माध्यम से समाज के अन्य व्यक्तियों की तरह सामान्य जीवन जी सकते हैं।

बहरेपन के चिकित्सा और सामाजिक प्रतिमान को व्यक्त करने के लिए अंग्रेजी में "बड़ा अक्षर डी" (Big D) और "छोटा अक्षर डी" (Small d) से श्रवण बाधिता को चिह्नित करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इसके बारें में आगामी अनुभाग में सीखने की कोशिश करते हैं।

1.5 "बड़ा बिग डी" (Big D) और "छोटा स्माल डी" (Small d) को परिभाषित करना

बधिर शिक्षा के इतिहास में श्रवण बाधिता को चिह्नित करने के लिए इस्तेमाल किये जाने वाले अंग्रेजी में "बड़ा बिग डी" (Big D) और "छोटा स्माल डी" (Small d) के बीच अंतर को समझाया गया है। वर्ष 1972 में, हांगकांग के चीनी विश्वविद्यालय में सांकेतिक भाषाविज्ञान और बधिर अध्ययन केंद्र के सह–निदेशक प्रोफेसर जेम्स वुडवर्ड ने बहरेपन और बधिर संस्कृति के बीच अंतर का प्रस्ताव रखा । उन्होंने बधिरता की श्रवण संबंधी स्थिति को संदर्भित करने के लिए "deaf – बधिर" (अंग्रेजी में छोटे अक्षर डी के साथ लिखा जाता है) और बधिर संस्कृति को संदर्भित करने के लिए "Deaf–बधिर" (अंग्रेजी में बड़े अक्षर डी के साथ लिखा जाता है) का उपयोग करने का सुझाव दिया। अंग्रेजी में इन दोनों शब्दों का प्रयोग व्यापक रूप से अलग–अलग लेकिन आंशिक रूप से अतिव्यापी लोगों के समूहों को संदर्भित करने के लिए किया जाता है। छोटे स्माल "डी" (Small d) वाले बधिर लोग वे हैं जिनकी सुनने की क्षमता में काफी कमी है; बड़े बिग "डी" (Big D) वाले बधिर लोग वे हैं जो बधिर संस्कृति से जुड़े हैं और संचार के प्राथमिक साधन के रूप में सांकेतिक भाषा का उपयोग करते हैं।

बधिर (D/deaf) शब्द का प्रयोग किसी प्रकार की श्रवण बाधिता वाले सभी लोगों को शामिल करने के लिए किया जाता है, तथा इसमें वे लोग शामिल हैं जो ऊँचा सुनने वाला (Hard of Hearing) हैं, जिनकी सुनने की क्षमता में हल्की से मध्यम बाधिता होती है, तथा जो अपनी शेष श्रवण क्षमता से वातावरण में ध्वनियों को सुनने के लिए संभवतः एक या दो श्रवण यंत्र पहनते हैं। जो आंशिक रूप से बधिर होते हैं और जिनकी श्रवण क्षमता अधिक गंभीर होती है उनकी रोजमर्रा की गतिविधियों और संचार पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है। वे भाषण/होंठ–पठन और सांकेतिक भाषा दोनों का उपयोग कर सकते हैं और संभवतः श्रवण सहायक उपकरण भी पहन सकते हैं। गंभीर रूप से बधिर लोगों के पास बहुत कम या कोई उपयोगी श्रवण क्षमता नहीं होती है, हालांकि कुछ लोग श्रवण यंत्र पहनते हैं, लेकिन ये पर्यावरण जागरूकता में सहायता करने के अलावा और कुछ नहीं करते हैं और भाषण की समझ में भी ज्यादा मदद नहीं करते हैं।

आम तौर पर, "छोटा स्माल डी" (Small d) श्रवण बाधित लोग, श्रवण बाधित समुदाय के अन्य सदस्यों के साथ संबद्ध नहीं रखते हैं। वे सुनने में सक्षम वाले लोगों के साथ अपनी पहचान बनाने का प्रयास करते हैं, उनकी श्रवण अक्षमता को पूरी तरह से चिकित्सा की दृष्टि से देखते हैं। उनमें से कुछ लोग धीरे–धीरे अपनी सुनने की क्षमता खो रहे हैं और अभी तक बधिर संस्कृति में एकीकृत नहीं हो पाए हैं।

इसके विपरीत, "बड़ा बिग डी" (Big D) श्रवण बाधित लोग खुद को सांस्कृतिक रूप से बहरे के रूप में पहचानते हैं और उनकी एक मजबूत श्रवण बाधित पहचान होती है। वे अक्सर बधिर होने पर काफी गर्व महसूस करते हैं। यह सामान्य है कि "बड़ा बिग डी" (Big D) बधिरों ने बधिरों के लिए विद्यालयों और कार्यक्रमों में भाग लिया होता है।"छोटा स्माल डी" (Small d) बधिरों को मुख्यधारा में शामिल किया गया है। बहरेपन के बारे में लिखते समय, कई लेखक श्रवण बाधित संस्कृति के पहलुओं का उल्लेख करते हुए बड़ा अक्षर "डी" (Capital D) का उपयोग करेंगे। वे केवल श्रवण अक्षमता के बारे में बोलते समय छोटा स्माल "डी" (Small d) का उपयोग करेंगे ।

बोध प्रश्न

टिप्पणी क – नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए ।

ख – इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की मिलान करें ।

प्र 3. बहरेपन के दृष्टिकोण में "बड़ा बिग डी" (Big D)क्या होता है ?

_____

_____

_____

प्र 4. बहरेपन के संबंध में चिकित्सा और सामाजिक प्रतिमान में क्या अंतर है ?

_____

_____

_____

1.6 सारांश

श्रवण बाधिता एक ऐसा शब्द है जिसका उपयोग बहरेपन वाले लोगों के लिए किया जाता है, जिसमें कम सुनाई देना भी शामिल है, जिन्हें मामूली से मध्यम श्रवण अक्षमता होती है। उन्हें स्पष्ट रूप से भाषण सुनने में कठिनाई होती है, लेकिन आम तौर पर दिन–प्रतिदिन की गतिविधियों को पूरा करने में सक्षम होते हैं। आंशिक रूप से श्रवण बाधित लोगों को अधिक गंभीर श्रवण अक्षमता होती है जो दैनिक गतिविधियों और संप्रेषण को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। वे भाषण/होंठ–पढ़ने और सांकेतिक भाषा दोनों का उपयोग कर सकते हैं और श्रवण यंत्र भी पहनते हैं। अत्यधिक श्रवण बाधित लोगों के पास बहुत कम या उपयोगी श्रवण क्षमता नहीं होती है और जबकि कुछ लोग श्रवण यंत्र पहन सकते हैं, ये भाषण की समझ में सहायता बहुत कम काम आते है। चिकित्सा प्रतिमान के अनुसार बधिरता को एक बीमारी और दिव्यांगता के रूप में देखा जाता है। इसका इलाज दवा या शल्य चिकित्सा द्वारा किया जा सकता है, या चिकित्सा पेशेवर से प्रशिक्षण द्वारा

प्रबंधित किया जा सकता है। चिकित्सा प्रतिमान के अनुसार बधिर लोगों को उपचार की आवश्यकता है। उन्हें केवल चिकित्सा और उससे संबंधित प्रक्रियाओं से ही सुनने की सक्षम योग्य बनाया जा सकता है। सामाजिक प्रतिमान के अनुसार बहरापन को कोई बीमारी या दुर्बलता के रूप में नहीं देखा जाता है; बल्कि यह उन लोगों के बीच का अंतर के रूप में देखा जाता है जो सुनने में सक्षम वाले लोग और सुनने में अक्षम वाले लोग है। बधिर लोग केवल अन्य लोगों द्वारा उत्पन्न बाधाओं के कारण ही अक्षम होते हैं। बधिर लोगों की अपनी भाषा होती है। वे समाज में किसी भी अन्य अल्पसंख्यक समूह की तरह भाषाई और सांस्कृतिक अल्पसंख्यक हैं। बधिर व्यक्ति दृश्य सूचना, प्रौद्योगिकी और दुभाषियों के माध्यम से समाज के अन्य व्यक्तियों की तरह सामान्य जीवन जी सकते हैं ।

1.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

उ 1. बहरेपन के प्रतिमान

बहरेपन के प्रतिमान को तीन प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है। वे तीन या तो सामाजिक या जैविक विज्ञान में निहित हैं। सांस्कृतिक प्रतिमान, सामाजिक प्रतिमान और चिकित्सा (या दुर्बलता) बहरेपन के तीन प्रतिमान हैं। जिस प्रतिमान के माध्यम से श्रवण बाधित व्यक्ति को देखा जाता है, वह प्रभावित कर सकता है कि आत्म–धारणा के साथ उनको कैसा व्यवहार किया गया है।

उ 2. बहरेपन के सामाजिक प्रतिमान

सामाजिक प्रतिमान के मुताबिक बहरापन कोई बीमारी या दुर्बलता नहीं बल्कि एक सामाजिक अंतर है। बधिर लोग केवल अन्य लोगों द्वारा बनाई गई बाधाओं के कारण अक्षम होते हैं। बधिर लोगों की अपनी भाषा होती है और वे भाषाई और सांस्कृतिक अल्पसंख्यक होते हैं। बहरेपन का सामाजिक प्रतिमान दिव्यांगता के सामाजिक प्रतिमान से उपजा है। सामाजिक दिव्यांगता की अवधारणा दिव्यांग और अपने परिवार, दोस्तों और संबद्ध सामाजिक और राजनीतिक नेटवर्क लोगों द्वारा बनाई गई थी। मानव सेवा क्षेत्रों और सामाजिक विज्ञान के पेशेवरों ने सामाजिक प्रतिमान में बहुत योगदान दिया।

उ 3. बहरेपन के दृष्टिकोण में "बड़ा बिग डी" (Big D) मतलब

"बड़ा बिग डी" (Big D) श्रवण बाधित लोग खुद को सांस्कृतिक रूप से बहरे के रूप में पहचानते हैं और उनकी एक मजबूत श्रवण बाधित पहचान होती है। वे अक्सर बहरे होने पर काफी गर्व महसूस करते हैं। यह सामान्य है कि "बड़ा बिग डी" (Big D) बधिरों ने बधिरों के लिए विद्यालयों और कार्यक्रमों में भाग लिया होता है । बड़े बिग "डी" (Big D) वाले बधिर लोग वे हैं जो बधिर संस्कृति से जुड़े हैं और संचार के प्राथमिक साधन के रूप में सांकेतिक भाषा का उपयोग करते हैं ।

उ 4. बहरेपन के संबंध में चिकित्सा और सामाजिक प्रतिमान में अंतर

चिकित्सा प्रतिमान – चिकित्सा प्रतिमान के अनुसार बधिरता को एक बीमारी और दिव्यांगता के रूप में देखा जाता है। इसका इलाज दवा या शल्य चिकित्सा द्वारा किया जा सकता है, या चिकित्सा पेशेवर से प्रशिक्षण द्वारा प्रबंधित किया जा सकता है।

सामाजिक प्रतिमानः सामाजिक प्रतिमान के अनुसार बहरापन को कोई बीमारी या दुर्बलता के रूप में नहीं देखा जाता है; बल्कि यह उन लोगों के बीच का अंतर के रूप में देखा जाता है जो सुनने में सक्षम वाले लोग और सुनने में अक्षम वाले लोग है।बधिर लोग केवल अन्य लोगों द्वारा उत्पन्न बाधाओं के कारण ही अक्षम होते हैं।

1.8 अभ्यास कार्य

प्र 1. बहरेपन के प्रतिमानों की बुनियादी जागरूकता पर व्याख्या कीजिए।

प्र 2. बहरेपन के प्रतिमानों की सूची तैयार कीजिए।

1.9 चर्चा के बिन्दु / स्पष्टीकरण

प्र0 –1 आपके शहर या गाँव में बहरेपन के बारे में चिकित्सा और सामाजिक प्रतिमान की जागरूकता कैसे करेंगे? अपने सहपाठियों से चर्चा कीजिए।

1.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- पेट्टाला, आर. (2023), श्रवण बाधित बच्चों के लिए पाठ्यचर्या संबंधी रणनीतियाँ और अनुकूलन, नई दिल्ली : रेनोवा इण्टरनेशनल प्रकाशक।
- पेट्टाला, आर. (2020),श्रवण बाधित बच्चों के लिए पाठ्यचर्या संबंधी पहलू,नई दिल्लीः कनिष्क प्रकाशक।
- पोलाक, डी. (1985),सीमित श्रवण वाले शिशु और प्रीस्कूलर के लिए शैक्षिक ऑडियोलॉजी (दूसरा संस्करण)ः स्प्रिंगफील्ड, आईएलः सी.सी. थॉमस प्रकाशन.
- पावर, डी., और लेह, जी. (2004), श्रवण बाधित छात्रों को शिक्षित करना–वैश्विक परिप्रेक्ष्य, वाशिंगटन, डीसीः गैलॉडेट यूनिवर्सिटी प्रेस।
- मूरेस, डोनाल्ड एफ. (1990),बहरेपन के शैक्षिक और विकासात्मक पहलू,गैलॉडेटः यूनिवर्सिटी प्रेस।

इकाई 2

बहरेपन और संप्रेषण संबंधी चुनौतियों/चिंताओं के बारे में बुनियादी जागरूकता

इकाई संरचना

2.1 प्रस्तावना

2.2 इकाई के उद्देश्य

2.3 श्रवण बाधिता और संप्रेषण

2.4 संप्रेषण पर श्रवण बाधिता का प्रभाव

2.5 श्रवण बाधिता और संप्रेषण संबंधी विकार

2.6 बहरेपन और संप्रेषण संबंधी चुनौतियों/चिंताएँ

2.7 श्रवण बाधित लोगों के साथ संवाद करने के लिए स्थिति को अनुकूल बनाने की रणनीतियाँ

2.7.1 श्रवण बाधितों के साथ संवाद करने के लिए संप्रेषण युक्तियाँ

2.8 सारांश

2.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.10 अभ्यास कार्य

2.11 चर्चा के बिन्दु

2.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.1 प्रस्तावना

श्रवण बाधित लोगों को विभिन्न कारकों के कारणों से दूसरों के साथ संवाद करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इन चुनौतियों में कुछ मुख्य ऐसा है कि मौखिक संचार में कठिनाइयाँ, संवेदी मतभेद और श्रवण बाधित और सुनने में सक्षम वाले व्यक्तियों के बीच कुछ चीजों की समझ की कमी है। इन चुनौतियों पर काबू पाने की रणनीतियों में आंखों का संपर्क बनाए रखना, सांकेतिक भाषा दुभाषियों को उपलब्ध कराना, परिवार के सदस्यों को शामिल करना और संबंधित पेशेवरों को सांकेतिक भाषा के बारे में शिक्षित करना जैले विषय शामिल है। किसी भी परिस्थिति में, बधिरों के लिए संचार सहायता महत्वपूर्ण है, पेशेवर दुभाषियों, लेखन और होंठ–पढ़ना आमतौर पर इस्तेमाल की जाने वाली विधियाँ हैं। हालाँकि, पेशेवरों को अधिक व्यक्ति–केंद्रित दृष्टिकोण अपनाने और बधिरों की विविधता और उनके संचार तरीकों की सराहना करने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, ऑनलाइन सीखने में, श्रवण बाधित छात्रों को इंटरनेट की पहुंच, मीडिया उपयोग और बातचीत से संबंधित चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जबकि स्वयंसेवी सहायता सीमित हो सकती है। कुल मिलाकर, इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए बेहतर संचार रणनीतियों, जागरूकता और समावेशिता की आवश्यकता है । इस इकाई में हम बहरेपन के संप्रेषण में आने वाली चुनौतियों एवं उनके समाधान की रणनीतियों पर चर्चा करेगें।

2.2 इकाई के उद्देश्य 2.2

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप इस योग्य हो जायेगे कि–

- बहरेपन और संप्रेषण संबंधी चुनौतियों/चिंताओं को समझेंगे।
- श्रवण बाधिता के संप्रेषण संबंधी विकार से अवगत हो सकेंगे।
- श्रवण बाधिता के संप्रेषण संबंधी चुनौतियों से अवगत हो सकेगें।
- सम्प्रेषण पर श्रवण बाधिता के प्रभाव को जान सकेगें।
- श्रवण बाधित लोगों के साथ संवाद करने के लिए स्थिति को अनुकूल बनाने की रणनीतियाँ का अनुप्रयोग कर सकेगें।

2.3 श्रवण बाधिता और संप्रेषण

संचार/संप्रेषण, रोजमर्रा की जिंदगी का एक अभिन्न अंग है। हालाँकि, किसी के साथ संवाद करते समय उनकी जरूरतों पर विचार करना आवश्यक है। समाज में कुछ लोगो को सुनने में अक्षम आबादी के साथ संवाद करते समय कई चीजों के समझना जरुरी हो सकता है। श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करने के कई तरीके हैं, जैसे कि आप जो कहना चाहते हैं उसे लिखकर दिखाएं और यदि आवश्यक हो तो उसे जोर से बोलते हुए दोहराएं या नए शब्दों में

कहें। इन रणनीतियों को अपनी दैनिक संचार प्रथाओं में लागू करने से उन सभी श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए अधिक समावेशी वातावरण बन सकता है जिन्हें स्पष्ट रूप से संचार करने और दूसरों को प्रभावी ढंग से समझने में सहायता की आवश्यकता होती है।

संचार दृष्टिकोण – श्रवण बाधित लोग कई अलग–अलग तरीकों से संवाद करते हैं। श्रवण बाधित लोगों के संवाद करने के कुछ सामान्य तरीके नीचे सूचीबद्ध हैं। कुछ लोग इनके संयोजन का उपयोग करेंगे, और कुछ लोग अलग–अलग तरीकों का उपयोग कर सकते हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वे कहां हैं और किसके साथ संवाद रहे हैं।

सुनना और बोलना – कई श्रवण बाधित बच्चे और युवा मौखिक भाषा का उपयोग करके दूसरों के साथ संवाद करते हैं। वे इसमें मदद के लिए श्रवण तकनीक का उपयोग कर सकते हैं जैसे श्रवण यंत्र और कर्णावत प्रत्यारोपण कोई भी हो सकता है। सुनने और बोलने को कभी–कभी मौखिकवाद भी कहा जाता है।

होंठ पढ़ना (लिप–रीडिंग) – लिप–रीडिंग होठों के पैटर्न को पढ़ने की क्षमता है । श्रवण बाधित बच्चे और युवा स्वाभाविक रूप से लिप–रीडिंग करते हैं, लेकिन कई भाषण ध्वनियाँ एक जैसी दिखती हैं, उदाहरण के लिए, 'पैट' और 'बैट', इसलिए लिप–रीडिंग पर भरोसा करना मुश्किल है। लिप–रीडिंग का उपयोग आमतौर पर अन्य संचार तरीकों के साथ किया जाता है।

सांकेतिक भाषा – सांकेतिक भाषाएँ दृश्य भाषाएँ हैं जो हाथों के आकार, चेहरे के भाव, हावभाव और शारीरिक भाषा का उपयोग करती हैं। जिस तरह अलग–अलग देशों में अलग–अलग बोली जाने वाली भाषाएँ होती हैं, उसी तरह दुनिया भर के अलग–अलग देशों में अलग–अलग सांकेतिक भाषाएँ भी मौजूद हैं। भारत में श्रवण बाधित समुदाय से उपयोग की जानेवाली मुख्य भाषा सांकेतिक भाषा को भारतीय सांकेतिक भाषा (आई.एस.एल) नाम से जाना जाता है।

उंगली की वर्तनी – भारतीय उंगली की वर्तनी वर्णमाला/ब्रिटिश उंगली की वर्तनी वर्णमाला आपके हाथों और उंगलियों का उपयोग करके शब्दों को लिखने का एक तरीका है। उंगली की वर्तनी सीखना भारतीय सांकेतिक भाषा सीखने की दिशा में एक बेहतरीन पहला कदम होगा।

स्पर्शनीय सांकेतिक भाषा – स्पर्शात्मक हस्ताक्षर, जिसे हाथ से या हाथ से हस्ताक्षर के रूप में भी जाना जाता है। यह अंधे या दृष्टिबाधित लोगों के लिए सांकेतिक भाषा का उपयोग करने का एक तरीका है। इसका मतलब यह है कि अंधा या दृष्टिबाधित व्यक्ति उन संकेतों को अपने हाथ से महसूस कर सकता है जो दूसरा व्यक्ति अपने हाथ को दृष्टिबाधित व्यक्ति के हथेली रख कर हस्ताक्षर करते हैं।

संवर्धित और वैकल्पिक संचार (एएसी) – अतिरिक्त ज़रूरतों वाले कुछ श्रवण बाधित बच्चे संवाद करने के विभिन्न तरीकों के साथ–साथ, या इसके बजाय, बोली जाने वाली, लिखित या हस्ताक्षरित

भाषा का उपयोग कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, नेत्र टकटकी तकनीक या वर्णमाला बोर्ड अतिरिक्त जरूरतों वाले लोगों को खुद को अभिव्यक्त करने में मदद कर सकते हैं।

उद्धृत भाषण – उद्धृत भाषण एक दृश्य संचार प्रणाली है जिसे लिप–रीडिंग का समर्थन करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। सांकेतिक भाषण के उपयोगकर्ता बोलते समय मुंह के चारों ओर अलग–अलग स्थिति में अपने हाथ रखते हैं, ताकि होंठ पढ़ने वालों को समान दिखने वाली भाषण ध्वनियों के बीच अंतर करने में मदद मिल सकें।

2.4 संप्रेषण पर श्रवण बाधिता का प्रभाव

श्रवण बाधितता कई तरह से संप्रेषण यानी संचार को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकती है। श्रवण बाधिता के कारण संचार में बाधा उत्पन्न हो सकती है।

वाणी को समझने में असमर्थता : श्रवण बाधित होने से कुछ ध्वनियों या शब्दों को सुनना मुश्किल हो सकता है, विशेष रूप से उच्च आवृत्तियों के ध्वनियों को परिणामस्वरूप, श्रवण बाधित व्यक्तियों को विशेष रूप से शोर वाले वातावरण में या जब कई लोग बोल रहे हो उस समय भाषण समझने में दिक्कत हो सकती है।

जानकारी को ग़लत समझना : सुनने की अक्षमता की वजह से भी जो सुननेवाले जानकारी को लेकर ग़लतफ़हमी हो सकती है। जब श्रवण बाधित लोग किसी वाक्य में कुछ ध्वनियाँ या शब्द सुनने की अक्षमता से नहीं सुनने के कारण, वे वाक्य के अर्थ या संदर्भ को पूरी तरह से गलत समझने की संभावना हो सकती है।

बातचीत में भाग लेने की क्षमता में कमी : श्रवण बाधितता किसी व्यक्ति की बातचीत में भाग लेने की क्षमता को भी कम कर सकती है, खासकर समूहों में यह दिक्कत ज्यादा हो सकती है। जब श्रवण बाधित लोगों को दूसरों को सुनने में दिक्कत होती है, तो वे अलग–थलग महसूस करने की संभावना अकसर हो सकती है।

सामाजिक अलगाव : श्रवण बाधित लोग सामाजिक स्थितियों से भी पूरी तरह दूर हो सकते हैं, क्योंकि प्रभावी ढंग से सुनने और संवाद करने में असमर्थता के कारण वे शर्मिंदा या निराश महसूस कर सकते हैं।

2.5 श्रवण बाधिता और संप्रेषण संबंधी विकार

श्रवण बाधित समूह के सभी व्यक्तियों में संचार विकार विकसित नहीं होंगे, और संचार विकार की गंभीरता अलग–अलग व्यक्तियों में अलग–अलग हो सकती है । हालाँकि, श्रवण बाधिता से संचार संबंधी विकार हो सकते हैं, जो किसी व्यक्ति की प्रभावी ढंग से संवाद करने की क्षमता को और प्रभावित कर सकता है। संचार संबंधी विकार किसी व्यक्ति की बोलने, समझने, मेलजोल बढ़ाने, पढ़ने या लिखने की क्षमता को प्रभावित कर सकते हैं।

2.6 बहरेपन और संप्रेषण संबंधी चुनौतियाँ/चिंताएँ

बहरापन एक दिव्यांगता है जिसे गलत तरीके से समझा जाता है। संचार चुनौतियों के बावजूद श्रवण बाधित व्यक्ति द्वारा बातचीत शुरू करने के लिए कुछ निश्चित उपाय अपनाए जा सकते हैं। हालाँकि, सांकेतिक भाषा सीखने में कठिनाई के कारण, बहुत से लोग श्रवण बाधित लोगों को अनदेखा छोड देते हैं। किसी भी दिव्यांग व्यक्ति की तरह, श्रवण बाधित लोगों को भी संवाद करने की आवश्यकता जरुर होती है ।

इसलिए, प्रत्येक श्रवण बाधित व्यक्ति को प्रयास करना चाहिए ताकि वह अन्य लोगों की तरह अपने विचार और भावनाएं व्यक्त कर सके। सुनने की क्षमता में कमी के कई स्तर होते हैं, जिसमें व्यक्ति बहरा भी हो सकता है। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जिन्हें केवल हल्की और मध्यम आवाज़ें सुनने पर ही सुनने की क्षमता में कमी आती है। इस मामले में, समस्या को ठीक करने के लिए अभी भी चिकित्सा हस्तक्षेप किया जा सकता है। ऐसे लोग भी होते हैं जिन्हें तेज़ आवाज़ में बोलने पर सुनने और समझने में समस्या होती है। वे आवाज़ें तो सुन सकते हैं, लेकिन उन्हें मुश्किल से पहचान पाते हैं।

इन स्थितियों के दौरान उन्हें बेहतर ढंग से सुनने के लिए चिकित्सा या ऑडियो हस्तक्षेप आवश्यक हो सकते हैं। श्रवण यंत्रों और कोक्लियर प्रत्यारोपण जैसे उपकरणों का उपयोग किया जा सकता है। उन्हें संचार की अधिक जटिल रणनीतियाँ भी सिखाई जा सकती हैं ताकि वे आसानी से वक्ता को समझ सकें। जो लोग कोई ध्वनि नहीं सुन सकते हैं, उनके लिए सांकेतिक भाषा और होठों को पढ़ने का प्रयास करने से संचार में बेहतर उपयोग हो सकता है।

2.7 श्रवण बाधित लोगों के साथ संवाद करने के लिए स्थिति को अनुकूल बनाने की रणनीतियाँ

निम्नलिखित रणनीतियाँ श्रवण बाधित लोगों के साथ संवाद करने के लिए स्थिति को अनुकूल बनाने के लिये किया जाता है। श्रवण बाधित लोगों के लिए हर शब्द को लिखे या टाइप किए बिना संवाद करने में सक्षम होना एक चुनौती है।

- यदि आप श्रवण बाधित लोगों के साथ संवाद करने के लिए सांकेतिक भाषा सीख सकते हैं, तो आपके लिए उनके साथ विचारों का आदान–प्रदान करना बहुत आसान हो जाएगा।
- हालांकि, कुछ श्रवण दिव्यांगता वाले लोग कुछ ध्वनियों को होंठों से पढ़ने के माध्यम से पहचान सकते हैं, श्रवण बाधितों द्वारा उपयोग की जाने वाली विभिन्न तकनीकें यह सुनिश्चित करने के लिए हैं कि वे दूसरों की बातचीत को आसानी से समझ सकते हैं।

- सुनिश्चित करें कि आप श्रवण बाधित लोगों के साथ संवाद करते समय उनसे आमने–सामने बात करें। ऐसे स्थान पर खड़े हो जाएँ जहाँ उचित प्रकाश हो ताकि वे आपके चेहरे की गति को देख सकें।
- एक ऐसी शांत जगह खोजें जहाँ आप बात कर सकें। वातावरण में तेज आवाजें उन्हें भ्रमित कर सकती हैं। आप जो कहते हैं उसे समझने के बजाय, वे तेज आवाजों से भ्रमित हो सकते हैं।
- स्वाभाविक रूप से बात करें। अपने मुँह की भावों को बढ़ा–चढ़ाकर नहीं करनी है। यदि संभव हो तो सरल शब्दों का उपयोग करें और छोटे वाक्य बनाते संवाद करने की कोशिश कीजिए।
- चर्चा के विषय से शुरू करके उन्हें बातचीत की ओर ले जाएं। दोस्ताना माहौल बनाएं रखना जरुरी होता है। सुनिश्चित करें कि आप उन्हें सहज महसूस कराएं। उन्हें बातचीत करने में आपके प्रयासों को देखने दें।
- गलत समझे गए शब्दों को फिर से लिखें या बोलें। इसके अलावा, यदि आवश्यक हो तो कुछ विचारों को संक्षेप में प्रस्तुत करें। जब आपसे दोबारा वही शब्द कहने को कहा जाए तो मुस्कुराते हुए कहें।
- कुछ लोग सोचते हैं कि श्रवण बाधित लोग सभी एक जैसे होते हैं और उनके साथ बात करते समय चिल्लाना एक शर्त और जरुरी माना जाता है। हालाँकि, ऐसा नहीं है। कुछ श्रवण बाधित लोगों के लिए, चिल्लाए जाने पर उन्हें बुरा लगता है।
- श्रवण बाधित लोगों के साथ संप्रेषण करते समय यदि आप सांकेतिक भाषा नहीं जानते है तो हाव–भाव का उपयोग कर सकते है। यह किसी न किसी तरह बातचीत में जरुर मदद करेगा।
- सुनने की अक्षमता वाले या श्रवण बाधिता वाले व्यक्ति का दोस्त, सहपाठी या परिवार का सदस्य होना थोड़ा चुनौतीपूर्ण हो सकता है।
- किसी व्यक्ति का मित्र, सहपाठी या परिवार का सदस्य होना थोड़ा चुनौतीपूर्ण हो सकता है। हालाँकि, यह उस चुनौती से तुलना नहीं करता जिसका वे वास्तव में सामना करते हैं। इसलिए, आपको सुनने में अक्षम व्यक्तों के प्रति अधिक दयालु और समझदार होने की आवश्यकता है।

2.7.1 श्रवण बाधित लोगों के साथ संवाद करने के लिए संप्रेषण युक्तियाँ

अपनी श्रवण अक्षमता के बारे में दूसरों को सूचित करना – जब हमें या हमारे प्रियजनों को सुनने की अक्षमता हो तो हम संचार की बाधा को कैसे तोड़ सकते हैं ? श्रवण बाधिता वाले लोगों के लिए प्रभावी संचार में पहला कदम दूसरों को उनकी सुनने की अक्षमता के बारे में सूचित करना जरुरी होता है। दूसरों को सूचित करने से उन्हें आपकी आवश्यकताओं के अनुरूप अपनी संचार विधियों को समायोजित करने की अनुमति मिल सकती है। उन्हें सूचित करना एक सामान्य तरीके से किया

जा सकता है, बस यह समझाकर कि आपको सुनने की क्षमता कम है और आपको उन्हें ज़ोर से या अधिक स्पष्ट रूप से बोलने की आवश्यकता हो सकती है।

स्थिति एवं प्रकाश व्यवस्था – एक और महत्वपूर्ण रणनीति यह सुनिश्चित करना है कि आप जहां भी हों, वक्ता को सुनने के लिए अच्छी स्थिति में हों। उदाहरण के लिए, वक्ता के पीछे प्रकाश स्रोत के साथ एक शांत क्षेत्र में बैठें और तेज़ पृष्ठभूमि शोर से बचें। इससे सुनने की अक्षम वाले वक्ता के चेहरे और होठों की भावों को देखने में मदद मिल सकती है, जिससे उन्हें समझना आसान हो जाएगा।

दृश्य संकेतों का उपयोग – श्रवण हानि वाले लोगों के लिए दृश्य संकेत बहुत मददगार हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, लिप–रीडिंग, सांकेतिक भाषा या लिखित नोट्स भाषण को स्पष्ट करने में मदद कर सकते हैं। चेहरे के भाव, शारीरिक भाषा और हावभाव जैसे गैर–मौखिक संकेत भी बातचीत का अर्थ बताने में मदद कर सकते हैं।

स्पष्ट और धीरे बोलना – बहरेपन से पीड़ित किसी व्यक्ति से बात करते समय, स्पष्ट रूप से और धीरे–धीरे बोलना महत्वपूर्ण होता है। इससे श्रोता भाषण पर ध्यान केंद्रित कर पाते हैं और उन्हें यह समझने में भी मदद मिलती है कि क्या कहा जा रहा है। बहुत तेज़ या बहुत धीरे भी बोलना नहीं चाहिए, क्योंकि इससे श्रोता के लिए समझना मुश्किल हो सकता है।

दोहराएँ या दोबारा बोलें – यदि श्रोता को समझ में नहीं आया है कि क्या कहा गया है, तो जानकारी को दोहराना या दोबारा लिखना या बोलना महत्वपूर्ण होता है। इससे यह सुनिश्चित करने में मदद मिलती है कि श्रोता संप्रेषित की जा रही जानकारी को समझता है, जो कार्यस्थल के माहौल में अभिन्न है। जानकारी को दोबारा लिखते या बोलते समय अलग–अलग शब्दों का उपयोग करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे श्रोता को इसे बेहतर ढंग से समझने में मदद मिल सकती है।

सहायक श्रवण उपकरणों का उपयोग करना – श्रवण बाधित वाले लोगों के लिए संचार बढ़ाने के लिए सहायक श्रवण उपकरणों का उपयोग किया जा सकता है। इन उपकरणों में श्रवण यंत्र और श्रवण यंत्र सहायक उपकरण शामिल होते हैं। ये उपकरण ध्वनि को बढ़ाकर या पृष्ठभूमि शोर को कम करने का काम करते हैं, जिससे श्रोता के लिए वक्ता को सुनना और समझना आसान हो जाता है।

श्रोता का सामने बोलना – श्रवण बाधित व्यक्ति से बात करते समय, उनका सीधे सामने बोलना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इससे उन्हें आपका चेहरा और होठों की भावों को देखने में मदद मिलती है, जिससे उनके लिए यह समझना आसान हो जाता है कि वक्ता के द्वारा क्या कहा जा रहा है। श्रवण बाधित व्यक्ति से बात करते समय अपना सिर घुमाना या दूसरी ओर देखना नहीं चाहिए।

जोर से न बोलना/चिल्लाना – श्रवण बाधित वाले लोगों के लिए चिल्लाना एक प्रभावी संचार रणनीति नहीं है। वास्तव में, इससे उनके लिए यह समझना और अधिक दिक्कत हो सकता है कि

वक्ता से क्या कहा जा रहा है। प्रभावी संचार सुनिश्चित करने के लिए स्पष्ट रूप से और धीरे–धीरे बोलें, और यदि आवश्यक हो तो दृश्य संकेतों का उपयोग करना उचित होगा।

पृष्ठभूमि शोर से दूर रहना – पृष्ठभूमि शोर से श्रवण बाधित लोगों के लिए भाषण समझना मुश्किल हो सकता है। श्रवण बाधित व्यक्ति के साथ संचार करते समय जितना संभव हो उतना पृष्ठभूमि शोर से दूर रहना महत्वपूर्ण होता है। टेलीविज़न या रेडियो बंद करना चाहिए, खिड़कियाँ भी बंद करना होगा और शोर–शराबे वाले इलाकों में मिलना–जुलना भी नहीं चाहिए।

धैर्य या विश्वास रखना – श्रवण बाधित व्यक्तियों से बातचीत करते समय धैर्य या विश्वास रखना महत्वपूर्ण होता है। जानकारी को संसाधित करने और बातचीत का जवाब देने में उन्हें अधिक समय लग सकता है। उन्हें जो कहा जा रहा है उसके बारे में सोचने का समय देना और उनके वाक्यों को बीच में रोकने का प्रयास को भी ख़त्म करना जरुरी होगा।

बोध प्रश्न

टिप्पणीक – नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए ।

ख – इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की मिलान करें ।

प्र 1. श्रवण बाधित लोगों के साथ संवाद करने के लिए स्थिति को अनुकूल बनाने की रणनीतियाँ बताइये ?

.....

.....

प्र 2. श्रवण बाधितों के साथ संवाद करने के लिए किन्हीं तीन युक्तियों को लिखिए ?

_____

_____

श्रवण बाधित लोगों से संवाद करने के लिए संचारयुक्तियाँ – क्या करें और क्या न करें?

श्रवण बाधित लोगों से संवाद करते समय नीचे दिए गये चीजों को किया जा सकता हैः–

- कंधे पर थपकी देकर या हाथ हिलाकर उनका ध्यान आकर्षित करना।
- आमने–सामने संवाद करना।
- धीरे और स्पष्ट बोलना।
- यदि उन्होंने आपकी बात को गलत सुना है, तो धैर्य रखें और यदि आवश्यक हो तो दोहराने का प्रयोग करना।

श्रवण बाधित लोगों से संवाद करते समय नीचे दिए गये चीजों को जो नहीं कर सकते है :–

- उन पर चिल्लाना या ताली बजाना।
- संचार करते समय अपना सिर को घुमाना।
- तेज या ऊंचे स्वर में बोलना।
- चिल्लाते हुए दोहराना ।

श्रवण बाधिता किस हद तक संचार को प्रभावित करती है, यह श्रवण बाधिता की गंभीरता, व्यक्ति की उम्र और अन्य कारकों के आधार पर भिन्न हो सकती है। श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए अपनी संचार क्षमताओं और जीवन की समग्र गुणवत्ता में सुधार के लिए उचित उपचार लेना आवश्यक है। श्रवण बाधित लोगों के लिए दूसरों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करने की क्षमता में सुधार करने के लिए संचार रणनीतियाँ एक प्रभावी उपकरण हो सकती हैं। अपनी श्रवण बाधिता, स्थिति और प्रकाश व्यवस्था के बारे में दूसरों को सूचित करना, दृश्य संकेतों का उपयोग करना, स्पष्ट रूप से और धीरे–धीरे बोलना और जानकारी को दोहराना या दोबारा लिखना जैसी रणनीतियाँ अपनाना जरुरी है। हमारा मार्गदर्शन उन लोगों के लिए है जिन्हें हल्के से मध्यम श्रवण बाधिता है, क्योंकि जिनके पास गंभीर दिव्यांगता है या जो बहरे हैं उनके पास अतिरिक्त रणनीतियाँ अपनाने की जरुरत हो सकती हैं। हालाँकि, सहायक श्रवण उपकरणों का उपयोग करना, श्रोता के सामने बोलना, चिल्लाने से बचना, पृष्ठभूमि शोर को खत्म करना और धैर्य रखना सभी के लिए प्रभावी संचार में महत्वपूर्ण अंतर ला सकता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणीक – नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए ।

ख – इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की मिलान कीजिए।

प्र 3. श्रवण बाधित लोगों से संवाद करते समय क्या नहीं करना चाहिए ?

_____
_____
_____

प्र 4. श्रवण बाधित लोगों से संवाद करते समय सहायक श्रवण उपकरणों का उपयोग क्यों करना चाहिए ?

_____
_____

2.8 सारांश

श्रवण बाधित लोगों को विभिन्न कारकों के कारण दूसरों के साथ संवाद करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इन चुनौतियों पर काबू पाने की रणनीतियों जैसे आंखों का संपर्क बनाए रखना, सांकेतिक भाषा दुभाषियों को उपलब्ध कराना, परिवार के सदस्यों को शामिल करना और संबंधित पेशेवरों को सांकेतिक भाषा के बारे में शिक्षित करना शामिल है। कुल मिलाकर, इन चुनौतियों से निपटने के लिए बेहतर संचार रणनीतियों, जागरूकता और समावेशिता की आवश्यकता है। कुछ रणनीतियाँ श्रवण बाधित लोगों के साथ संवाद करने के लिए स्थिति को अनुकूल बनाने के लिये किया जाता है।

2.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

उ 1 - श्रवण बाधित लोगों के साथ संवाद करने के लिए स्थिति को अनुकूल बनाने की रणनीतियाँ –

- स्वाभाविक रूप से बात करें।
- अपने मुँह की हरकतों को बढ़ा–चढ़ाकर न कहें।
- यदि संभव हो तो सरल शब्दों का उपयोग करें और छोटे वाक्य बनाएँ।
- सुनिश्चित करें कि आप उनसे आमने–सामने बात करें।

उ 2 - श्रवण बाधितों के साथ संवाद करने के लिए तीन युक्तियाँ

स्थिति एवं प्रकाश व्यवस्था –

एक और महत्वपूर्ण रणनीति यह सुनिश्चित करना है कि आप जहां भी हों, वक्ता को सुनने के लिए अच्छी स्थिति में हों। उदाहरण के लिए, स्पीकर के पीछे प्रकाश स्रोत के साथ एक शांत क्षेत्र में बैठें और तेज़ पृष्ठभूमि शोर से बचें। इससे आपको वक्ता के चेहरे और होठों की हरकतों को देखने में मदद मिल सकती है, जिससे उन्हें समझना आसान हो जाएगा।

दृश्य संकेतों का उपयोग –

श्रवण हानि वाले लोगों के लिए दृश्य संकेत बहुत मददगार हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, लिप–रीडिंग, सांकेतिक भाषा या लिखित नोट्स भाषण को स्पष्ट करने में मदद कर सकते हैं। चेहरे के भाव, शारीरिक भाषा और हावभाव जैसे गैर–मौखिक संकेत भी बातचीत का अर्थ बताने में मदद कर सकते हैं।

स्पष्ट और धीरे बोलना –

बहरेपन से पीड़ित किसी व्यक्ति से बात करते समय, स्पष्ट रूप से और धीरे–धीरे बोलना महत्वपूर्ण है। इससे श्रोता भाषण पर ध्यान केंद्रित कर पाते हैं और उन्हें यह समझने में भी मदद मिलती है कि क्या कहा जा रहा है। बहुत तेज़ या बहुत धीरे बोलने से बचें, क्योंकि इससे श्रोता के लिए समझना मुश्किल हो सकता है।

उ **3 -** श्रवण बाधित लोगों से संवाद करते समय क्या नहीं करना चाहिए

- उन पर चिल्लाओ मत या ताली मत बजाओ
- अपना सिर न घुमाएँ
- तेज या ऊंचे स्वर में न बोलें
- दोहराएँ नहीं (लेकिन ऊँची आवाज़ में) या निराश हो जाएँ

उ 4 **- सहायक श्रवण उपकरणों का उपयोग करना –**

श्रवण बाधित वाले लोगों के लिए संचार बढ़ाने के लिए सहायक श्रवण उपकरणों का उपयोग किया जा सकता है। इन उपकरणों में श्रवण यंत्र और श्रवण यंत्र सहायक उपकरण शामिल होते हैं। ये उपकरण ध्वनि को बढ़ाकर या पृष्ठभूमि शोर को कम करने का काम करते हैं, जिससे श्रोता के लिए वक्ता को सुनना और समझना आसान हो जाता है ।

2.10 अभ्यास कार्य

प्र0 –1 बहरेपन और संप्रेषण संबंधी चुनौतियों पर व्याख्या कीजिए।

2.11 चर्चा के बिन्दु

प्र0 –1 आपके पाठशाला में बहरेपन और संप्रेषण सुंबंधी चुनौतियों को दूर करने के लिए क्रियाकलाप बनाइये।

प्र0 –2 श्रवण बाधित लोगों के साथ संवाद करने के लिए स्थिति को अनुकूल बनाने की आवश्यकता पर चर्चा कीजिए।

2.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- जोन्स, एम. (2002), "संस्कृति के रूप में बहरापनः एक मनोसामाजिक परिप्रेक्ष्य",न्यूयॉर्कः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

- पावर, डी.,और लेह, जी.(2004) श्रवण बाधित छात्रों को शिक्षित करना–वैश्विक परिप्रेक्ष्य, वाशिंगटन, डीसीः गैलॉडेट यूनिवर्सिटी प्रेस।
- पेट्टाला, आर. (2020),श्रवण बाधित बच्चों के लिए पाठ्यचर्या संबंधी पहलू,नई दिल्लीः कनिष्क प्रकाशक।
- पोलाक, डी. (1985),सीमित श्रवण वाले शिशु और प्रीस्कूलर के लिए शैक्षिक ऑडियोलॉजी (दूसरा संस्करण): स्प्रिंगफील्ड, आईएलः सी.सी. थॉमस प्रकाशन.
- पावर, डी., और लेह, जी. (2004), श्रवण बाधित छात्रों को शिक्षित करना–वैश्विक परिप्रेक्ष्य, वाशिंगटन, डीसीः गैलॉडेट यूनिवर्सिटी प्रेस।
- मूरेस, डोनाल्ड एफ. (1990),बहरेपन के शैक्षिक और विकासात्मक पहलू,गैलॉडेटः यूनिवर्सिटी प्रेस।

इकाई 3

संस्कृति के संदर्भ में श्रवण बाधिता पर बुनियादी जागरूकता

इकाई संरचना

3.1 प्रस्तावना

3.2 इकाई के उद्देश्य

3.3 संस्कृति के संदर्भ में श्रवण बाधिता

3.4 संस्कृति के संदर्भ में श्रवण बाधिता पर बुनियादी जागरूकता

3.5 श्रवण बाधित संस्कृति के बारे में विशिष्टता

3.6 श्रवण बाधित संस्कृति के पाँच पहलू

3.7 श्रवण बाधित लोग और श्रवण बाधित संस्कृति से अपनी पहचान

3.8 सारांश

3.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.10 अभ्यास कार्य

3.11 चर्चा के बिन्दु

3.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.1 प्रस्तावना

बधिर संस्कृति वह संस्कृति है जो सामाजिक विश्वासों, व्यवहारों, कला, साहित्यिक परंपराओं, इतिहास, मूल्यों और समुदायों की साझा संस्थाओं के संबंध में बधिरता से प्रभावित होती है, जिसमें समुदाय संचार के मुख्य साधन के रूप में सांकेतिक भाषाओं का उपयोग करते है। श्रवण बाधित समुदाय ने बधिरता से संबंधित मुद्दों पर सूचनात्मक और व्यावहारिक जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रमों की एक श्रृंखला विकसित की है, जो सार्वजनिक जागरूकता समझ, सांकेतिक भाषा के बारे में जागरूकता, श्रवण बाधित संस्कृति से संबंधित, कार्यस्थल पर, घर पर या सामाजिक स्थितियों में श्रवण बाधित लोगों के संचार मुद्दों में सुधार करने के लिए तैयार किए गए हैं। इस इकाई के दौरान आप बधिर संस्कृति की बुनियादी जागरूकता और उसके संदर्भ में कई विषयें जान सकेंगें।

3.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप इस योग्य हो जायेगे कि–

- संस्कृति के संदर्भ में श्रवण बाधिता पर बुनियादी जागरूकता के बारें मे समझेंगे।
- बधिर संस्कृति, व्यवहार और भाषा के संदर्भ में श्रवण बाधिता पर बुनियादी जागरूकता के बारें मे समझेंगे।
- श्रवण बाधित लोगो को श्रवण बाधित संस्कृति से पहचान कराने में सहयोग कर सकेगें।
- श्रवण बाधित संस्कृति के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग कर सकेगें।
- श्रवण बाधित खेलों को आयोजित कर सकेगें।

3.3 संस्कृति के संदर्भ में श्रवण बाधिता

श्रवण बाधित लोग भाषाई अल्पसंख्यकों में से एक हैं, वे कई जीवन के अनुभव किसी और व्यक्तियों जैसे साझा करते हैं, जो श्रवण बाधित संस्कृति में भी समान रूप से प्रकट होते हैं। विश्व बधिर संघ के अनुसार, बधिर संस्कृति में श्रवण बाधित लोगों द्वारा साझा की जाने वाली मान्यताएँ, दृष्टिकोण, इतिहास, मानदंड, मूल्य, साहित्यिक परंपराएँ और कलाएँ शामिल हैं। इसके अलावा, बधिर संस्कृति के प्रमुख पहलू के रूप में सांकेतिक भाषा का उपयोग संचार का मुख्य रूप है।

बधिर संस्कृति के कई पहलू श्रवण बाधित समुदाय की शैक्षिक पृष्ठभूमि में निहित हैं, क्योंकि यहीं से सांकेतिक भाषाएँ आम तौर पर उत्पन्न होती हैं और अधिक व्यापक रूप से आत्मसात की जाती हैं। इसके अलावा, कई बच्चों को श्रवण बाधित स्कूल में भर्ती होने पर बधिर संस्कृति से परिचित कराया जाता है, क्योंकि अधिकांश बधिर बच्चे सुनने में सक्षम वाले परिवारों में पैदा होते हैं। उन परिवारों को बधिर संस्कृति से परिचित होने के अवसर नहीं मिल पाते हैं। बधिर संस्कृति का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि इससे श्रवण बाधित लोगों को लाभ मिलता है। बधिर संस्कृति चिकित्सा

शब्द श्रवण हानि/क्षति के विपरीत है, जो बहरेपन से प्राप्त सभी सकारात्मक अनुभवों पर केंद्रित है। बधिर संस्कृति सुनने की उस भावना पर विश्वास नहीं करती जो श्रवण बाधित व्यक्ति में मौजूद नहीं होती। संक्षेप में, बहरापन ऐसी चीज नहीं है जिसका इलाज या समाधान किया जाना आवश्यक है। बहरापन जीवन का अनुभव करने का एक अलग तरीका है, जो दृश्य स्थानिक भाषा की दुनिया में निहित है। बधिर संस्कृति और बहरापन विभिन्न तरीकों से परस्पर जुड़े हुए हैं।

बधिर/श्रवण बाधित संस्कृति का इतिहास –

बधिर/श्रवण बाधित संस्कृति शब्द पहली बार कार्ल जी. क्रोनबर्ग द्वारा 1965 में अमेरिकी सांकेतिक भाषा के शब्दकोश में श्रवण बाधित और श्रवण संस्कृतियों के बीच समानता पर चर्चा करने के लिए किया गया था ।

हालाँकि, बधिर/श्रवण बाधित संस्कृति को मजबूत करने के लिए इतिहास में महत्वपूर्ण घटना वर्ष 1988 में गैलाउडेट विश्वविद्यालय में डेफ प्रेसिडेंट, नाउ आंदोलन द्वारा नेतृत्व की गई थी। उस समय एक बड़ा विरोध प्रदर्शन शुरू हो गया जब दो अन्य श्रवण बाधित पेशेवरों के खिलाफ चुनाव लड़ते हुए एक सुनने में सक्षम वाले व्यक्ति को गैलाउडेट विश्वविद्यालय का 7वां अध्यक्ष चुना गया था। कई दिनों के विरोध प्रदर्शन और छात्रों द्वारा परिसर पर कब्ज़ा करने के बाद, सुनने में सक्षम लोग के उम्मीदवार ने इस्तीफा दे दिया और एक श्रवण बाधित प्रोफेसर डॉ. आई. किंग जॉर्डन को नया अध्यक्ष के रुप में नियुक्त किया गया था।

इस आंदोलन ने अंतरराष्ट्रीय मीडिया का ध्यान आकर्षित किया और अब इसे श्रवण बाधित समुदाय की मौलिक नागरिक अधिकार उपलब्धि के रूप में जाना जाता है। यह उजागर करना महत्वपूर्ण है कि गैलाउडेट विश्वविद्यालय बधिर/श्रवण बाधित संस्कृति के लिए एक महत्वपूर्ण प्रतीक है, जो दुनिया में श्रवण बाधित छात्रों के लिए एकमात्र स्वतंत्र कला महाविद्यालय है। हर संस्कृति अपने आप में अनोखी होती है और उसकी अपनी विशेषताएं होती हैं । बधिर/ श्रवण बाधित संस्कृति के लिए भी यह अलग नहीं है।

3.4 संस्कृति के संदर्भ में श्रवण बाधिता पर बुनियादी जागरूकता

बधिर/श्रवण बाधित संस्कृति – बधिर लोग किसी भी सांस्कृतिक, भाषाई अल्पसंख्यक की तरह एक जातीय समूह का हिस्सा हैं। बधिर संस्कृति एक गैर–संकेतक या श्रवण दुनिया में रहने का तरीका है जो बधिर लोगों के संचार के संदर्भ में अक्षम कर सकता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि सुनने में सक्षम लोगों को सांकेतिक भाषा का उपयोग करने के लिए बधिर होने का अनुभव नहीं हो सकता है। बधिर/श्रवण बाधित लोग सामूहिक नाम, भाषा, संस्कृति, इतिहास, मूल्यों, रीति–रिवाजों और व्यवहार मानदंडों, समुदाय और संबंध की भावनाओं, कला और साहित्य और सामाजिक/संगठनात्मक संरचनाओं को साझा करते हैं । बधिर/श्रवण बाधित होना एक जैविक

विशेषता है–जैसे कि काला या सफेद, महिला या पुरुष होना–और यह एक स्थिति नहीं है; यह होने का एक तरीका है । अन्य जातीय समूहों के सदस्यों की तरह, बधिर /श्रवण बाधित लोग पहचान की एक विस्तृत श्रृंखला के साथ आते हैं। सांस्कृतिक रूप से बधिर/श्रवण बाधित और बधिर/श्रवण बाधित समुदाय के सदस्य के रूप में पहचान करते समय अंग्रेजी में बिग डी का उपयोग करना आम बात हैं। जिन बधिर/श्रवण बाधित लोगों को विभिन्न दृष्टि संबंधी समस्याएं होती हैं, उन्हें बधिर–अंधे के रूप में पहचाना जा सकता है। कुछ लोग श्रवण बाधित के लिए अंग्रेजी में छोटे स्माल डी का उपयोग करते हैं, जो चिकित्सा प्रतिमान से उत्पन्न होता है और श्रवण संबंधी स्थिति, संचार शैली और/या श्रवण बाधित समुदाय में संपर्क और अनुभव के स्तर पर केंद्रित होता है।

बधिर/श्रवण बाधित संस्कृति सामाजिक मान्यताओं, व्यवहारों, कला, साहित्यिक परंपराओं, इतिहास, मूल्यों और समुदायों के साझा संस्थानों का समूह है जो श्रवण बाधिता से प्रभावित होते हैं और जो संचार के मुख्य साधन के रूप में संकेत भाषाओं का उपयोग करते हैं। जब बधिर / श्रवण बाधित संस्कृति के रूप में सांस्कृतिक विनिर्देश के रूप में उपयोग किया जाता है, तो बधिर शब्द को अंग्रेजी में अक्सर बिग डी के साथ लिखा जाता है और भाषण और संकेत के दौरान बिग डी बधिर के रूप में संदर्भित किया जाता है। जब ऑडियोलॉजिकल स्थिति के लिए शीर्षक के रूप में उपयोग किये जाने के लिए अंग्रेजी में अक्सर स्माल डी के साथ लिखा जाता हैं। श्रवण बाधित समुदाय के सदस्य बहरेपन को दिव्यांगता या बीमारी के बजाय मानव अनुभव में अंतर के रूप में देखते हैं। कई श्रवण बाधित सदस्य अपनी श्रवण बाधित पहचान पर गर्व करते हैं।

अल्पसंख्यक का दर्जा :– श्रवण बाधित समुदाय को एक जातीय समुदाय के समान एक भाषाई और सांस्कृतिक अल्पसंख्यक समूह माना जाता है। इस समुदाय को बनाने वाले व्यक्ति ज्यादातर वे होते हैं जो जन्म से बहरे/श्रवण बाधित थे या जीवन में जल्दी बहरे/श्रवण बाधित हो गए थे और इनमें सुनने में सक्षम वाले दोस्त, परिवार के सदस्य और बहरे/श्रवण बाधित लोगों के साथ काम करने वाले दुभाषिए और सामुदायिक कार्यकर्ता लोग भी शामिल हो सकते हैं।

श्रवण बाधित समुदाय की एक साझा भाषा और संस्कृति है और आम अनुभव की एक लंबी परंपरा है। बधिर/श्रवण बाधित संस्कृति में विभिन्न प्रकार के सामाजिक, खेल, धार्मिक और राजनीतिक संगठन भी शामिल हैं। समुदाय के श्रवण बाधित सदस्यों में श्रवण बाधित व्यक्ति के रूप में पहचान की मजबूत भावना होती है। वे बहरे होने के साथ साथ घर पर संकेत भाषा के उपयोग करते हुए अन्य श्रवण बाधित लोगों के साथ समानता महसूस करते हैं। इसी तरह के श्रवण बाधित समुदाय दुनिया में हर जगह मौजूद हैं। श्रवण बाधित लोग मजबूत समुदायों में विकसित हुए हैं और पूरे इतिहास में संकेत भाषाओं का विकास किया है। श्रवण बाधित लोग न केवल समान अनुभव साझा करते हैं बल्कि एक ऐसी भाषा और संस्कृति भी साझा करते हैं जो बेहतर तरीके से जानने लायक है। एक साझा भाषा और संस्कृति श्रवण बाधित लोगों को अन्य दिव्यांग लोगों द्वारा गठित सहायता समूहों से अलग करती है। श्रवण बाधित लोग खुद को कुछ हद तक एक जातीय समुदाय की तरह देखते हैं। अलग–अलग देशों में अलग–अलग सांकेतिक भाषाएँ प्रयोग में हैं। कई बधिर/श्रवण

बाधित लोगों की अपेक्षाओं के विपरीत, कोई सार्वभौमिक सांकेतिक भाषा नहीं है, लेकिन मान्यता प्राप्त सांकेतिक भाषा परिवार हैं, जैसे कि ब्रिटिश सांकेतिक भाषा, फ्रेंच सांकेतिक भाषा, अमेरिकी सांकेतिक भाषा और भारतीय सांकेतिक भाषा ।

श्रवण बाधित लोग आम तौर पर अपने शब्दों और विचारों को व्यक्त करने के लिए भारतीय सांकेतिक भाषा (या कई अन्य हस्ताक्षरित भाषाओं में से एक) का उपयोग करते हैं। कुछ श्रवण बाधित लोग बहुत अच्छी तरह से अंग्रेजी या अपनी मातृ भाषा बोलना, पढ़ना और लिखना सीखते हैं; जैसे कुछ सुनने में सक्षम वाले लोग बहुत अच्छी तरह से संकेतों के इस्तेमाल करना और समझना सीखते हैं; लेकिन, मोटे तौर पर, श्रवण बाधित लोग संकेत भाषा के साथ बेहतर संवाद करना पसंद करते हैं क्योंकि यह एक व्याकरण प्रणाली पर आधारित है जिसके लिए वे स्वाभाविक रूप से सुसज्जित हैं।

3.5 श्रवण बाधित संस्कृति के बारे में विशिष्टता

प्रत्येक संस्कृति अपने आप में अनूठी होती है और उसकी अपनी विशिष्ट विशेषताएं होती हैं। बधिर /श्रवण बाधित संस्कृति में भी अपनी विशिष्ट विशेषताएं है। जैसा कि हमने पहले कहा है, दृष्टि पर निर्भरता के साथ–साथ सांकेतिक भाषा को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। साथ ही, श्रवण बाधित समुदाय के लोग एक–दूसरे के साथ गहरे संबंध विकसित करते हैं, जिससे एक बहुत शक्तिशाली राष्ट्रव्यापी नेटवर्क बनता है। बधिर/श्रवण बाधित संस्कृति में एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू संचार बाधाओं को दूर करने के लिए सहायक प्रौद्योगिकी का उपयोग है, जिसके बारे में हम अगले अनुभागों में अधिक जानने का प्रयास करेंगे। किसी भी अन्य संस्कृति की तरह, बधिर/श्रवण बाधित संगठनों में भी बधिर/श्रवण बाधित क्लब, स्कूल और धार्मिक संस्थान जैसे मजबूत सांस्कृतिक परंपराएँ है। इसने संचार शिष्टाचार की तरह अपने विशिष्ट मानदंड और व्यवहार भी विकसित किए, जिनके बारे में हम आगे विस्तार से जानेंगे।

3.6 श्रवण बाधित संस्कृति के पाँच पहलू

कुछ प्रमुख पहलू हैं जो बधिर/श्रवण बाधित संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं, आइए उनके बारे में गहराई से जानें:–

भाषा :– बधिर/श्रवण बाधित संस्कृति में सांकेतिक भाषा का प्रयोग एक प्रमुख पहलू हैं, जो हम पहले भी कहते आये हैं और आगे भी कहते रहेंगे। यह जानना महत्वपूर्ण है कि सांकेतिक भाषाओं की अपनी संरचनात्मक और व्याकरणिक संरचना और नियम होते हैं। वे देश की मौखिक भाषा का केवल एक हस्ताक्षरित अनुवादित संस्करण नहीं हैं।

मूल्य:– बधिर/श्रवण बाधित संस्कृति में मूल्य दूसरा प्रमुख पहलू है, सांकेतिक भाषा साहित्य, विरासत और कला के अन्य रूपों और विरासतों को संरक्षित करना आवश्यक है। इसके साथ ही, स्पष्ट संचार को भी बहुत महत्व दिया जाता हैं।

परंपराएँः– बधिर/श्रवण बाधित संस्कृति में तीसरा प्रमुख पहलू है परंपराएँ, अन्य श्रवण बाधित पीढ़ियों की कहानियां, साझा अनुभव और समुदाय के लिए महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में भाग लेना बधिर संस्कृति में परंपराओं के रूप में बहुत महत्वपूर्ण है।

मानदंडः– बधिर/श्रवण बाधित संस्कृति में मानदंड के रुप में संचार शिष्टाचार आवश्यक है। आपको बधिर श्रवण बाधित के साथ संप्रेषण करते समय आँख से आँख मिलाने के महत्व, संवाद करने के तरीके तथा लोगों का ध्यान सही ढंग से आकर्षित करने के बारे में जानना होगा। उदाहरण के लिए, किसी को बुलाने का प्रयास करते समय, उसका नाम चिल्लाने के बजाय, उसके कंधे को थपथपाने का प्रयास करें या नाजुक ढंग से लाइटें चालू और बंद करने का प्रयास करें।

पहचानः– बधिर पहचान एक ऐसी अवधारणा है जो बधिरता के सांस्कृतिक दृष्टिकोण से उत्पन्न हुई है जिसमें बधिरता/श्रवण बाधिता को चिकित्सा स्थिति के रूप में नहीं देखा जाता है। जिन बधिरों की बधिर पहचान होती है, उनका सांकेतिक भाषा से गहरा जुड़ाव होता है। बधिर/श्रवण बाधित संस्कृति में बधिर/श्रवण बाधित स्वयं को इस समुदाय के हिस्से के रूप में स्वीकार करना और पहचानना, भाग लेना अपेक्षित करते हैं और वे इसकी संस्कृति पर गर्व करते हैं।

बोध प्रश्न

टिप्पणी क – नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए ।

ख – इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की मिलान करें ।

प्र 1. बधिर / श्रवण बाधित संस्कृति के संदर्भ में बुनियादी जागरूकता की महत्व बताइये?

_____
_____

प्र 2 बधिर / श्रवण बाधित संस्कृति के पहलू के बारें में लिखिये ?

_____
_____

3.7 श्रवण बाधित लोग और श्रवण बाधित संस्कृति से अपनी पहचान

बधिर संस्कृति के साथ पहचान करना बधिर समुदाय का हिस्सा होने से बहुत जुड़ा हुआ है, जिसे हम अगले अनुभागों में बेहतर ढंग से समझाएंगे। यह इस बात से संबंधित है कि कोई व्यक्ति सुनने की क्षमता की कमी के मामले में खुद को कैसे पहचानता है और सांकेतिक भाषा में संवाद कैसे

करता है। हालाँकि, हर कोई अपना व्यक्ति है, इसलिए यह उनके व्यक्तिगत अनुभवों और व्यक्तित्व पर निर्भर करता है।

इसके अलावा, श्रवण बाधित लोगों के अलग–अलग प्रक्षेप पथ होते हैं, और कुछ को श्रवण बाधित संस्कृति से उनके जीवन में बाद में ही परिचय होता है। कुछ लोग बचपन और पारिवारिक माहौल से ही इसके संपर्क में आ जाते हैं, कुछ लोग बधिरों के स्कूलों में इससे परिचित हो जाते हैं, और कुछ को कॉलेज में या बाद में भी इससे परिचित कराया जा सकता है।

ऐसा इसलिए होता है क्योंकि श्रवण बाधित व्यक्ति आमतौर पर अपने सुनने में सक्षम वाले माता–पिता से अपनी सांस्कृतिक पहचान हासिल नहीं कर पाते हैं, जिससे संचार बाधाओं के कारण उन्हें अपने परिवार के बजाय श्रवण बाधित समुदाय के साथियों के साथ अधिक पहचान महसूस होती है ।

श्रवण बाधित संस्कृति के उदाहरण – श्रवण बाधित संस्कृति, समुदाय के मूल देश या अन्य संस्कृतियों के साथ प्रतिच्छेदन के आधार पर भिन्न हो सकती है। हालाँकि, कुछ पहलू हर जगह समान रहते हैं। ये श्रवण बाधित संस्कृति के सामूहिकता, सांकेतिक भाषा का उपयोग और संवाद करने का सीधा और स्पष्ट तरीका जैसे विषय बेहतरीन उदाहरण बन सकते हैं।

श्रवण बाधित संस्कृति में CODA & CODA:– यह श्रवण बाधित वयस्कों के बच्चे के लिए संक्षिप्त नाम है। यह उन सभी सुनने में सक्षम वाले लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जिनके माता या पिता या यहां तक कि दोनों श्रवण बाधित हो सकती हैं। CODA आमतौर पर श्रवण बाधित समुदाय का हिस्सा होते हैं। भले ही वे लोग सुनने में सक्षम वाले हो, वे श्रवण बाधित संस्कृति का प्रतीक हैं और श्रवण बाधित हित के लिए बड़े कार्यकर्ता हैं।

क्या सभी श्रवण बाधित लोगों के माता–पिता भी बहरे होते हैं?

नहीं ! दरअसल, यह अनुमान लगाया गया है कि केवल 10 प्रतिशत श्रवण बाधित लोग श्रवण बाधित परिवारों में पैदा होते हैं। शेष 90 प्रतिशत सुनने में सक्षम वाले परिवारों से आते हैं, जिन्हें आमतौर पर सुनने की संस्कृति के अनुकूल ढलने में कठिन समय लगता है और जीवन में बाद में ही उन्हें श्रवण बाधित संस्कृति से परिचित कराया जाता है।

बधिर/श्रवण बाधित समुदाय – दुनिया भर में अलग–अलग बधिर/श्रवण बाधित समुदाय हैं, लेकिन वे सभी ऐसे लोगों के समूह से बने हैं जो एक जैसा सांकेतिक भाषा, विरासत और बधिर/श्रवण बाधित संस्कृति के मूल्य को साझा करते हैं। इस समुदाय का हिस्सा बनना एक व्यक्तिगत पसंद है, जो आमतौर पर व्यक्ति के श्रवण स्तर से नहीं बल्कि बधिर /श्रवण बाधित व्यक्ति के रूप में उसकी पहचान की भावना से संबंधित होता है। कुछ श्रवण बाधित लोग भी हैं जो इससे जुड़े हुए हैं, जैसे कि CODA और सांकेतिक भाषा दुभाषिए। हालाँकि वे इसमें भाग लेते हैं, लेकिन वे कभी भी श्रवण बाधित समुदाय के मूल में नहीं होंगे।

श्रवण बाधित समुदाय उन श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए सामाजिक संपर्क का समर्थन करता है और उन्हें बढ़ावा देता है, जो आम तौर पर निराशा महसूस करते हैं और सुनने की दुनिया से बाहर हो गए हैं, इसलिए, सांस्कृतिक रूप से श्रवण बाधित के रूप में पहचान करना और समुदाय में शामिल होना उनके लिए बेहतर आत्म–सम्मान में योगदान कर सकता है।

बधिर/श्रवण बाधित समुदाय के कुछ उदाहरण – बधिर/श्रवण बाधित संस्कृति प्रकृति में समरूप नहीं है। दुनिया भर में अलग–अलग श्रवण बाधित समुदाय हैं जिनके अलग–अलग सांस्कृतिक मानदंड हैं। उदाहरण के लिए, हर देश की अपनी सांकेतिक भाषाएँ होती हैं।

बधिर/श्रवण बाधित संस्कृति से संबंधित होना अन्य सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों, जैसे राष्ट्रीयता, नस्ल, जातीयता, लिंग, यौन अभिविन्यास, वर्ग, शिक्षा और अन्य पहचान चिह्नकों के साथ जुड़ा हुआ है। इसका परिणाम विभिन्न संस्थागत स्थलों के साथ एक अत्यंत विविध समुदाय में होता है। आइए उनमें से कुछ के बारे में आगे जानेंगें।

बधिर/श्रवण बाधित अफ्रीकी–अमेरिकी संस्थान – 1982 में स्थापित, नेशनल ब्लैक डेफ़ एडवोकेट्स एक सांस्कृतिक संस्था है जो काले श्रवण बाधित लोगों के स्वास्थ्य और कल्याण को सुनिश्चित करने पर केंद्रित है। वे समुदाय के सदस्यों के लिए सामाजिक समानता, नेतृत्व विकास, आर्थिक और शैक्षिक अवसरों को बढ़ावा देने की दिशा में काम करते हैं। इसके अलावा, काले बधिर/श्रवण बाधित लोगों ने अपनी स्वयं की सांकेतिक भाषा भी विकसित की है, जिसे ब्लैक एसएल के नाम से जाना जाता है।

बधिर / श्रवण बाधित धार्मिक संस्थान – कई धर्मों के बधिरों के लिए चर्च और आराधनालय जैसे विभिन्न धार्मिक संस्थान हैं। इन सभी में संचार का मुख्य रूप सांकेतिक भाषा है। अन्य श्रवण बाधित संगठनों की तरह, वे आपके विश्वास का अभ्यास करने के लिए एक सुलभ और सुरक्षित स्थान होने के नाते, समावेशन को बढ़ावा देते हैं।

बधिर/श्रवण बाधित महिला संस्थान – अखिल भारतीय बधिर महिला फाउंडेशन एक राष्ट्रीय स्तर का संगठन है जो बधिर महिलाओं के पुनर्वास और समाज में उनकी स्थिति को उन्नत करने के लिए काम करता है। यह 2014 में अस्तित्व में आया। AIFDW पूरी तरह से एक गैर–सरकारी संगठन है। यह बधिर महिलाओं के लिए विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से पुनर्वास पाने का एकमात्र मंच है जैसे– कौशल प्रशिक्षण, वैवाहिक सम्मेलन, रोजगार के अवसर पैदा करना, राष्ट्रीय सम्मेलन, जागरूकता कार्यक्रम, स्क्रीनिंग कैंप, कानूनी जागरूकता,सांस्कृतिक महोत्सव, खेल प्रतियोगिताएं, भारतीय सांकेतिक भाषा कार्यशाला और व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र आदि। समर्पण और कड़ी मेहनत के कारण आज 15 राज्य AIFDW से जुड़े हुए हैं। वे इन 15 राज्यों को बधिर महिलाओं के लिए कौशल प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करने में सहायता करने में सफल रहे हैं।

दिल्ली बधिर महिला फाउंडेशन–भारत (DFDW) की शुरुआत बधिर महिलाओं के लिए एक क्लब के रूप में हुई थी, लेकिन बधिर महिलाओं की जरूरतों को देखते हुए इसने धीरे–धीरे उनके लाभ

और पुनर्वास के लिए गतिविधियाँ शुरू कीं। 1973 में स्थापित, आज DFDW भारत में सभी बधिर महिलाओं के लिए एक पुनर्वास केंद्र है। उनका मिशन इन महिलाओं को सशक्त बनाना, नेटवर्किंग और संवर्धन को बढ़ावा देना है।

बधिर / श्रवण बाधित संस्कृति के लिए प्रौद्योगिकी का महत्व – सहायक प्रौद्योगिकी उन लोगों को जीवन में अधिक स्वायत्तता और स्वतंत्रता प्रदान कर सकती है जो श्रवण बाधित समुदाय का हिस्सा हैं। यह उनकी दिव्यांगता और सुनने की कमी को ठीक करने के बारे में ही नहीं है, बल्कि उन्हें समानता के बेहतर मानक के साथ समाज में भाग लेने के लिए आवश्यक उपकरण देने के बारे में होते है।

श्रवण बाधित लोगों द्वारा उपयोग की जाने वाली सहायक तकनीक के मुख्य प्रकार कॉकलियर प्रत्यारोपण, सांकेतिक भाषा अनुवादक, बंद कैप्शन, उपशीर्षक और वीडियो रिले सेवाएं हैं। साथ ही, जो तकनीक लोगों को उनके दैनिक जीवन में मदद करती है उसे श्रवण दिव्यांगता वाले लोगों के लिए भी अनुकूलित किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, अलार्म घड़ियाँ केवल दरवाजे की घंटियों से जुड़ी ध्वनि और प्रकाश चमक पर निर्भर रहने के बजाय दृश्य उत्तेजना प्रदान कर सकती हैं।

जैसा कि कहा जा रहा है, अभी भी कुछ लोग हैं जो श्रवण बाधित संस्कृति के भीतर प्रौद्योगिकी, विशेष रूप से कर्णावत प्रत्यारोपण, के उपयोग का विरोध करते हैं। उनका दावा है कि इससे श्रवण बाधित संस्कृति को खतरा है, जबकि यह निर्देश दिया गया है कि सुनने की दुनिया बेहतर है। श्रवण बाधित लोगों और उनकी संस्कृति के प्रति अभी भी बहुत भेदभाव है, जो मुख्य रूप से ज्ञान की कमी, हानिकारक रूढ़िवादिता और बहरेपन के संबंध में नकारात्मक दृष्टिकोण के कारण होता रहा है।

बधिर/श्रवण बाधित फिल्म और कला महोत्सव – अंतर्राष्ट्रीय श्रवण बाधित फिल्म महोत्सव के साथ–साथ राष्ट्रीय श्रवण बाधित फिल्म कार्यक्रम भी प्रतिवर्ष आयोजित किए जाते हैं, उदाहरण के लिए यूरोप और उत्तरी अमेरिका में, जहां फिल्म निर्माता अपनी फिल्में प्रदर्शित करते है। उनकी फिल्में अक्सर श्रवण बाधित संस्कृति, सांकेतिक भाषा और श्रवण बाधित पहचान से गहराई से जुड़ी होती हैं। भारत में, हमारे पास आईआईडीएफ (इंडिया इंटरनेशनल डेफ फिल्म) महोत्सव है, जिसमें श्रवण बाधित अभिनेताओं और श्रवण बाधित जीवन और संस्कृति के बारे में कहानियों वाली कई फिल्में शामिल हैं। क्लिन Mh' ओइल फ्रांस में हर दो साल में आयोजित होने वाला एक प्रसिद्ध सांकेतिक भाषा कला उत्सव है। इसे श्रवण बाधित समुदाय में एक प्रमुख घटना के रूप में मान्यता प्राप्त है। हर साल, हजारों श्रवण बाधित कलाकार और लोग इसमें भाग लेते हैं, एक सप्ताह के लिए शिविर लगाते हैं और श्रवण बाधित संस्कृति, संगीत, नाटक, कॉमेडी और गतिविधियों का आनंद लेते हैं।

अभिनया एक भारतीय अभिनेत्री और मॉडल हैं जो मुख्य रूप से तमिल, तेलुगु और मलयालम फिल्मों में काम करती हैं। वह सुनने और बोलने में अक्षम हैं। उन्होंने नाडोडिगल (2009) में अपने अभिनय की शुरुआत की और उसके बाद वह कई तमिल और तेलुगु फिल्मों में दिखाई दीं।

ध्रूव शर्मा एक भारतीय कन्नड़–भाषा अभिनेता और क्रिकेटर थे। ध्रुव शर्मा ने याहू फिल्म (2004) में एक छोटी सी भूमिका निभाई थी। उन्होंने स्नेहांजलि (2007) के साथ मुख्य अभिनेता के रूप में अपनी शुरुआत की, जिसने मुख्य भूमिका में एक मूक–बधिर व्यक्ति को शामिल करने वाली पहली फिल्म के लिए गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड जीता।

बधिर/श्रवण बाधित खेल और खिलाडी – बधिर/श्रवण बाधित समूह के लिए 1924 में डेफलिम्पिक्स की शुरुआत हुई। यह नियमित ओलंपिक की तरह हर चार साल में एक अलग देश में आयोजित किया जाता है। कई श्रवण बाधित खिलाड़ी विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं और पदक जीतते हैं। कई भारतीय एथलीटों ने अंतरराष्ट्रीय श्रवण बाधित खेल प्रतियोगिताओं में पदक जीते हैं। हरियाणा के श्रवण बाधित पहलवान वीरेंद्र सिंह ने कई स्वर्ण पदक जीते हैं।

वर्तमान में, दुनिया में बधिरों के लिए खेल की अंतर्राष्ट्रीय समिति (इसका संक्षिप्त नाम ICSD है) नामक एक संगठन है, जो 24 अगस्त, 1924 से सफलतापूर्वक काम कर रहा है और जो केवल बधिर लोगों के लिए खेल गतिविधियों की एक उच्च संगठित प्रणाली संचालित कर रहा है। ICSD एक स्वतंत्र और स्व–विनियमित अंतर्राष्ट्रीय खेल संगठन है। ICSD अंतर्राष्ट्रीय पैरालंपिक समिति (IPC) से जुड़ा नहीं है। आईओसी के संरक्षण में डेफलिम्पिक्स विश्व का दूसरा सबसे पुराना अंतर्राष्ट्रीय बहु–खेल आयोजन है।

अखिल भारतीय बधिर खेल परिषद, नई दिल्ली जो बधिर खेलों के लिए राष्ट्रीय सर्वोच्च निकाय है, 55 खेल संघों में से एक है, जिसे भारत सरकार के युवा मामले और खेल विभाग द्वारा मान्यता प्राप्त है, जिसका उद्देश्य देश में खेलों को बढ़ावा देना है। 55 राष्ट्रीय खेल महासंघ संघों में से अकेले यह अखिल भारतीय बधिर खेल परिषद राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सभी विषयों में एक ही छत्र के नीचे चौंपियनशिप आयोजित करता है। जेरलिन अनिका जयराजन (डेफलिम्पिक्स स्वर्ण पदक विजेता बैडमिंटन) को भारत के राष्ट्रपति से 2023 में अर्जुन पुरस्कार मिला। वे सभी श्रवण बाधित संस्कृति और पहचान से जुड़ी हुए हैं।

बधिर /श्रवण बाधित कला और कलाकार – भारत में कई श्रवण बाधित कलाकार अपने प्रभावशाली कार्य और प्रदर्शन के साथ मौजूद हैं। उन्होंने श्रवण बाधित संस्कृति और पहचान से जुड़ी ढेर सारी कलाकृतियां बनाई हैं। भारत में श्रवण बाधित कलाएं अभी भी नई हैं, लेकिन हमारे पास संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे अन्य देशों से कला के कई शक्तिशाली और रचनात्मक उदाहरण हैं, जो श्रवण बाधित जीवन, श्रवण बाधित संस्कृति, दृश्य संचार, सांकेतिक भाषा और श्रवण बाधित पहचान के बारे में विचार व्यक्त करते हैं।

नॉट जस्ट आर्टः– एक डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म है जिसे भारत में दिव्यांग दृश्य कलाकारों का समर्थन करने और कला प्रेमियों, संग्रहकर्ताओं, संग्रहालयों और दीर्घाओं के वैश्विक दर्शकों के लिए उनके काम को बढ़ावा देने के लिए बनाया गया हैं। कलाकारों का हमारा समुदाय भारत में प्रस्तुत की जाने वाली कुछ बेहतरीन समकालीन दृश्य कला का निर्माण करता है। उनकी प्रतिभाओं को प्रदर्शित करना और उन्हें मुख्यधारा की कला की दुनिया में लाना, अपनी पहुँच को व्यापक बनाने और एक समावेशी वैश्विक कला समुदाय बनाने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करना इसका उद्देश्य है। साथ ही, हम स्कूलों और सामुदायिक केंद्रों में आयोजित कला कार्यशालाओं के माध्यम से दिव्यांग बच्चों और युवाओं को कला के लाभों से परिचित कराते हैं।

भारत में बधिर/श्रवण बाधित संस्कृति – श्रवण बाधित लोग अपने सुनने में सक्षम वाले परिवारों में अकेलापन महसूस करते हैं क्योंकि उनके परिवार के सदस्य हस्ताक्षर नहीं करते हैं। उनके लिए सांकेतिक भाषा और श्रवण बाधित संस्कृति से परिचित होने के लिए श्रवण बाधित स्कूलों और संघों में जाना महत्वपूर्ण है। बधिरों/श्रवण बाधितों के लिए भारत का पहला स्कूल मुंबई में स्थापित किया गया था, और फिर दूसरा स्कूल कोलकाता में शुरू किया गया था। बाद में, पूरे भारत में इसी तरह के श्रवण बाधित विद्यालय स्थापित किए गए। लेकिन ज्यादातर के इस पाठशालाओं में शिक्षण और संचार के लिए संचार विकल्प के रूप में मौखिकवाद को अपनाये थे, जो सांकेतिक भाषा का उपयोग नहीं करते थे या इसके बारे में जागरूकता नहीं बढ़ाते थे। अधिकांश शिक्षक सुनने में सक्षम थे और हस्ताक्षर नहीं कर पा रहे थे। कोलकाता के श्री बनर्जी द्वारा 1949 में लिखी गई एक पुस्तक में कहा गया है कि उन्होंने श्रवण बाधित बच्चों को इशारों और हाथों की भावों का उपयोग करते हुए कई सार्वजनिक स्थानों को देखा। इसका मतलब है कि उस अवधि के दौरान स्कूलों में हस्ताक्षर चल रहे थे, क्योंकि श्रवण बाधित बच्चों के लिए मौखिक तरीकों का सख्ती से पालन करना संभव नहीं था।

भारत में श्रवण बाधित स्कूलों की स्थापना के साथ, सांकेतिक भाषा और श्रवण बाधित संस्कृति का विकास शुरू हुआ। भारत में अब लगभग 1200 श्रवण बाधित स्कूल हैं, जिनमें गैर सरकारी संगठनों और सरकार द्वारा संचालित स्कूल भी शामिल हैं। हालाँकि अधिकांश सुनने में सक्षम वाले शिक्षक अभी भी हस्ताक्षर नहीं करते हैं, श्रवण बाधित बच्चे सांकेतिक भाषा में एक–दूसरे से धाराप्रवाह बातचीत करते हैं। भारतीय सांकेतिक भाषा (आईएसएल) पर शोध सीमित कर दिया गया है। हम जानते हैं कि भारत में श्रवण बाधित लोग भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग करते हैं, और उसके व्याकरण पूरे देश में काफी हद तक समान है, लेकिन विभिन्न क्षेत्रों में शब्द–स्तर (शब्दावली) में कुछ मामूली भिन्नताएं हैं । ये विविधताएँ वास्तव में श्रवण बाधित लोगों के लिए कोई बाधा नहीं हैं। हमारे पास स्नातक और स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में भारतीय सांकेतिक भाषा एक विषय के रूप में और पाठ्यक्रम उपलब्ध नहीं है। शिक्षकों और दुभाषियों के लिए केवल एक दो–वर्षीय भारतीय सांकेतिक भाषा प्रशिक्षण पाठ्यक्रम ही उपलब्ध है। भारतीय सांकेतिक भाषा पाठ्यक्रमों और आगे के शोध के साथ साथ संसाधनों के निर्माण की तत्काल आवश्यकता है। श्रवण बाधित व्यक्तियों की संस्कृति को समझने तथा इसके बारे में समर्थन के साथ–साथ जागरूकता पैदा करना बहुत

महत्वपूर्ण है। जिस तरह सुनने में सक्षम वाले लोग अपनी संस्कृतियों और बोली जाने वाली भाषाओं पर गर्व करते हैं, उसी तरह बधिर/श्रवण बाधित समुदाय अपनी सांकेतिक भाषाओं, मूल्यों, ज्ञान और श्रवण बाधित संस्कृति पर गर्व करते हैं।

बधिर/श्रवण बाधित माता–पिता अपनी बधिर/श्रवण बाधित संस्कृति को अपने बधिर/श्रवण बाधित बच्चों में स्थानांतरित कर सकते हैं। हालाँकि, 90 प्रतिशत श्रवण बाधित बच्चे सुनने में सक्षम वाले माता–पिता से पैदा होते हैं। ये सुनने में सक्षम वाले माता–पिता सांकेतिक भाषा से परिचित नहीं हैं। परिणामस्वरूप, ये माता–पिता अपने श्रवण बाधित बच्चों को श्रवण बाधित संस्कृति प्रदान करने में असमर्थ होते हैं। दरअसल, सुनने में सक्षम वाले माता–पिता के यहां पैदा होने वाले बच्चे अक्सर श्रवण बाधित संघों, श्रवण बाधित स्कूलों और श्रवण बाधित छात्रावासों के माध्यम से श्रवण बाधित संस्कृति के संपर्क में आते हैं, जहां वे सभी हस्ताक्षर करते हैं और साथ ही अपनी संस्कृति को आगे बढ़ाते हैं ।

हमें श्रवण बाधित लोगों को श्रवण संस्कृति के साथ आत्मसात करने के लिए मजबूर नहीं करना चाहिए, अगर यह उन पर थोपा जा रहा है जो समाज के लिए सबसे आसान है, तो यह नैतिकता के खिलाफ है। हमें सार्वजनिक और निजी संगठनों की मदद से भारतीय सांकेतिक भाषा के संबंध में जागरूकता पैदा करके और भारतीय सांकेतिक भाषा पर ऐसे विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करके सामाजिक सुधार करने की आवश्यकता है, ताकि श्रवण बाधित लोग अधिक एकीकृत और समावेशी महसूस करें। कोई भी ऐसा कर सकता है, और आप सांकेतिक भाषा सीखकर शुरुआत कर सकते हैं। तो, आइए हम श्रवण बाधितों के लिए समावेशी समाज बनाने के लिए एक अच्छा निर्णय लेने के लिए आगे बढ़ें। श्रवण बाधितों के लिए बाधा मुक्त वातावरण बनाने के लिए हर कोई सांकेतिक भाषा सीखे ।

बोध प्रश्न

टिप्पणीक – नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए ।

ख – इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की मिलान करें ।

प्र 3. बधिर / श्रवण बाधित संस्कृति के लिए प्रौद्योगिकी का महत्व बताइये?

_____

_____

_____

प्र 4. बधिर / श्रवण बाधित संस्कृति के में CODA बारें में लिखिये ?

_____

_____
_____

3.8 सारांश

बधिर /समाज में अन्य लोगों और उनके आस–पास की दुनिया के साथ बधिर /श्रवण बाधित व्यक्तियों की बातचीत मुख्य रूप से सांकेतिक भाषा के रूप में दृश्य–स्थानिक होती है।बधिर / श्रवण बाधित संस्कृति इस दृश्य अभिविन्यास पर आधारित है। बहुत से लोग मानते हैं कि श्रवण बाधित लोगों को एक–दूसरे से अलग करके, बधिर /श्रवण बाधित सांस्कृतिक पहचान विकसित नहीं होगी। यह सच है लेकिन निश्चितता बहुत कम है, क्योंकि वे किसी अन्य श्रवण बाधित व्यक्ति से या तो बेतरतीब ढंग से या उद्देश्यपूर्ण रूप से मिल सकते हैं। इसलिए वे अंततः बधिर संस्कृति के साथ चले जाएँगे। इस संदर्भ में, श्रवण बाधित लोगों के लिए समावेशी और बाधा मुक्त समाज बनाने के लिए बधिर संस्कृति को समझना बहुत महत्वपूर्ण है। बधिर / श्रवण बाधित संस्कृति सामाजिक मान्यताओं, व्यवहार, कला, साहित्यिक परंपराओं, इतिहास, मूल्यों और समुदायों की साझा संस्थाओं का समूह है जो बहरेपन से प्रभावित हैं और जो संचार के मुख्य साधन के रूप में सांकेतिक भाषाओं का उपयोग करते हैं। इस वजह से सांकेतिक भाषा बधिर /श्रवण बाधित संस्कृति में गहराई से शामिल है। आखिरकार, सुनने में सक्षम वाले लोगों के लिए सांकेतिक भाषा सीखना महत्वपूर्ण हो जाता है।

3.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

उ 1. श्रवण बाधित संस्कृति के संदर्भ में बुनियादी जागरूकता की महत्व

श्रवण बाधित समुदाय की एक साझा भाषा और संस्कृति है और आम अनुभव की एक लंबी परंपरा है। बधिर/श्रवण बाधित संस्कृति में विभिन्न प्रकार के सामाजिक, खेल, धार्मिक और राजनीतिक संगठन भी शामिल हैं। समुदाय के श्रवण बाधित सदस्यों में श्रवण बाधित व्यक्ति के रूप में पहचान की मजबूत भावना होती है। वे बहरे होने के साथ साथ घर पर संकेत भाषा के उपयोग करते हुए अन्य श्रवण बाधित लोगों के साथ समानता महसूस करते हैं ।

उ 2. श्रवण बाधित संस्कृति के पहलू

भाषा . बधिर/श्रवण बाधित संस्कृति में सांकेतिक भाषा का प्रयोग एक प्रमुख पहलू हैं, जो हम पहले भी कहते आये हैं और आगे भी कहते रहेंगे। यह जानना महत्वपूर्ण है कि सांकेतिक भाषाओं की अपनी संरचनात्मक और व्याकरणिक संरचना और नियम होते हैं। वे देश की मौखिक भाषा का केवल एक हस्ताक्षरित अनुवादित संस्करण नहीं हैं ।

मूल्य . बधिर/श्रवण बाधित संस्कृति में मूल्य दूसरा प्रमुख पहलू है, सांकेतिक भाषा साहित्य, विरासत और कला के अन्य रूपों और विरासतों को संरक्षित करना आवश्यक है। इसके साथ ही, स्पष्ट संचार को भी बहुत महत्व दिया जाता है।

परंपराएँ . बधिर/श्रवण बाधित संस्कृति में तीसरा प्रमुख पहलू है परंपराएँ, अन्य श्रवण बाधित पीढ़ियों की कहानियां, साझा अनुभव और समुदाय के लिए महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में भाग लेना बधिर संस्कृति में परंपराओं के रूप में बहुत महत्वपूर्ण है।

मानदंड . बधिर/श्रवण बाधित संस्कृति में मानदंड के रुप में संचार शिष्टाचार आवश्यक है। आपको बधिर/श्रवण बाधित के साथ संप्रेषण करने के लिए समय आँख से आँख मिलाने के महत्व, संवाद करने के तरीके तथा लोगों का ध्यान सही ढंग से आकर्षित करने के बारे में जानना होगा। उदाहरण के लिए, किसी को बुलाने का प्रयास करते समय, उसका नाम चिल्लाने के बजाय, उसके कंधे को थपथपाने का प्रयास करें या नाजुक ढंग से लाइटें चालू और बंद करने का प्रयास करें।

पहचान –.बधिर पहचान एक ऐसी अवधारणा है जो बधिरता के सांस्कृतिक दृष्टिकोण से उत्पन्न हुई है जिसमें बधिरता/श्रवण बाधिता को चिकित्सा स्थिति के रूप में नहीं देखा जाता है। जिन बधिरों की बधिर पहचान होती है, उनका सांकेतिक भाषा से गहरा जुड़ाव होता है।बधिर/श्रवण बाधित संस्कृति में बधिर/श्रवण बाधित स्वयं को इस समुदाय के हिस्से के रूप में स्वीकार करना और पहचानना, भाग लेना अपेक्षित करते हैं और वे इसकी संस्कृति पर गर्व करते हैं।

प्र 3. श्रवण बाधित संस्कृति के लिए प्रौद्योगिकी का महत्व

सहायक प्रौद्योगिकी उन लोगों को जीवन में अधिक स्वायत्तता और स्वतंत्रता प्रदान कर सकती है जो श्रवण बाधित समुदाय का हिस्सा हैं। यह उनकी दिव्यांगता और सुनने की कमी को ठीक करने के बारे में ही नहीं है, बल्कि उन्हें समानता के बेहतर मानक के साथ समाज में भाग लेने के लिए आवश्यक उपकरण देने के बारे में होते है।

श्रवण बाधित लोगों द्वारा उपयोग की जाने वाली सहायक तकनीक के मुख्य प्रकार कॉकलियर प्रत्यारोपण, सांकेतिक भाषा अनुवादक, बंद कैप्शन, उपशीर्षक और वीडियो रिले सेवाएं हैं। साथ ही, जो तकनीक लोगों को उनके दैनिक जीवन में मदद करती है उसे श्रवण दिव्यांगता वाले लोगों के लिए भी अनुकूलित किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, अलार्म घड़ियाँ केवल दरवाजे की घंटियों से जुड़ी ध्वनि और प्रकाश चमक पर निर्भर रहने के बजाय दृश्य उत्तेजना प्रदान कर सकती हैं ।

उ 4. श्रवण बाधित संस्कृति में CODA &CODA यह श्रवण बाधित वयस्कों के बच्चे के लिए संक्षिप्त नाम है। यह उन सभी सुनने में सक्षम वाले लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जिनके माता या पिता या यहां तक कि दोनों श्रवण बाधित हो सकती हैं। CODA आमतौर पर श्रवण

बाधित समुदाय का हिस्सा होते हैं। भले ही वे लोग सुनने में सक्षम वाले हो, वे श्रवण बाधित संस्कृति का प्रतीक हैं और श्रवण बाधित हित के लिए बड़े कार्यकर्ता हैं।

3.10 अभ्यास कार्य

प्र0–1 बधिर/श्रवण बाधित संस्कृति के संदर्भ में अल्पसंख्यक दर्जा की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

प्र0–2 बधिर/श्रवण बाधित संस्कृति के जॉच के पहलुओं की सूची विवरण सहित बनाइए।

3.11 चर्चा के बिन्दु

प्र0–2 आपके पाठशाला में बधिर/श्रवण बाधित संस्कृति के प्रभाव के बारें मे चर्चा कीजिए।

3.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- पोलाक, डी. (1985),सीमित श्रवण वाले शिशु और प्रीस्कूलर के लिए शैक्षिक ऑडियोलॉजी (दूसरा संस्करण): स्प्रिंगफील्ड, आईएलः सी.सी. थॉमस प्रकाशन.
- पावर, डी., और लेह, जी. (2004), श्रवण बाधित छात्रों को शिक्षित करना–वैश्विक परिप्रेक्ष्य, वाशिंगटन, डीसीः गैलॉडेट यूनिवर्सिटी प्रेस।
- मूरेस, डोनाल्ड एफ. (1990),बहरेपन के शैक्षिक और विकासात्मक पहलू,गैलॉडेटः यूनिवर्सिटी प्रेस।
- जोन्स, एम. (2002), "संस्कृति के रूप में बहरापनः एक मनोसामाजिक परिप्रेक्ष्य",न्यूयॉर्कः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
- पावर, डी.,और लेह, जी.(2004) श्रवण बाधित छात्रों को शिक्षित करना–वैश्विक परिप्रेक्ष्य, वाशिंगटन, डीसीः गैलॉडेट यूनिवर्सिटी प्रेस।
- पेट्टाला, आर. (2020),श्रवण बाधित बच्चों के लिए पाठ्यचर्या संबंधी पहलू,नई दिल्लीः कनिष्क प्रकाशक।

इकाई 4

भारतीय सांकेतिक भाषा के संबंध में घरेलू माहौल को बेहतर बनाने के साथ–साथ परिवारों के लिए प्रशिक्षण और मार्गदर्शन

इकाई संरचना

4.1 प्रस्तावना

4.2 इकाई के उद्देश्य

4.3 घरेलू वातावरण में भारतीय सांकेतिक भाषा का प्रयोग

4.4 श्रवण बाधित बच्चों के लिए भारतीय सांकेतिक भाषा सीखने के विभिन्न रास्ते

4.5 भारतीय सांकेतिक भाषा के संबंध में घरेलू माहौल को बेहतर बनाना

4.6 पारिवारिक जीवन में सांकेतिक भाषा का प्रयोग

4.7 भारतीय सांकेतिक भाषा के संबंध में परिवारों के लिए प्रशिक्षण और मार्गदर्शन

4.8 सारांश

4.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.10 अभ्यास कार्य

4.11 चर्चा के बिन्दु

4.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.1 प्रस्तावना

कई अंतःक्रियात्मक कारक जैसे बच्चा, स्कूल, संसाधन सहायता, सरकार, मीडिया और समुदाय हर एक बच्चे के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन सभी कारकों में परिवार कम से कम तीन कारणों से सबसे महत्वपूर्ण है। सबसे पहले, परिवार परिवर्तन की किसी भी अन्य एजेंसी की तुलना में बच्चे के साथ अधिक घंटे बिता सकते हैं। दूसरे, बच्चे की बेहतरी की चाहत स्वाभाविक रूप से परिवार द्वारा सबसे अधिक महसूस की जाती है। तीसरा, श्रवण बाधित विद्यार्थी के विशेष संदर्भ में, परिवार सबसे महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे भाषा के विकास के लिए प्राकृतिक वातावरण प्रदान करते हैं। संचार, भाषा और भाषण विकास अनुभव और संदर्भ से निकटता से जुड़े हुए हैं। भाषा के सभी पहलुओं पर कक्षाओं में काम नहीं किया जा सकता। यदि परिवारों को विशेष रूप से श्रवण बाधित छात्रों की आवश्यकताओं के अनुसार भाषा विकसित करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है, तो वे चमत्कार कर सकते हैं। इसलिए हर एक घरेलू वातावरण में भारतीय सांकेतिक भाषा का प्रयोग करने से श्रवण बाधित छात्र अपने संचार, भाषा और भाषण विकास में आगे बढ़ सकता है। इस इकाई में भारतीय सांकेतिक भाषा के संबंध में घरेलू माहौल को बेहतर बनाने के अलग अलग विधियाँ और उनके साथ–साथ परिवारों के लिए भारतीय सांकेतिक भाषा का प्रशिक्षण और मार्गदर्शन के बारें में समझने की कोशिश करेंगें।

4.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप इस योग्य हो जायेगे कि–

- भारतीय सांकेतिक भाषा का घरेलू वातावरण में उपयोग कर सकेगे।
- भारतीय सांकेतिक भाषा का अनुप्रयोग कर सकेगें।
- परिवारों में भारतीय सांकेतिक भाषा के उपयोग प्रारम्भ करने के उपायों को अपना सकेगे।

4.3 घरेलू वातावरण में भारतीय सांकेतिक भाषा का प्रयोग

सुनने में सक्षम वाले बच्चे अपनी शब्दावली का बहुत कुछ ध्वनि वातावरण से संयोगवश सीखते हैं, जबकि वे दूसरों की बातचीत सुनते हैं जिसमें वे बच्चे शामिल नहीं होते। परिवार के सुनने में सक्षम वाले सदस्यों से बात करते समय संकेतों का उपयोग करने से श्रवण बाधित बच्चों को भी उसी तरह संकेत पहचानने में मदद मिल सकती है। यह श्रवण बाधित बच्चों को रोजमर्रा की गतिविधियों के दौरान सांकेतिक भाषा प्रयोग करने की आदत डालने में भी मदद करेगा।

श्रवण बाधित व्यक्ति के लिए भारतीय सांकेतिक भाषा सीखना एक आवश्यकता है। इससे उसे अन्य श्रवण बाधित व्यक्तियों और कई श्रवण बाधित समुदाय से जुड़ने में मदद मिलती है। श्रवण बाधित समुदाय में बहुत भिन्नता है, और उन्हें अलग–अलग उम्र में सांकेतिक भाषा का अनुभव मिलता है। कुछ बच्चे हस्ताक्षर करने वाले श्रवण बाधित माता–पिता से पैदा हो सकते हैं और इसलिए उन्हें

पहले दिन से ही एक समृद्ध सांकेतिक भाषाई वातावरण मिलता है, जबकि कुछ श्रवण बाधित बच्चों को जीवन में काफी देर के बाद सांकेतिक भाषा का अनुभव मिल सकता है। इसी प्रकार, शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों और विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में श्रवण बाधित लोगों द्वारा उपयोग की जाने वाली सांकेतिक भाषा में भी भिन्नता है। आप यह भी सीखेंगे कि बधिरों के अलावा, सुनने में सक्षम वाले लोगों के कुछ समूह भी भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग करते हैं।

घर पर होने वाली कई बातचीत आकस्मिक सीखने के अवसरों से भरी होती हैं, जो किसी में भी समग्र आलोचनात्मक सोच कौशल विकास को प्रेरित करती हैं। जिन परिवारों में सुनने में सक्षम वाले माता–पिता के यहां श्रवण बाधित बच्चे पैदा होते हैं, वहाँ बड़ी संख्या में बच्चे अपने घरों में मौखिक रूप में मातृभाषा का उपयोग करते हैं। इन श्रवण बाधित बच्चों के लिए, अक्सर भाषा बेमेल होती है क्योंकि कई लोग अपनी रोजमर्रा की बातचीत के लिए सांकेतिक भाषा का उपयोग करते हैं। सुनने में सक्षम वाले माता–पिता और उनके श्रवण बाधित बच्चों के बीच भाषाई असमानता, भाषाई और संज्ञानात्मक देरी का कारण बनती है और इस प्रकार बातचीत में लगातार भाग लेने की उनकी क्षमता को प्रभावित करती है। इन घरेलू भाषा परिवेशों में भाषा का बेमेल श्रवण बाधित बच्चों को उस प्रासंगिक जानकारी तक पहुंच से रोकता है जो उनके वैचारिक ज्ञान, या विश्व ज्ञान विकास का एक अभिन्न अंग है। इसलिए, अनेक श्रवण बाधित बच्चों को जीवन में बातचीत करने के लिए लगातार अवसर नहीं मिलते और वे सार्थक संचार अवसरों में पारस्परिक रूप से भाग लेने में असमर्थ हो जाते हैं।

हम जानते हैं कि श्रवण बाधित बच्चों के लिए सुलभ भाषा का शीघ्र परिचय आवश्यक है। एक सुलभ भाषा वह है जिसमें श्रवण बाधित बच्चे उस भाषा में मौजूद जानकारी की पूरी समृद्धि से लाभ उठा सकते हैं। ऐसा कहा गया है कि श्रवण बाधित बच्चे दुनिया को अपनी आंखों से देखते हैं। श्रवण बाधित बच्चों के लिए दृश्य भाषा के रूप में सांकेतिक भाषा पर्यावरण से भाषा सीखने का एक लाभ है, यह भाषा समाज में लोगों तक पहुंच भी प्रदान करती है जो आकस्मिक बातचीत के माध्यम से उनके समग्र वैचारिक ज्ञान के विकास को बढ़ावा देती है। हम अनौपचारिक बातचीत के विभिन्न घटकों को साक्षरता के रूप में देख सकते हैं जैसे पढ़ने/लिखने के बारे में बात करना, बातचीत को बढ़ावा देने के लिए पाठ–आधारित भाषा का उपयोग करना; सांकेतिक भाषा के रूप में भाषा के तौर–तरीके; और परिवार के सदस्यों के साथ बातचीत करना और उनके साथ समय बिताना महत्वपूर्ण है। इन वार्तालापों के माध्यम से, श्रवण बाधित बच्चे बारी लेना, भागीदारी और सहभागिता के बारे में सीखते हैं।

हम यह भी जानते हैं कि घर का वातावरण जटिल और भाषा समृद्ध स्थान है जिसमें भाषा विकास के कई अवसर परिवार के सदस्यों और दोस्तों के साथ विस्तारित भागीदारी और बातचीत से आते हैं। हम जानते हैं कि घर का वातावरण हर विकासशील बच्चे को दुनिया के काम करने के तरीके को समझने का बुनियादी आधार प्रदान करता है। हम यह भी जानते हैं कि बातचीत में पूर्ण भाषा दक्षताओं तक पहुंच होने से श्रवण–बाधित बच्चों के व्यक्तित्व और भाषा में क्षमताओं के बारे में उनकी धारणाओं को आकार देने में मदद मिलती है।

जब परिवार के सदस्य बातचीत में भाग लेने के तरीके का प्रतिमान बनाते हैं, तो उनके श्रवण बाधित बच्चे भी इसी तरह की बातचीत का अनुकरण करके उस प्रतिरूपण से लाभान्वित होते हैं। बातचीत में भाषा के प्रयोग को जानना, सूचना का संप्रेषण करना, उस सूचना को प्राप्त करना, तथा बातचीत शुरू होने पर उस सूचना को अतिरिक्त विवरण के साथ साझा करना, ये सभी बातें घर में साक्षरता के माहौल पर निर्भर हैं, जहां भाषा का प्रयोग सभी द्वारा किया जाता है। वार्तालाप निर्माण की अवधारणा में मचान (स्कैफोल्डिंग) शामिल है, मनोवैज्ञानिक लेव वायगोत्स्की द्वारा विकसित इस अवधारणा के अनुसार, मचान तब बनता है जब ज्ञान रखने वाला एक व्यक्ति (ज्ञाता) होता है और दूसरा व्यक्ति जिसे ज्ञान की आवश्यकता होती है (सीखने वाला) होता है। इस गतिशीलता में, ज्ञाता शिक्षार्थी की विकास प्रक्रिया का समर्थन करता है ताकि शिक्षार्थी बातचीत के बाद उत्पन्न होने वाले विभिन्न संदर्भों में अपने नए ज्ञान को लागू कर सके। बातचीत में भाग लेने से श्रवण बाधित बच्चे के लिए अनुभव–आधारित ज्ञान की नींव तैयार होती है जो उन्हें अपने ज्ञान का विस्तार करने के अवसर मिलने पर निष्कर्ष निकालने की अनुमति देती है।

द्विभाषी घरेलू वातावरण – चूंकि 90 प्रतिशत से अधिक श्रवण बाधित बच्चों के माता–पिता सुनने में सक्षम वाले होते हैं, जिन्हें बहरेपन का कोई पूर्व अनुभव नहीं होता है, ऐसे घरेलू साक्षरता वातावरण में इन बच्चों को मौखिक और सांकेतिक भाषा जैसी दो भाषाओं से अवगत कराया जा सकता है। शोधकर्ताओं ने पाया है कि घरेलू साक्षरता वातावरण (Home Literacy Envrionment) और दूसरी भाषा (Second Language) सीखने की उम्र का एकभाषी बच्चों के भाषा विकास पर बहुत प्रभाव पड़ता है।

घरेलू साक्षरता वातावरण श्रवण बाधित बच्चे की भाषा और पढ़ने के विकास को प्रभावित करता हैं। घरेलू साक्षरता वातावरण में कहानी की किताब पढ़ने का अनुभव, मौखिक बातचीत के लिए बच्चे के अवसर, माता–पिता की साक्षरता शिक्षण गतिविधियाँ और माता–पिता की साक्षरता आदतों को घरेलू साक्षरता सामग्री और अनुभवों के रूप में माना जाता है (पीटर्स, एट अल, 2009) ।

4.4 श्रवण बाधित बच्चों के लिए भारतीय सांकेतिक भाषा सीखने के विभिन्न रास्ते

अगर श्रवण–बाधित बच्चे का जन्म सुनने में सक्षम वाले परिवार में होता है, जिनमें से किसी को भी सांकेतिक भाषा के बारे में जानकारी नहीं होती है, ऐसी स्थिति में श्रवण–बाधित बच्चे को अपने प्रारंभिक जीवन में सांकेतिक भाषा का अनुभव नहीं हो सकता है। उन्हें श्रवण बाधित स्कूल में दाखिला लेने और फिर सांकेतिक भाषा सीखना शुरू करने तक इंतजार करना पड़ता है। उस प्रकार के परिवार के श्रवण बाधित बच्चा बिना किसी सांकेतिक भाषा के अनुभव से सिर्फ मौखिक भाषा के साथ बड़ा हो सकता है, और फिर एक युवा वयस्क के रूप में किसी भी श्रवण बाधित संघ में शामिल हो सकता है। कुछ श्रवण बाधित लोगों को जीवन में बाद में सांकेतिक भाषा से परिचित कराया जाता है। श्रवण बाधित माता–पिता या अन्य श्रवण बाधित रिश्तेदारों के श्रवण बाधित बच्चे जन्म से ही सांकेतिक भाषा सीख ने का मौका मिल सकता हैं।

श्रवण बाधित सांकेतिक भाषा उपयोगकर्ता– भारत में बधिर हस्ताक्षर समुदाय के भीतर सांकेतिक भाषा उपयोगकर्ताओं के विभिन्न समूह हैं।

इसमें ऐसे व्यक्ति शामिल हैं जो बधिर परिवार से हैं जिनके माता–पिता बधिर हैं, या बड़ा भाई–बहन जो बधिर हैं। यह भी संभव है कि परिवार में ऐसे रिश्तेदार हों जो बहरे हों, या शायद कोई पड़ोसी बहरा हो। बधिर बच्चा बहुत कम उम्र से ही सांकेतिक भाषा से परिचित हो जाता है और भारतीय सांकेतिक भाषा का मूल उपयोगकर्ता बन जाता है। सांकेतिक भाषा का उपयोग करने वाले श्रवण बाधित व्यक्तियों का दूसरा सबसे बड़ा समूह वे हैं जो जन्म से या बचपन से ही अत्यधिक बहरे हैं, उनके माता–पिता सुनने में सक्षम होते हैं और सांकेतिक भाषा न सीखने वाले माता–पिता होते है। वे अक्सर श्रवण बाधित स्कूल में दाखिला लेते हैं और उनके मजबूत दृश्य कौशल यह सुनिश्चित करते हैं कि वे स्कूल के माहौल से जल्दी से सांकेतिक भाषा सीखना शुरू कर देंगे। हमारे पास लोगों का एक और उप–समूह है, जो जन्म से ही सुनने में सक्षम होते हैं और अपने प्रारंभिक वर्षों में कुछ समय तक अपनी मौखिक भाषा का प्रयोग करते हैं, तथा उसके बाद वे श्रवण–बाधित हो जाते हैं। कहा जाता है कि उनकी भाषा संबंधी संज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ अच्छी हैं और वे सांकेतिक भाषा में लगभग मूल निवासी की तरह धाराप्रवाह संवाद कर सकते हैं।

श्रवण बाधित सांकेतिक भाषा उपयोगकर्ताओं का एक और समूह है, जो अपने जीवन में बाद में सांकेतिक भाषा सीखते हैं। वे देर से किसी श्रवण बाधित स्कूल में शामिल हो सकते हैं, या शायद उन्होंने मौखिक रूप से स्कूली शिक्षा प्राप्त की है और अंततः स्कूल के बाहर श्रवण बाधित लोगों से मिल सकते हैं। कई कोरणों से, वे किशोरों या युवा वयस्कों के रूप में सांकेतिक भाषा सीखना शुरू करते है। सभी श्रवण बाधित लोगों के अनुभव एक जैसे नहीं होते क्योंकि प्रत्येक श्रवण–बाधित व्यक्ति अलग होता है। और उसकी ज़रूरतें भी अलग–अलग हो सकती हैं ।

श्रवण हस्ताक्षरकर्ता यानी सुनने में सक्षम वाले लोग जो सांकेतिक भाषा उपयोगकर्ता श्रवण हस्ताक्षरकर्ता समूह में कई नीचे बताया गया उप–समूह शामिल हैं–

- श्रवण बाधित बच्चों के माता–पिता (यदि वे कुछ भारतीय सांकेतिक भाषा का प्रशिक्षण लेने के बाद सांकेतिक भाषा का उपयोग करना शुरू करते हैं)

- भारतीय सांकेतिक भाषा समुदाय से जुड़े गैर–सरकारी संगठनों, महाविद्यालय और अन्य संस्थानों के लोग

- श्रवण बाधित वयस्कों के सुनने वाले बच्चे (CODA) – वे अपनी पहली भाषा के रूप में सांकेतिक भाषा सीखते हैं और खुद को गहरे श्रवण बाधित समुदाय से जुड़े लोगों के रूप में पहचानते हैं ।

- सांकेतिक भाषा दुभाषिए (कुछ दुभाषिए CODA भी होते हैं)

- श्रवण बाधित व्यक्ति के कुछ दोस्त, रिश्तेदार, पड़ोसी भी भारतीय सांकेतिक भाषा में देशी प्रवाह विकसित कर लेते हैं ।

सांकेतिक भाषा समुदाय बड़ा और विविध है, जिसमें अपनी आवश्यकताओं और अपेक्षाओं के आधार पर अनेक उपयोगकर्ता हैं। भारत में सटीक आँकड़ों की अनुपलब्धता के कारण भारतीय सांकेतिक भाषा उपयोगकर्ताओं की सही संख्या जानना कठिन है ।

श्रवण बाधित वयस्कों के सुनने वाले बच्चे (CODA) – CODA उन सुनने में सक्षम वाले बच्चों को संदर्भित करते हैं जो श्रवण बाधित माता–पिता से पैदा हुए हैं। यह ज्ञात है कि 90 प्रतिशत से अधिक श्रवण बाधित वयस्कों के बच्चे सुनने में सक्षम वाले होते हैं। बहरे और सुनने की दुनिया के बीच अद्वितीय अंतर के कारण ये बच्चे अक्सर संचार, सामाजिक और सांस्कृतिक चुनौतियों का अनुभव करते हैं। जिस समाज में वे रहते हैं वहां CODA को आमतौर पर माता–पिता बहरा कहा जाता है। ये बच्चे अनोखी परिस्थितियों में बड़े होते हैं जहां उन्हें लगातार दो सांस्कृतिक, सामाजिक और भाषाई रूप से अलग–अलग समुदायों, अर्थात् श्रवण बाधित समुदाय और सुनने में सक्षम वाले समुदाय, के संपर्क में रहना पड़ता है। कार्यात्मक श्रवण प्रणाली होने के बावजूद, वे सांस्कृतिक रूप से बहरे होने की अस्पष्टता का अनुभव करते हैं।

CODA के जीवन में संचार प्रमुख चुनौतियों में से एक है। अधिकांश श्रवण बाधित लोग संवाद करने के लिए सांकेतिक भाषा का उपयोग करते हैं। इस प्रकार, उनके सुनने में सक्षम वाले बच्चे भी अपने माता–पिता से संप्रेषण करते हुए स्वाभाविक तरीके से सांकेतिक भाषा सीखते हैं, जैसे सुनने में सक्षम वाले बच्चें आसानी से अपने सुनने में सक्षम वाले माता–पिता से बोली जाने वाली भाषा सीखते हैं। सांकेतिक भाषा के अलावा, सीओडीए अपने जीवन में श्रवण समुदाय के संपर्क में आने पर बोली जाने वाली मौखिक भाषा भी सीखते हैं। यह इन बच्चों को द्विभाषी और द्विसांस्कृतिक बनाता है। हालाँकि, कुछ मामलों में, श्रवण बाधित माता–पिता अपने सुनने वाले बच्चों के साथ सांकेतिक भाषा के माध्यम से संवाद नहीं करना चुनते हैं। इसके बजाय वे बोलचाल की भाषा का उपयोग करना पसंद करते हैं। इससे माता–पिता–बच्चे का संचार प्रतिबंधित हो सकता है, बोली जाने वाली मौखिक भाषा की अनुचित सीख हो सकती है और सांकेतिक भाषा के बारे में ज्ञान की कमी हो सकती है। यहाँ अलग अलग कारणों की वजह से हो सकती है ।

CODA अक्सर श्रवण बाधित और सुनने में सक्षम वाले समुदाय के बीच की दूरी को पाटता है। वे अपने परिवारों के लिए दुभाषिया या संचारक के रूप में कार्य करते हैं। वे अपने माता–पिता को श्रवण समुदाय की संस्कृति को समझने में भी मदद करते हैं। यह अतिरिक्त जिम्मेदारी उन्हें परिपक्व और स्वतंत्र बनने तथा अपने माता–पिता के साथ घनिष्ठ संबंध बनाए रखने में मदद करती है। CODA द्वारा संचारकों के रूप में एकत्र किए गए अनुभव दूसरों से मेलजोल और सहानुभूति रखने की उनकी क्षमता बनाने में मदद करते हैं। वे सामाजिक रूप से भी अधिक जिम्मेदार महसूस करते हैं और विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों को सीखने का आनंद लेते हैं। उपलब्ध साहित्य के अनुसार, सीओडीए जो श्रवण समुदाय को स्वतंत्र रूप से समझना सीखते हैं, उनमें अनुकूलनशीलता,

संसाधनशीलता, जिज्ञासा और सांसारिकता सहित कई सकारात्मक व्यवहार विकसित होते हैं। दुभाषियों के रूप में सीओडीए का उपयोग करने के कुछ प्रमुख नुकसान अनुचित या पक्षपातपूर्ण संचार और श्रवण बाधित माता–पिता के निजता के अधिकार का उल्लंघन हैं। यदि माता–पिता की भूमिका को ठीक से नहीं समझा गया और व्याख्याओं को उचित संदर्भों में नहीं रखा गया, तो इससे पालन–पोषण या माता–पिता–बच्चे की भूमिका में उलटफेर हो सकता है ।

कई मामलों में, घर पर मौखिक संचार की कमी के कारण सीओडीए को बोली जाने वाली मौखिक भाषा में देरी का अनुभव होता है। वे अक्सर बोली जाने वाली भाषा सीखने के लिए परिवार के अन्य सुनने में सक्षम वाले सदस्यों की मदद लेते हैं। कुछ CODA तो बोली जाने वाली भाषा के स्थान पर सांकेतिक भाषा का उपयोग करना पसंद करते हैं, और कुछ स्वयं को देर से बोलने वाले के रूप में पहचानते हैं ।

माता–पिता के बहरेपन को अस्वीकार करना CODA द्वारा आमतौर पर अनुभव की जाने वाली एक और समस्या है। उनमें शर्मिंदगी, लज्जा और कलंक की भावनाएँ विकसित होने लगती हैं। श्रवण बाधित माता–पिता पर पूर्ण निर्भरता के कारण CODA को अपने स्वयं के जीवन के लिए घर से बाहर निकलना कठिन हो जाता है। CODA के छात्र शैक्षिक उद्देश्यों के लिए अधिकतर अपने श्रवण बाधित परिवार के सदस्यों और मित्रों पर निर्भर रहते हैं। उनके श्रवण बाधित माता–पिता अपने बच्चों की शैक्षिक प्रगति के बारे में जानकारी पाने के लिए कभी–कभी विद्यालय की बैठकों में भाग लेते हैं। यह तथ्य CODA के जीवन पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव डालता है ।

विद्यालय में CODA के माता–पिता की अनुपस्थिति को शिक्षकों द्वारा सकारात्मक रूप से से देखा जाता है, क्योंकि वे CODA के बच्चों के जीवन की कठिनाइयों को समझते हैं और स्कूल की गतिविधियों में उनकी मदद करने का प्रयास करते हैं । इसी तरह का समर्थन CODA को अपने सुनने में सक्षम वाले साथियों से भी मिलता है । हालाँकि, CODA कभी–कभी विद्यालय में विशेष ध्यान पाने के लिए या विद्यालय के मुद्दों पर अपने माता–पिता को दरकिनार करने के लिए स्थिति का फायदा उठाता है । ये तथ्य उनके माता–पिता के प्रति CODA के सत्तावादी रवैये को दर्शाते हैं । CODA अपने द्विभाषी, द्विविध और द्विसांस्कृतिक जीवन अनुभवों के माध्यम से सकारात्मक और नकारात्मक दोनों विशेषताओं का विकास करते हैं ।

बधिर/श्रवण बाधित वयस्क का भाई–बहन या बधिर/श्रवण बाधित वयस्क का जीवनसाथी (SODA) – यह शब्द सुनने में सक्षम वाले भाई–बहनों को संदर्भित करता है जो एक या अधिक श्रवण बाधित भाई–बहनों के साथ बड़े हुए (या उनके साथ बड़े हो रहे हैं) । कभी कभी (SpODA) बधिर वयस्कों के जीवनसाथी को संदर्भित करता है।

बधिर/श्रवण बाधित दादा–दादी के बधिर/श्रवण बाधित और सुनने में सक्षम वाले पोते–पोतियां (GODA) यह एक आमतौर पर इस्तेमाल नहीं किया जाने वाला शब्द है, एक या दो बधिर / श्रवण बाधित दादा–दादी के बहरे और सुनने में सक्षम वाले पोते–पोतियां होते हैं।

बधिर/श्रवण बाधित परिवार का बधिर/श्रवण बाधित (DODA) – सीधे शब्दों में कहें तो बधिर /श्रवण बाधित परिवार। एक या दो बधिर /श्रवण बाधित वयस्कों से पैदा हुए और उनके द्वारा पाले गए बधिर/श्रवण बाधित और कम सुनने वाले बच्चे। जन्म से, DODA आम तौर पर बधिर /श्रवण बाधित समुदाय के सदस्य होते हैं, पहली भाषा के रूप में सांकेतिक भाषा प्राप्त करते हैं और बधिर/श्रवण बाधित संस्कृति में रचे–बसे होते हैं।

4.5 भारतीय सांकेतिक भाषा के संबंध में घरेलू माहौल को बेहतर बनाना

आई. एस. एल. एक सांकेतिक भाषा है जिसका उपयोग आमतौर पर दोनों हाथों से किया जाता है। आई. एस. एल को हिंदी में भारतीय सांकेतिक भाषा नाम से जाना जाता है। भारतीय सांकेतिक भाषा दोनों हाथों से किया जाता है, जबकि अन्य सांकेतिक भाषाएँ जैसे ए. एस. एल. (अमेरिकी सांकेतिक भाषा) और बी. एस. एल. (ब्रिटिश सांकेतिक भाषा) का उपयोग आमतौर पर एक हाथ से किया जाता है। इसलिए, उन प्रकार के संकेतों को सटीक रूप से वर्गीकृत करना और उनकी पहचान करना चुनौतीपूर्ण होता है। जिन व्यक्तियों को सुनने में कठिनाई होती है या वे मूक होते हैं, वे संकेत भाषा के रूप में जानी जाने वाली तकनीक का उपयोग करके अपने हाथों से संवाद करते हैं। जिन लोगों को सुनने में कठिनाई होती है या बोलने में परेशानी होती है, या उनके लिए संचार का सबसे महत्वपूर्ण रूप सांकेतिक भाषा होता है। चूँकि भारतीय सांकेतिक भाषा एक अशाब्दिक पत्राचार बोली है जो एक संकेत बनाने के लिए हाथों जैसे शरीर के विभिन्न अंगों का उपयोग करती है, इसलिए यह ध्वनि पैटर्न के बजाय केवल दृश्य संचारित पैटर्न का उपयोग करती है ।

परिवार और भारतीय सांकेतिक भाषा (आईएसएल)

परिवारों के लिए सांकेतिक भाषा प्रशिक्षण और मार्गदर्शन – श्रवण बाधितों के परिवार के सदस्यों के बीच भारतीय सांकेतिक भाषा के बारे में जागरूकता पैदा करना बहुत महत्वपूर्ण है। श्रवण बाधित बच्चों के लिए सांकेतिक भाषा की आवश्यकता और उनके तात्कालिक वातावरण में समायोजन को समझाना भी माता–पिता के लिए आवश्यक है। श्रवण बाधित बच्चों के भविष्य के लिए सांकेतिक भाषा के उपयोग और उद्देश्य के बारे में माता–पिता को बेहतर समझ प्रदान करने के लिए अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की जरुरत है। परिवार के हर सदस्य को श्रवण बाधित बच्चे के संचार के लिए सांकेतिक भाषा की आवश्यकता को समझना चाहिए। सभी परिवार के सदस्यों को भी सांकेतिक भाषा का प्रशिक्षण दिया जाना आवश्यक है ।

घरेलू वातावरण और भारतीय सांकेतिक भाषा (आईएसएल) – माता–पिता, भाई–बहन या कोई अन्य पारिवारिक सदस्य जो श्रवण बाधित बच्चे की देखभाल कर रहा है, प्राथमिक रूप से जिम्मेदार सदस्य है, उसे पता होना चाहिए कि श्रवण बाधित बच्चे की संवादात्मक भाषा सांकेतिक भाषा होता है। सभी परिवार के सदस्यों को बच्चे की संचार संबंधी ज़रूरतों को जानना चाहिए और समझने की कोशिश करनी चाहिए। उन परिवार के सदस्यों को संचार की कमी को पूरा करने के लिए श्रवण बाधित बच्चों की संचार प्रक्रिया में अल्पकालिक/दीर्घकालिक सांकेतिक भाषा प्रशिक्षण सहायता प्राप्त

करनी चाहिए। घर का वातावरण श्रवण बाधित बच्चे के लिए सुलभ होना चाहिए तथा परिवार का प्रत्येक सदस्य सांकेतिक भाषा का प्रयोग कर सके।

वर्तमान परिदृश्य में परिवारों को भारतीय सांकेतिक भाषा (आईएसएल) सिखाने के लिए प्रभावी शिक्षण और संचार सुनिश्चित करने के लिए विशिष्ट रणनीतियों की आवश्यकता है। परिवारों के लिए प्रशिक्षण और मार्गदर्शन तथा घरेलू वातावरण को व्यवस्थित करने के लिए यहां कुछ रणनीतियाँ दी गई हैं:–

ऑनलाइन संसाधन :– वेबसाइट, वीडियो और मोबाइल एप्लिकेशन जैसे ऑनलाइन संसाधनों का उपयोग करें जो भारतीय सांकेतिक भाषा पाठ और ट्यूटोरियल प्रदान करते हैं। ये संसाधन परिवारों को भारतीय सांकेतिक भाषा की मूल बातें सीखने और उनके संकेतों कौशल में सुधार करने में मदद कर सकते हैं।

आभासी कक्षाएँ :– आभासी कक्षाएँ या वेबिनार आयोजित करें जहाँ परिवार योग्य प्रशिक्षकों से भारतीय सांकेतिक भाषा सीख सकें। ये कक्षाएं इंटरैक्टिव शिक्षण अनुभव प्रदान कर सकती हैं और परिवारों को दूसरों के साथ संकेतों करने का अभ्यास करने की अनुमति दे सकती हैं ।

संरचित पाठ्यक्रम :– शब्दावली, व्याकरण और वाक्य निर्माण सहित भारतीय सांकेतिक भाषा के विभिन्न पहलुओं को शामिल करते हुए एक संरचित पाठ्यक्रम विकसित कर सकते है । यह पाठ्यक्रम परिवारों को उनकी सीखने की प्रशिक्षण में मार्गदर्शन कर सकता है और व्यवस्थित प्रगति सुनिश्चित कर सकता है ।

अभ्यास सत्र :– परिवारों को भारतीय सांकेतिक भाषा नियमित अभ्यास सत्र आयोजित करने के लिए प्रोत्साहित करें जहां वे एक–दूसरे के साथ संकेतों करने का अभ्यास कर सकेंगें। ये सत्र प्रवाह को बेहतर बनाने और सीखने को सुदृढ़ करने में मदद कर सकते हैं।

सहकर्मी समर्थन :– सहकर्मी सहायता समूहों या ऑनलाइन समुदायों की सुविधा प्रदान करें जहां भारतीय सांकेतिक भाषा सीखने वाले परिवार एक–दूसरे से जुड़ सकें। यह अनुभव साझा करने, प्रश्न पूछने और दूसरों के साथ संकेतों करने का अभ्यास करने के लिए एक मंच प्रदान करता है ।

दृश्य सामग्री :– भारतीय सांकेतिक भाषा सीखने में सहायता करने और शब्दावली को सुदृढ़ करने के लिए फ्लैशकार्ड, पोस्टर और चार्ट जैसे दृश्य सामग्री का उपयोग करें।भारतीय सांकेतिक भाषा सीखने का एक गहन अनुभव बनाने के लिए इन दृश्य सामग्रियों को घरेलू वातावरण में प्रदर्शित किया जा सकता है।

समावेशी वातावरण :– भारतीय सांकेतिक भाषा को दैनिक दिनचर्या और गतिविधियों में शामिल करके घर पर एक समावेशी वातावरण भी बना सकते हैं। निरंतर अभ्यास और एकीकरण को बढ़ावा देने के लिए परिवार के सदस्यों को बातचीत, भोजन और खेल के दौरान भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना है ।

प्रतिक्रिया और मूल्यांकन :– परिवारों को उनकी भारतीय सांकेतिक भाषा की प्रगति पर नज़र रखने और सुधार के क्षेत्रों की पहचान करने के लिए नियमित प्रतिक्रिया और मूल्यांकन प्रदान करना होगा। यह वीडियो रिकॉर्डिंग, ऑनलाइन क्विज़ या इंटरैक्टिव अभ्यास के माध्यम से किया जा सकता है ।

व्यावसायिक सहायता :– भारतीय सांकेतिक भाषा दुभाषियों या शिक्षकों जैसे पेशेवरों के साथ सहयोग करें, जो भारतीय सांकेतिक भाषा (आईएसएल) सीखने वाले परिवारों को मार्गदर्शन और सहायता प्रदान कर सकते हैं। ये पेशेवर व्यक्तिगत प्रतिक्रिया दे सकते हैं और विशिष्ट भारतीय सांकेतिक भाषा सीखने की जरूरतों को संबोधित कर सकते हैं।

सांस्कृतिक संवेदनशीलता :– भारतीय सांकेतिक भाषा सीखते समय सांस्कृतिक संवेदनशीलता के महत्व पर जोर देना चाहिए। सम्मानजनक और समावेशी बातचीत सुनिश्चित करने के लिए परिवारों को श्रवण बाधित संस्कृति, शिष्टाचार और उचित संचार प्रथाओं के बारे में सिखाना होगा।

इन रणनीतियों को लागू करके, परिवार भारतीय सांकेतिक भाषा सीखने में प्रभावी प्रशिक्षण और मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं और भारतीय सांकेतिक भाषा (आईएसएल) के अभ्यास और उपयोग के लिए एक सहायक घरेलू वातावरण बना सकते हैं ।

बोध प्रश्न

टिप्पणीक – नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए ।

ख – इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की मिलान करें ।

प्र 1. श्रवण बाधित वयस्कों के सुनने में सक्षम वाले बच्चे (CODA) के बारें में बताइये?

_____

_____

_____

प्र 2. परिवारों को भारतीय सांकेतिक भाषा सिखाने के लिए प्रभावी शिक्षण विशिष्ट रणनीतियाँ बताइये?

_____

_____

_____

4.6 पारिवारिक जीवन में सांकेतिक भाषा का प्रयोग

सुनने में सक्षम वाले बच्चे संयोगवश अपनी बहुत सारी शब्दावली सीख जाते हैं, जबकि बातचीत सुनने में वे बच्चे शामिल नहीं होते। परिवार के सुनने में सक्षम वाले सदस्यों से बात करते समय संकेतों का उपयोग करने से श्रवण बाधित बच्चों को भी उसी तरह संकेत पहचानने में मदद मिल सकती है। यह आपको रोजमर्रा की गतिविधियों के दौरान सांकेतिक भाषा का उपयोग करने की आदत डालने में भी मदद करेगा।

भोजन का समय पूरे परिवार को एक साथ मिलकर हस्ताक्षर कौशल का अभ्यास करने का एक अच्छा समय है। परिवार के सदस्य प्रत्येक व्यक्ति की थाली में भोजन के बारे में हस्ताक्षर कर सकते हैं, हर कोई क्या खाना पसंद करता है और क्या पसंद नहीं करता है, या आपने उस दिन क्या किया है जैसा किसी उदाहरण से हस्ताक्षर कर सकते हैं ।

इसके अलावा, श्रवण बाधित बच्चों को सामाजिक मेलजोल में भाग लेने का तरीका भी भारतीय सांकेतिक भाषा प्रदान कर सकती है। जो बच्चे बोली जाने वाली मौखिक भाषा सुनने में असमर्थ हैं, उन्हें सामाजिक गतिविधियों में शामिल होने और अपने साथियों के साथ संबंध बनाने में कठिनाई हो सकती है। हालाँकि, भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग इस अंतर को पाटने में मदद कर सकता है, क्योंकि यह बच्चों को दूसरों के साथ संवाद करने और सामाजिक बातचीत में भाग लेने की अनुमति देता है। भारतीय सांकेतिक भाषा सामाजिक कौशल के विकास के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो सकता है, क्योंकि सामाजिक संपर्क भाषा कौशल के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारतीय सांकेतिक भाषा का एक अन्य लाभ यह है कि यह श्रवण बाधित बच्चों में संज्ञानात्मक विकास को बेहतर बनाने में मदद कर सकता है। भारतीय सांकेतिक भाषा के उपयोग के लिए दृष्टि, स्पर्श और प्रोप्रियोसेप्शन सहित कई इंद्रियों के उपयोग की आवश्यकता होती है, जो संज्ञानात्मक विकास को प्रोत्साहित करने में मदद कर सकती है। भारतीय सांकेतिक भाषा की दृश्य प्रकृति भी याददाश्त में सुधार करने में मदद कर सकती है, क्योंकि बच्चे संकेतों को विशिष्ट अर्थों के साथ जोड़ने में सक्षम होते हैं। यह श्रवण बाधित वाले बच्चों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो सकता है, क्योंकि उन्हें केवल भाषण के माध्यम से संप्रेषित जानकारी को बनाए रखने में कठिनाई हो सकती है।

अंत में, भारतीय सांकेतिक भाषा श्रवण बाधित वाले बच्चों को सूचना और संचार तक पहुंच बढ़ाने की सुविधा भी प्रदान कर सकती है। जो बच्चे बोली जाने वाली भाषा सुनने में असमर्थ होते हैं, उन्हें कक्षा में, घर पर या अन्य वातावरण में क्या कहा जा रहा है यह समझने में कठिनाई हो सकती है। भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग इस अंतर को पाटने में मदद कर सकता है, क्योंकि यह संचार का एक दृश्य तरीका प्रदान करता है जिसका उपयोग विभिन्न परिस्थितियों में किया जा सकता है। इससे यह सुनिश्चित करने में मदद मिल सकती है कि श्रवण बाधित वाले बच्चे अपनी सुनने की क्षमता की परवाह किए बिना जानकारी तक पहुंचने और दूसरों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करने में सक्षम हैं।

4.7 भारतीय सांकेतिक भाषा के संबंध में परिवारों के लिए प्रशिक्षण और मार्गदर्शन

रोज़मर्रा की गतिविधियों के दौरान भारतीय सांकेतिक भाषा के मुख्य शब्दों का उपयोग, अभ्यास करने और नए संकेतों से परिचित कराने का एक शानदार तरीका है। जब परिवार के सदस्य भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग करते हैं, तो अपने बच्चे के आसपास के लोगों, जैसे परिवार के सदस्यों और दोस्तों को भी भारतीय सांकेतिक भाषा का पालन करने के लिए प्रोत्साहित करें। इससे

श्रवण बाधित बच्चे को दूसरों के साथ संवाद करने में अधिक आत्मविश्वास महसूस करने में मदद मिलेगी।

भले ही परिवार के सदस्य श्रवण बाधित बच्चे को भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग नहीं कर रहे हों, परिवार के अन्य सदस्यों के साथ संकेतों का उपयोग करने से उन्हें सीखने में मदद मिल सकती है। सुनने में सक्षम बच्चे संयोगवश अपनी बहुत सारी शब्दावली सीख जाते हैं, जबकि बातचीत सुनने में जिसमें वे शामिल नहीं होते। परिवार के सुनने में सक्षम वाले सदस्यों से बात करते समय संकेतों का उपयोग करने से श्रवण बाधित बच्चों को भी उसी तरह संकेत पहचानने में मदद मिल सकती है। यह उनको रोजमर्रा की गतिविधियों के दौरान सांकेतिक भाषा की आदत डालने में भी मदद करेगा।

सांकेतिक भाषा का उपयोग परिवार में शुरू करने के लिए कुछ उपाय

अपने भोजन के समय को श्रवण बाधित–अनुकूल बनाने के लिए इन युक्तियों का उपयोग कर सकते है

- अपने श्रवण बाधित बच्चे को ऐसी जगह रखें जहाँ वह पूरे परिवार को देख सके। यदि संभव हो, तो चौकोर मेज के बजाय गोल खाने की मेज पर बैठने का मतलब है कि हर किसी को प्रत्येक व्यक्ति के चेहरे और हाथों का अच्छा दृश्य दिखाई देगा। यदि आपकी मेज आयताकार है, तो अपने श्रवण बाधित बच्चे को मेज के अंत में बैठाने से उन्हें सभी को देखने में मदद मिलेगी ।

- प्रत्येक भोजन के लिए एक ही सीट पर बैठने से बातचीत पर नज़र रखना आसान हो सकता है।

- अपना पूरा मुँह भरकर या अपने हाथों से अपना मुँह ढँककर बात नहीं करना चाहिए।

- किसी नए विषय पर चर्चा शुरू करने से पहले अपने श्रवण बाधित बच्चे का ध्यान आकर्षित करें, ताकि यदि वे चाहें तो वे इसमें शामिल होना चुन सकेंगें। आप मेज को थपथपा सकते हैं, अपना हाथ हिला सकते हैं या अपने बच्चे की बांह को छू भी सकते हैं।

- भले ही आपका बच्चा बातचीत में शामिल नहीं होना चाहता हो, भोजन के दौरान संकेतों का उपयोग करना जारी रखें। इसका मतलब यह है कि आपका बच्चा जब चाहे तब इसमें शामिल हो सकता है।

खेल का समय आपको नए संकेतों और अवधारणाओं को पेश करने के बहुत सारे अवसर देता है। यहां कुछ सलाह हैं :–

- प्रत्येक खिलौने, किताब या खेल को उठाते समय उसके नाम पर हस्ताक्षर करें।

- जब आप एक साथ खेल रहे हों, तो सुनिश्चित करें कि आपका बच्चा आपके चेहरे के साथ–साथ आपके हाथों को भी देख सके।

- वास्तविक जीवन की स्थितियों पर चर्चा करने के लिए रोल–प्लेइंग गेम्स का उपयोग करें, जैसे सड़क पार करना या किसी दुकान में वस्तुओं के लिए भुगतान करना।

- चेहरे के भावों को बढ़ा–चढ़ाकर बताने से छोटे श्रवण बाधित बच्चों को भावनाओं को समझने में उसी तरह मदद मिलती है, जैसे सुनने वाले बच्चे के साथ खेलते समय आप अपनी आवाज के स्वर या पिच को बढ़ा–चढ़ाकर बता सकते हैं।

- हैंडशेप या फिंगरस्पेलिंग जैसी चीजों का अभ्यास करने के लिए साइनिंग गेम खेलें। उदाहरण के लिए, आप प्रत्येक व्यक्ति को एक संकेत के बारे में सोचने के लिए कह सकते हैं जो नुकीली तर्जनी का उपयोग करता है, जैसे कौन, पिज्जा या अगले सप्ताह।

- उन खेलों में साइन इन करना शामिल करें जिन्हें आप पहले से ही एक परिवार के रूप में खेलते हैं। उदाहरण के लिए, आप फिंगरस्पेलिंग का उपयोग करके आई स्पाई खेल सकते हैं।

हर किसी से भावनाओं के बारे में बात करना

- जिस प्रकार हमें यह समझाने में सक्षम होने की आवश्यकता है कि हम कहाँ हैं, हम क्या कर रहे हैं और हम क्या चाहते हैं, उसी प्रकार हमें यह समझाने में भी सक्षम होना चाहिए कि हम कैसा महसूस करते हैं। हमारी भावनाओं और दूसरों की भावनाओं को समझने और पहचानने से हमें भावनाओं को प्रबंधित करने, सहानुभूति विकसित करने और समस्या–समाधान कौशल विकसित करने में मदद मिलती है।

- इससे पहले कि हम दूसरों को बता सकें कि हम कैसा महसूस करते हैं, हमें उन भावनाओं को लेबल करने के लिए शब्दावली की आवश्यकता है। विभिन्न भावनाओं के संकेतों को सीखने से श्रवण बाधित बच्चों को अपनी भावनाओं को समझने और उन्हें स्वस्थ तरीके से संसाधित करने में मदद मिलती है।

- अपनी भावनाओं और दूसरों की भावनाओं पर हस्ताक्षर करने की आदत डालने का प्रयास करें।

अन्य चीजों के बारे में

जब आप श्रवण बाधित हों और आसपास हों तो हस्ताक्षर करना याद रखना कठिन हो सकता है, खासकर यदि आप गाड़ी चला रहे हों, पुशचेयर चला रहे हों, ट्रैफ़िक की तलाश कर रहे हों या मानचित्र का अनुसरण करने का प्रयास कर रहे हों। यहां कुछ समय हैं जब आप हस्ताक्षर करने के लिए समय निकालने में सक्षम हो सकते हैं।

- अपने बच्चे को जितना हो सके पहले से बताएं कि आप कहां जा रहे हैं, ताकि वे किसी स्थान या कार्यक्रम में जाते समय जानकारी समझाने के लिए आप पर निर्भर न रहें, खासकर यदि आप वहां गाड़ी से जा रहे हों।

- अपने बच्चे को आप जहाँ जा रहे हैं उसकी तस्वीरें दिखाएँ ताकि वे जान सकें कि यह कैसा दिखेगा।

- अपने बच्चे को यात्रा के लिए तैयार होने और सामान पैक करने में शामिल करें ताकि उन्हें पता चल सके कि क्या होगा, और समझाएं कि आपको कुछ चीज़ों की आवश्यकता क्यों है जो आप ले जा रहे हैं। यह उन संकेतों का अभ्यास करने का एक शानदार अवसर हो सकता है जिनका आप अक्सर उपयोग नहीं करते हैं, जैसे दूरबीन या समुद्रतट

- यदि आप सार्वजनिक परिवहन का उपयोग कर रहे हैं, तो जाने से पहले और फिर यात्रा करते समय परिवहन के साधन के संकेत का अभ्यास करें। इससे चिन्ह को वाहन के साथ जोड़ने में मदद मिलती है।

- चर्च, नदी या टेस्को जैसे स्थानीय स्थलों को इंगित करने के लिए संकेतों का उपयोग करें।

- जब आप किसी नई जगह पर जाते हैं, तो बाहर जाते समय ढेर सारी तस्वीरें लें ताकि आप उन्हें देख सकें और बाद में अपनी यात्रा के बारे में बात कर सकें। यदि आप दोबारा उसी स्थान पर जाते हैं तो ये दृश्य अनुस्मारक के रूप में काम कर सकते हैं।

बोध प्रश्न

टिप्पणीक – नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए ।

ख – इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की मिलान करें ।

प्र 3. बधिर / श्रवण बाधित दादा–दादी के बधिर /श्रवण बाधित और सुनने में सक्षम वाले पोते–पोतियां (GODA) के बारें में बताइये?

_____

_____

_____

प्र 4. परिवारों में भोजन के समय को बधिर /श्रवण बाधित –अनुकूल बनाने के लिए किन युक्तियों का उपयोग कैसे करनी है?

_____

_____

_____

4.8 सारांश

रोज़मर्रा की गतिविधियों के दौरान भारतीय सांकेतिक भाषा के मुख्य शब्दों का उपयोग, अभ्यास करने और नए संकेतों से परिचित कराना आवश्यक है। जब परिवार के सदस्य भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग करते हैं, तो अपने बच्चे के आसपास के लोगों, जैसे परिवार के सदस्यों और दोस्तों को भी भारतीय सांकेतिक भाषा का पालन करने के लिए प्रोत्साहित करना होगा। इससे श्रवण बाधित बच्चे को दूसरों के साथ संवाद करने में अधिक आत्मविश्वास महसूस करने में मदद मिलेगी। परिवार के सुनने में सक्षम वाले सदस्यों से बात करते समय संकेतों का उपयोग करने से श्रवण बाधित बच्चों को भी उसी तरह संकेत पहचानने में मदद मिल सकती है। यह उनको रोजमर्रा की गतिविधियों के दौरान सांकेतिक भाषा की आदत डालने में भी मदद करेगा। वर्तमान परिदृश्य में परिवारों को भारतीय सांकेतिक भाषा (आईएसएल) सिखाने के लिए प्रभावी शिक्षण और संचार सुनिश्चित करने के लिए विशिष्ट रणनीतियों की आवश्यकता है। ऊपर चर्चा की गई रणनीतियाँ परिवारों के लिए प्रशिक्षण और मार्गदर्शन और घरेलू वातावरण को व्यवस्थित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

4.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

उ 1. श्रवण बाधित वयस्कों के सुनने वाले बच्चे (CODA) – CODA उन सुनने में सक्षम वाले बच्चों को संदर्भित करते हैं जो श्रवण बाधित माता–पिता से पैदा हुए हैं। यह ज्ञात है कि 90 प्रतिशत से अधिक श्रवण बाधित वयस्कों के बच्चे सुनने में सक्षम वाले होते हैं। बहरे और सुनने की दुनिया के बीच अद्वितीय अंतर के कारण ये बच्चे अक्सर संचार, सामाजिक और

सांस्कृतिक चुनौतियों का अनुभव करते हैं। जिस समाज में वे रहते हैं वहां CODA को आमतौर पर"माता–पिता बहरा" कहा जाता है। ये बच्चे अनोखी परिस्थितियों में बड़े होते हैं जहां उन्हें लगातार दो सांस्कृतिक, सामाजिक और भाषाई रूप से अलग–अलग समुदायों, अर्थात् श्रवण बाधित समुदाय और सुनने में सक्षम वाले समुदाय, के संपर्क में रहना पड़ता है। कार्यात्मक श्रवण प्रणाली होने के बावजूद, वे सांस्कृतिक रूप से बहरे होने की अस्पष्टता का अनुभव करते हैं।

उ 2. परिवारों को भारतीय सांकेतिक भाषा सिखाने के लिए प्रभावी शिक्षण विशिष्ट रणनीतियाँ

आभासी कक्षाएँः– आभासी कक्षाएँ या वेबिनार आयोजित करें जहाँ परिवार योग्य प्रशिक्षकों से भारतीय सांकेतिक भाषा सीख सकें। ये कक्षाएं इंटरैक्टिव शिक्षण अनुभव प्रदान कर सकती हैं और परिवारों को दूसरों के साथ संकेतों करने का अभ्यास करने की अनुमति दे सकती हैं ।

संरचित पाठ्यक्रमः– शब्दावली, व्याकरण और वाक्य निर्माण सहित भारतीय सांकेतिक भाषा के विभिन्न पहलुओं को शामिल करते हुए एक संरचित पाठ्यक्रम विकसित कर सकते है। यह पाठ्यक्रम परिवारों को उनकी सीखने की प्रशिक्षण में मार्गदर्शन कर सकता है और व्यवस्थित प्रगति सुनिश्चित कर सकता है।

अभ्यास सत्रः– परिवारों को भारतीय सांकेतिक भाषा नियमित अभ्यास सत्र आयोजित करने के लिए प्रोत्साहित करें जहां वे एक–दूसरे के साथ संकेतों करने का अभ्यास कर सकेंगें। ये सत्र प्रवाह को बेहतर बनाने और सीखने को सुदृढ़ करने में मदद कर सकते हैं ।

सहकर्मी समर्थनः– सहकर्मी सहायता समूहों या ऑनलाइन समुदायों की सुविधा प्रदान करें जहां भारतीय सांकेतिक भाषा सीखने वाले परिवार एक–दूसरे से जुड़ सकें। यह अनुभव साझा करने, प्रश्न पूछने और दूसरों के साथ संकेतों करने का अभ्यास करने के लिए एक मंच प्रदान करता है।

उ 3. बधिर श्रवण बाधित दादा–दादी के बधिर / श्रवण बाधित और सुनने में सक्षम वाले पोते–पोतियां (GODA)– यह एक आमतौर पर इस्तेमाल नहीं किया जाने वाला शब्द है, एक या दो बधिर / श्रवण बाधित दादा–दादी के बहरे और सुनने में सक्षम वाले पोते–पोतियां होते हैं ।

उ 4. अपने भोजन के समय को श्रवण बाधित–अनुकूल बनाने के लिए इन युक्तियों का उपयोग करें।

अपने भोजन के समय को श्रवण बाधित–अनुकूल बनाने के लिए इन युक्तियों का उपयोग कर सकते है ।

- अपने श्रवण बाधित बच्चे को ऐसी जगह रखें जहाँ वह पूरे परिवार को देख सके। यदि संभव हो, तो चौकोर मेज के बजाय गोल खाने की मेज पर बैठने का मतलब है कि हर किसी को प्रत्येक व्यक्ति के चेहरे और हाथों का अच्छा दृश्य दिखाई देगा। यदि आपकी मेज आयताकार है, तो अपने श्रवण बाधित बच्चे को मेज के अंत में बैठाने से उन्हें सभी को देखने में मदद मिलेगी ।
- प्रत्येक भोजन के लिए एक ही सीट पर बैठने से बातचीत पर नज़र रखना आसान हो सकता है।
- अपना पूरा मुँह भरकर या अपने हाथों से अपना मुँह ढँककर बात नहीं करना चाहिए।
- किसी नए विषय पर चर्चा शुरू करने से पहले अपने श्रवण बाधित बच्चे का ध्यान आकर्षित करें, ताकि यदि वे चाहें तो वे इसमें शामिल होना चुन सकेंगें । आप मेज को थपथपा सकते हैं, अपना हाथ हिला सकते हैं या अपने बच्चे की बांह को छू भी सकते हैं।
- भले ही आपका बच्चा बातचीत में शामिल नहीं होना चाहता हो, भोजन के दौरान संकेतों का उपयोग करना जारी रखें । इसका मतलब यह है कि आपका बच्चा जब चाहे तब इसमें शामिल हो सकता है।

4.10 अभ्यास कार्य

प्र01–भारतीय सांकेतिक भाषा के संबंध में घरेलू माहौल को बेहतर बनाने मे परिवारों की प्रशिक्षण कैसे करेंगे ?

प्र02–भारतीय सांकेतिक भाषा के संबंध में घरेलू माहौल को बेहतर बनाने के विन्दुओं के सम्बन्ध में चर्चा कीजिए।

4.11 चर्चा के बिन्दु

प्र01–भारतीय सांकेतिक भाषा के संबंध में घरेलू माहौल को बेहतर बनाने के बिन्दुओं कव सम्बन्ध में चर्चा कीजिए।

4.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- मूरेस, डोनाल्ड एफ. (1990),बहरेपन के शैक्षिक और विकासात्मक पहलू,गैलॉडेटः यूनिवर्सिटी प्रेस।
- जोन्स, एम. (2002), "संस्कृति के रूप में बहरापनः एक मनोसामाजिक परिप्रेक्ष्य",न्यूयॉर्कः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
- पावर, डी.,और लेह, जी.(2004) श्रवण बाधित छात्रों को शिक्षित करना–वैश्विक परिप्रेक्ष्य, वाशिंगटन, डीसीः गैलॉडेट यूनिवर्सिटी प्रेस।

- पेट्टाला, आर. (2020),श्रवण बाधित बच्चों के लिए पाठ्यचर्या संबंधी पहलू,नई दिल्लीः कनिष्क प्रकाशक।
- पोलाक, डी. (1985),सीमित श्रवण वाले शिशु और प्रीस्कूलर के लिए शैक्षिक ऑडियोलॉजी (दूसरा संस्करण)ः स्प्रिंगफील्ड, आईएलः सी.सी. थॉमस प्रकाशन.
- पावर, डी., और लेह, जी. (2004), श्रवण बाधित छात्रों को शिक्षित करना–वैश्विक परिप्रेक्ष्य, वाशिंगटन, डीसीः गैलॉडेट यूनिवर्सिटी प्रेस।

इकाई 5

हाथ–संबंधी/मैनुअल संचार विकल्प का उपयोग करने वाले छात्रों के लिए मुख्यधारा के पाठशालाओं/कक्षाओं को व्यवस्थित करना

इकाई संरचना

5.1 प्रस्तावना

5.2 इकाई के उद्देश्य

5.3 श्रवण बाधित बच्चों को हाथ–संबंधी/मैनुअल विकल्प संचार का उपयोग करने वले पाठशालाएँ

5.3.1 श्रवण बाधित बच्चों को मुख्यधारा विद्यालय में प्रवेश हेतु भेजते समय माता–पिता को घ्यान में रखने वाले कुछ महत्वपूर्ण मुद्दे

5.4 श्रवण बाधित बच्चों को हाथ–संबंधी/मैनुअल विकल्प संचार का उपयोग करने वाले छात्रों के लिए मुख्यधारा के पाठशालाओं/कक्षाओं को व्यवस्थित करना

5.4.1 मुख्यधारा के विद्यालयों में सांकेतिक भाषा का उपयोग/शिक्षण के लाभ

5.4.2 भारतीय सांकेतिक भाषा को मुख्यधारा के विद्यालय/कक्षाओं में एकीकृत करना

5.4.3 मुख्यधारा के विद्यालयों में भारतीय सांकेतिक भाषा को लागू करने में चुनौतियाँ और समाधान

5.4.4 हाथ–संबंधी/मैनुअल विकल्प संचार का उपयोग करने वाले छात्रों के साथ होनेवाले व्यवहार शैली

5.5 सारांश

5.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.7 अभ्यास कार्य

5.8 चर्चा के बिन्दु

5.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

5.1 प्रस्तावना

हाथ–संबंधी/मैनुअल संचार विकल्प में व्यक्तियों के बीच संदेश पहुंचाने के लिए हाथ के संकेतों, इशारों सहित हाथों की अभिव्यक्ति का उपयोग किया जाता है। हाथ–संबंधी/मैन्युअल रूप से व्यक्त किए जाने के कारण, उन भावों को दृश्य रूप से और कभी–कभी स्पर्श द्वारा प्राप्त किया जाता है। जब श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए संचार का प्राथमिक तरीका हाथ–संबंधी/मैनुअल संचार होता है, तो उस संचार को शारीरिक भाषा और चेहरे के भावों से मजबूत किया जा सकता है । संचार के हाथ–संबंधी/मैनुअल तरीके मुख्य रूप से बच्चे की दृश्य उत्तेजनाओं जैसे उंगली–वर्तनी, संकेत, चेहरे के भाव, शरीर की गति और सांकेतिक भाषा के माध्यम से संवाद करने की क्षमता का उपयोग करते हैं। इस इकाई में हम मुख्यधारा के विद्यालयों और उनकी कक्षाओं में श्रवण–बाधित छात्रों और उनसे जुड़े अन्य लोगों के लिए मैनुअल संचार विकल्प का उपयोग करने के विभिन्न तरीकों के बारे में जानने की कोशिश करेंगे। यह श्रवण–बाधित छात्र लोगों के लिए संचार प्रक्रिया को प्रभावी ढंग से बढ़ा सकता है जो संचार के अपने प्राथमिक तरीके के रूप में मैनुअल संचार विकल्पों का उपयोग करते हैं। इसके द्वारा हाथ–संबंधी/मैनुअल विकल्प संचार का उपयोग करने वाले छात्रों के लिए मुख्यधारा के पाठशालाओं/कक्षाओं को व्यवस्थित रखने की कोशिश कर सकते हैं।

5.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप इस योग्य हो जायेगे किः–

- हाथ–संबंधी/मैनुअल विकल्प संचार का उपयोग करने वाले छात्रों के लिए मुख्यधारा के विद्यालयों को व्यवस्थित कर सकेंगे।
- हाथ–संबंधी/मैनुअल विकल्प संचार का उपयोग करने वाले छात्रों के लिए मुख्यधारा के कक्षाओं को व्यवस्थित करने के बारें मे समझेंगे ।
- भारतीय सांकेतिक भाषा को मुख्यधारा के विघालयों व कक्षाओं में एकीकृत कर सकेंगे।
- मुख्यधारा के विघालयों में साकेतिक भाषा के लोगों को जान सकेगेएवं उनकी अभिव्यक्ति कर सकेंगे।
- मुख्यधारा के विघालयों में भारतीय साकेतिक भाषा सम्बन्धी चुनौतियों का समाधान कर सकेंगे।

5.3 श्रवण बाधित बच्चों को हाथ–संबंधी / मैनुअल विकल्प संचार का उपयोग करने वाले पाठशालाएँ

दुनिया भर में लगभग 34 मिलियन बच्चे सुनने में अक्षमता से पीड़ित हैं। लगभग 95% श्रवण बाधित बच्चे सुनने में सक्षम वाले माता–पिता से पैदा होते हैं, जिनके लिए सांकेतिक भाषा का ज्ञान महत्वपूर्ण है। सांकेतिक भाषा श्रवण बाधित बच्चों को बुनियादी अभिव्यक्ति और संचार कौशल से परिचित कराती है। चूँकि कम–संसाधन परिवेश में अधिकांश श्रवण बाधित बच्चे बहुत कम या बिना

भाषा के प्राथमिक विद्यालय शुरू करते हैं, इसलिए औपचारिक शिक्षा में प्रगति का मार्ग खोलने के लिए सांकेतिक भाषाओं की भूमिका आवश्यक है, क्योंकि यह पाठ्यक्रम तक पहुंच को बढ़ावा देती है।

मुख्यधारा के विद्यालयों में नामांकित श्रवण बाधित बच्चे खेल के मैदान से लेकर कक्षा तक हर जगह सुनने की संस्कृति से घिरे रहते हैं। श्रवण बाधित शिक्षा के संदर्भ में समझने योग्य दो प्रमुख शब्द हैं – मुख्यधारा में लाना और समावेशन, क्योंकि शैक्षिक परिवेश में इनके अर्थों में महत्वपूर्ण अंतर हैं। यद्यपि कुछ विद्यालय और कक्षाएं सांस्कृतिक रूप से श्रवण बाधित छात्रों को मुख्यधारा में लाने की प्रक्रिया में सहायता करने के लिए डिज़ाइन की गई हैं, फिर भी हमें वर्तमान समाज में मुख्यधारा में लाने के लिए श्रवण बाधित छात्रों के लिए पूरी तरह से सुलभ और समावेशी वातावरण प्रदान करने के उद्देश्य से प्रयास करने की आवश्यकता है।

शिक्षक के रूप में यह हमारा कर्तव्य है कि हम अपने प्रत्येक छात्र को सर्वोत्तम शिक्षा प्रदान करने की कोशिश करते हैं। यह बधिर छात्रों के शिक्षकों की भी जिम्मेदारी बन जानी चाहिए कि वे अपनी कक्षा के अन्य छात्रों के साथ–साथ अन्वेषण, अनंत संभावनाओं और अवसरों तक पहुंच प्रदान कर सकें। श्रवण बाधित संस्कृति केंद्र की जोआन क्रिप्स और अनीता स्माल के अनुसार, बधिर बच्चों के लिए सांकेतिक भाषा पूरी तरह से सुलभ है, जबकि बधिर बच्चों को मौखिक भाषा तक आंशिक पहुंच प्राप्त करने के लिए भी संघर्ष करना पड़ता है।

इसलिए शिक्षकों के लिए समावेशी परिवेश की कक्षा में सरल और सहज तरीके से संवाद करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। जैसा कि हर शिक्षक जानता है कि संचार के कई रूप हैं और मैनुअल संचार विकल्प भी उसी तरह का एक संचार विकल्प है। अंग्रेजी, भारतीय सांकेतिक भाषा (आईएसएल), शारीरिक भाषा, चेहरे के भाव, वीडियो और लिखित रूपों के माध्यम से संचार होता है। कक्षा के भीतर, यह सुनिश्चित करने के लिए कि आप संचार के प्रभावी और सहायक साधनों में संलग्न हैं, इनमें से प्रत्येक तरीके का उपयोग करना सुनिश्चित करना चाहिए।

क्रिप्स और स्मॉल यह भी बताते हैं कि, ''बधिर बच्चों को भी सांकेतिक भाषा साहित्य की समृद्धि तक पूरी पहुंच मिलनी चाहिए, दृश्य भाषा (सांकेतिक भाषा) की सहजता के माध्यम से गहरे और सार्थक रिश्तों के लिए तथा बाधाओं से मुक्त आदर्श और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए''।

अतः एक शिक्षण वातावरण बनाने के साथ–साथ, इसमें बधिर छात्रों और सुनने में सक्षम छात्रों के बीच, तथा बधिर छात्रों और शिक्षक के बीच संचार के विविध विकल्प भी होने चाहिए। संचार विकल्प के एक भाग के रूप में सांकेतिक भाषा का उपयोग, श्रवण बाधित विद्यार्थियों की बधिर संस्कृति के अधिक से अधिक पहलुओं को कक्षा में शामिल करने के लिए भी अत्यधिक प्रभावी है। इसका अर्थ है सांकेतिक भाषा साहित्य में संसाधनों की उपलब्धता, जिसमें सकारात्मक बधिर चरित्र, बधिर संस्कृति और उसका इतिहास, तथा छात्रों की अपनी भाषा (सांकेतिक भाषा) में समझ बढ़ाने के लिए विभिन्न विषयों पर जानकारी शामिल होनी चाहिए।

श्रवण बाधित बच्चों को शिक्षित करने में सांकेतिक भाषा के उपयोग पर विश्व स्तर पर कई सम्मेलनों और विनियमों की वकालत की गई है, जिनमें दिव्यांग व्यक्तियों के लिए अवसरों की समानता पर संयुक्त राष्ट्र मानक नियम, दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन और कानूनी रूप से बाध्यकारी अनुच्छेद 16 शामिल हैं। भारत में विकलांग व्यक्तियों के अधिकार अधिनियम 2016 में लागू किया गया था। इसमें बधिरों के लिए समान पहुंच, शिक्षा के लिए सांकेतिक भाषा और समान अवसरों का उल्लेख किया गया है।

यह बहुत पहले की बात नहीं है कि अधिकांश श्रवण बाधित या कम सुनने वाले बच्चे आवासीय श्रवण बाधित विद्यालयों में पढ़ते थे । आवासीय श्रवण बाधित विद्यालयों में, छात्र श्रवण बाधित छात्रों से सीखेंगे और अपना अधिकांश समय श्रवण बाधित छात्रों के साथ बिताएंगे।

टाज कई माता–पिता अपने श्रवण बाधित बच्चों को मुख्यधारा में लाने का विकल्प चुन रहे हैं। मुख्यधारा का अर्थ है आपके श्रवण बाधित बच्चे को सुनने में सक्षम वालों का यानी मुख्यद्वारा विद्यालय में भेजना। कुछ लोग इसे एकीकरण या समावेशन कहते हैं।

इसके लिए कई गुनी वज़हें हैं। कई माता–पिता इस मार्ग को अपनाते हैं क्योंकि इससे श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए मुख्यधारा के समाज में प्रवेश करने का मार्ग आसान हो सकता है। श्रवण बाधित/बधिर संस्कृति जितनी समृद्ध है, उतनी ही विशिष्ट भी है, और जिन लोगों ने अपना अधिकांश समय श्रवण बाधित वातावरण में बिताया है, उनके लिए इससे बाहर निकलना मुश्किल हो सकता है।

मुख्यधारा के छात्रों में मौखिक और होंठ–पढ़ने के कौशल विकसित होने की अधिक संभावना है, जो कई उच्च शिक्षा और व्यवसाय के अवसरों के लिए महत्वपूर्ण हैं। दूसरी ओर, कुछ लोगों को डर है कि श्रवण बाधित छात्रों को मुख्यधारा में लाने से वे श्रवण बाधित समुदाय से अलग–थलग हो सकते हैं। कई श्रवण बाधित या कम सुनने वाले छात्र अपने सार्वजनिक विद्यालय में केवल अकेले हो सकते हैं।

मुख्यधारा के विद्यालयों में यह अलगाव श्रवण बाधित छात्रों की भारतीय सांकेतिक भाषा के माध्यम से संवाद करने की क्षमता को सीमित कर देता है, जो बधिर संस्कृति की नींव थी। इससे छात्रों पर अपनी कक्षाओं में अल्पसंख्यक का प्रतिनिधित्व करने का अनावश्यक दबाव पड़ सकता है। किसी भी अल्पसंख्यक की तरह, श्रवण बाधित छात्र बदमाशी और बढ़ते सामाजिक दबाव के प्रति अधिक संवेदनशील हो सकते हैं। वे श्रवण बाधित खेलों या सामाजिक संगठनों में भाग लेने की सामाजिक मित्रता से चूक सकते हैं।

सौभाग्य से, भारत में बहुत सारे सरकारी विद्यालयों को मुख्यधारा में लाने के लिए स्वस्थ विकल्प तैयार कर रहे हैं। अब आंशिक रूप से श्रवण बाधित छात्रों को भी मुख्यधारा में लाने के विकल्प मौजूद हैं। आंशिक रूप से मुख्यधारा में लाने का मतलब है कि श्रवण बाधित छात्रों को श्रवण और

श्रवण बाधित दोनों कक्षाओं में भाग लेने का अवसर मिलता है, जिन्हें संसाधन कक्षाएं कहा जाता है। इससे उन्हें अपनी नियमित कक्षाओं में सुनने के माहौल को संचालन करने के साथ–साथ अपने संसाधन कक्षाओं में श्रवण बाधित समुदाय के साथ जुड़े रहने की अनुमति मिलती है।

कुछ सरकारी विद्यालय समूह शिक्षण के साथ पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं। श्रवण और श्रवण बाधित शिक्षक एक कक्षा को एक साथ पढ़ाने के लिए सहयोग करते हैं। दोनों शिक्षक कक्षा को सबसे मजबूत और सबसे बहुमुखी शिक्षा दिलाने के लिए अपनी ताकत प्रदान करते हैं।

यदि आप माता–पिता हैं और अपने बच्चे को मुख्यधारा में लाने या आवासीय श्रवण बाधित विद्यालय में भेजने के बीच निर्णय लेने का प्रयास कर रहे हैं, तो अपने क्षेत्र में विकल्पों पर शोध करके शुरुआत करना जरुरी होगा। अपने आस–पास का वातावरण के सार्वजनिक विद्यालय में यह पहचानने में समय व्यतीत करें कि वे कौन से संसाधन प्रदान करते हैं। पता लगाएं कि क्या विद्यालय प्रशासन ने विचारपूर्वक, अपने श्रवण बाधित छात्रों के लिए विकास का माहौल बनाया है।

यदि आपका छात्र उम्र में काफी बढ़ा है, तो उसके साथ इस बात पर चर्चा करना सुनिश्चित करें कि विद्यालय में उसका क्या महत्व होगा। क्या वे श्रवण बाधित संस्कृति में गहराई से उतरना चाहते हैं, या वे मुख्यधारा के विद्यालयों का पता लगाना चाहते हैं? अपने बच्चे के दृष्टिकोण को ध्यान में रखने से आपको भी बुद्धिमानीपूर्ण निर्णय लेने में मदद मिलेगी।

आप जो भी चुनें, अपने बच्चे के साथ उनकी शिक्षा के बारे में विचारशील संचार बनाए रखें। क्या वे अपने सीखने के माहौल के बारे में आश्वस्त, सुरक्षित और उत्साहित महसूस करते हैं ? इस तरह के हर एक चीज के बारें में संपर्क करना बेहतरीन होगा।

5.3.1 श्रवण बाधित बच्चों को मुख्यधारा विद्यालय में प्रवेश हेतु भेजते समय या प्रवेश के बाद माता–पिता को घ्यान में रखने वाले कुछ महत्वपूर्ण मुद्दे

- क्या छात्र कक्षा में प्रवेश करने से पहले उचित श्रेणी या ग्रेड स्तर पर है या उसके करीब है ? यदि नहीं, तो क्या विद्यालय वर्ष के दौरान एक वर्ष से अधिक की वृद्धि प्राप्त करने में छात्र की सहायता के लिए पर्याप्त समर्थन उपलब्ध कराती है ?
- क्या विद्यार्थी पाठ्यक्रम में निपुणता प्राप्त कर रहा है, या क्या उसे अपने सहपाठियों के समान पाठ्यक्रम सीखने से कुछ असुविधा हो रही है ?
- क्या छात्र अपनी भाषा और भाषण सीखने में महारत का पता लगाने के लिए मानकीकृत परीक्षणों की मदद से सालाना मूल्यांकन करता है। आमतौर पर इन वार्षिक मूल्यांकनों में श्रवण बाधित छात्र द्वारा संबंधित शैक्षणिक वर्ष मे कक्षा में अर्जित की गई योग्यताओं को प्रतिबिंबित करना चाहिए।
- श्रवण–बाधित छात्रों को ऐसे समायोजन की आवश्यकता होती है जो उन्हें अपनी शिक्षा में सफल होने में मदद करें। सामान्य श्रवण वाले छात्र आसानी से सुन सकते हैं और

मल्टीटास्किंग के रूप में व्याख्यान के दौरान नोट्स भी ले सकते हैं; हालाँकि, श्रवण–बाधित छात्रों के संदर्भ में यह संभव नहीं है।

5.4 श्रवण बाधित बच्चों को हाथ–संबंधी/मैनुअल संचार विकल्प का उपयोग करने वाले छात्रों के लिए मुख्यधारा के विद्यालयों /कक्षाओं को व्यवस्थित करना

श्रवणबाधित छात्रों के लिए मुख्यधारा के विद्यालयों/कक्षाओं की समस्वरण मे भारतीय सांकेतिक भाषा (आई. एस. एल.) का उपयोग जरुरत को समझेंगे। जैसे–जैसे दुनिया भर में शिक्षा की प्रगति हो रही है, शिक्षण संस्थान श्रवण बाधित और कम सुनने वाले छात्रों को समायोजित करने के बेहतर तरीके ढूंढ रहे हैं।

भारतीय सांकेतिक भाषा (आईएसएल) एक ऐसा वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जहां हर कोई यह महसूस कर सके कि वे सभी छात्रों के साथ एक हैं और संप्रेषण कर सकते हैं। भारत के कुछ मुख्यधारा के स्कूलों में श्रवण बाधित छात्रों सहित सभी के लिए अधिक समावेशी कक्षा बनाने के लिए सांकेतिक भाषा का उपयोग आवश्यक है।

भारतीय सांकेतिक भाषा कई श्रवण बाधित या कम सुनने वाले छात्रों के लिए प्राथमिक भाषा है। यह उन्हें अपने विचारों, भावनाओं और विचारों को अधिक प्रभावी तरीके से संप्रेषित करने और व्यक्त करने का साधन प्रदान करता है। भारतीय सांकेतिक भाषा के बिना, ये छात्र अलग–थलग महसूस कर सकते हैं और कक्षा की गतिविधियों या चर्चाओं में भाग लेने के लिए संघर्ष कर सकते हैं। मुख्यधारा के विद्यालयों में सांकेतिक भाषा को शामिल करने से यह सुनिश्चित होता है कि इन छात्रों को शिक्षा और सामाजिक संपर्क के अवसरों तक समान पहुंच प्राप्त है।

दूसरी ओर, सुनने में सक्षम वाले छात्रों को भी भारतीय सांकेतिक भाषा सीखने से लाभ होता है। मुख्यधारा के विद्यालयों में सांकेतिक भाषा समग्र रूप से संचार और भाषा की उनकी समझ को व्यापक बना सकती है। इससे उन्हें नए कौशल और भाषा एवं विविधता पर एक अद्विती दृष्टिकोण प्राप्त होता है। सुनने में सक्षम वाले समुदाय के लिए सांकेतिक भाषा सीखना यह भी दर्शाता है कि वे विशेष रूप से मुख्यधारा के विद्यालयों में श्रवण बाधित और कम सुनने में सक्षम वाले व्यक्तियों की देखभाल करते हैं।

5.4.1 मुख्यधारा के विद्यालयों में सांकेतिक भाषा का उपयोग / शिक्षण के लाभ

कुशल संचार – मुख्यधारा के विद्यालयों में भारतीय सांकेतिक भाषा सिखाने से सुनने में सक्षम वाले और श्रवण बाधित या कम सुनने वाले छात्रों के बीच कुशल संचार संभव हो पाता है। यह संचार अंतर को पाटता है और सभी छात्रों को एक–दूसरे से बातचीत करने और सीखने में सक्षम बनाता है। यह केवल बातचीत को सुविधाजनक बनाने के बारे में नहीं है, यह कक्षा में समुदाय और अपनेपन की भावना पैदा करने के बारे में भी है।

समावेशी शिक्षण वातावरण – समावेशी शिक्षा केवल एक साधारण शब्द नहीं है; यह एक मौलिक अधिकार है। एक समावेशी कक्षा वह है जहाँ हर एक छात्र, अपनी क्षमताओं की परवाह किए बिना, सीख सकता है और आगे बढ़ सकता है। जब भारतीय सांकेतिक भाषा पाठ्यक्रम का हिस्सा होती है, तो श्रवण बाधित या कम सुनने वाले छात्र कक्षा की चर्चाओं और गतिविधियों में पूरी तरह से भाग ले सकते हैं, जिससे एक समावेशी शिक्षण वातावरण को बढ़ावा मिलता है।

उन्नत संज्ञानात्मक क्षमताएँ – शोध से पता चलता है कि मुख्यधारा के विद्यालयों में सांकेतिक भाषा सहित दूसरी भाषा सीखने से संज्ञानात्मक क्षमताओं में विकास हो सकती है। यह याददाश्त, ध्यान अवधि, समस्या सुलझाने के कौशल और यहां तक कि रचनात्मकता में भी सुधार कर सकता है। इसके अतिरिक्त, भारतीय सांकेतिक भाषा की दृश्य–स्थानिक प्रकृति छात्रों को बेहतर स्थानिक जागरूकता और दृश्य धारणा कौशल विकसित करने में मदद कर सकती है। इसका तात्पर्य यह है कि व्यक्ति अपने परिवेश की वस्तुओं के प्रति अधिक जागरूक हो जाते हैं, जिससे उनके सामाजिक कार्यों में सुधार हो सकता है जैसे कि व्यक्तिगत स्थान बनाए रखना और शारीरिक भाषा पढ़ना जैसा है।

सांस्कृतिक जागरूकता – मुख्यधारा के विद्यालयों में भारतीय सांकेतिक भाषा सिखाने से सांस्कृतिक जागरूकता भी बढ़ती है। यह छात्रों को श्रवण बाधित समुदाय के बारे में जानकारी देता है और उन्हें विविधता का सम्मान करना और महत्व देना सिखाता है, एक दूसरे के बीच सहानुभूति और समझ को बढ़ावा देता है।

5.4.2 भारतीय सांकेतिक भाषा को मुख्यधारा के विद्यालय/कक्षाओं में एकीकृत करना

मुख्यधारा के विद्यालयों में भारतीय सांकेतिक भाषा को लागू करने के लिए सावधानीपूर्वक योजना और प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है। भारतीय सांकेतिक भाषा को कक्षा में एकीकृत करने के कुछ तरीके यहां बताए गए हैं।

शिक्षक प्रशिक्षण – कक्षा में भारतीय सांकेतिक भाषा को लागू करने में शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्हें न केवल भारतीय सांकेतिक भाषा में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए, बल्कि उन शिक्षण रणनीतियों में भी प्रशिक्षित किया जाना चाहिए जो भारतीय सांकेतिक भाषा को अपने पाठों में प्रभावी ढंग से शामिल कर सकें। इसे ध्यान में रखते हुए, विद्यालयों में सांकेतिक भाषा, विशेष रूप से भारतीय सांकेतिक भाषा सिखाने के लिए, उन्हे भारतीय सांकेतिक भाषा प्रमाणन प्राप्त करना होगा या भारतीय सांकेतिक भाषा शिक्षा पर व्यावसायिक विकास कार्यशालाओं में भाग लेना होगा।

सांकेतिक भाषा कक्षाएँ – एक बार जब शिक्षक पर्याप्त रूप से भारतीय सांकेतिक भाषा में प्रशिक्षित हो जाएं, तो अगला कदम भारतीय सांकेतिक भाषा को पाठ्यक्रम में एकीकृत करना है। सरल संकेतों से शुरुआत करें, जैसे कि अभिवादन, सामान्य कक्षा की वस्तुएँ, या बुनियादी निर्देश करना। बाद में, आप धीरे–धीरे अधिक जटिल भाषा संरचनाओं का निर्माण कर सकते हैं क्योंकि छात्र सांकेतिक भाषा में अधिक कुशल हो जाते हैं।

वर्णमाला चिह्न एवं अभिवादन – सांकेतिक भाषा सिखाने का एक सरल लेकिन प्रभावी तरीका भारतीय सांकेतिक भाषा वर्णमाला के संकेतों से शुरुआत करना है। यह एक बेहतरीन पहला कदम है जिसे विभिन्न कक्षा गतिविधियों में लागू किया जा सकता है। इसी तरह, छात्रों को सामान्य अभिवादन पर हस्ताक्षर करने का तरीका सिखाने से सुनने में सक्षम वाले और श्रवण बाधित या कम सुनने वाले छात्रों के बीच संचार को बढ़ावा मिलता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी क – नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए ।

ख – इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की मिलान करें ।

प्र 1- मुख्यधारा के विद्यालयों में सांकेतिक भाषा का उपयोग/शिक्षण के लाभ क्या हैं ?

_____
_____

प्र 2- भारतीय सांकेतिक भाषा को मुख्यधारा के विद्यालय/कक्षाओं में एकीकृत करने क्या तरीके है ?

_____
_____
_____

5.4.3 मुख्यधारा के विद्यालयों में भारतीय सांकेतिक भाषा को लागू करने में चुनौतियाँ और समाधान

विद्यालयों में भारतीय सांकेतिक भाषा पढ़ाना उतना आसान नहीं है जितना हम सोचते हैं, इसमें कई तरह की चुनौतियाँ हैं। हालाँकि, शिक्षा को समावेशी बनाने के लिए सही रणनीति और प्रतिबद्धता के साथ, इन चुनौतियों पर काबू पाया जा सकता है।

सबसे आम चुनौतियों में से एक उन शिक्षकों की कमी है जो भारतीय सांकेतिक भाषा में निपुण हैं और सांकेतिक भाषा को प्रभावी ढंग से सिखाने में प्रशिक्षित हैं।

एक और आम चुनौती माता–पिता या विद्यालय प्रशासकों का प्रतिरोध है, जो सुनने में सक्षम वाले छात्रों को भारतीय सांकेतिक भाषा सिखाने के तत्काल लाभ नहीं देख पाना होगा। वे इसे अन्य शैक्षणिक विषयों से ध्यान भटकाने के रूप में देख सकते हैं, जिससे सुनने में सक्षम वाले समुदाय के लिए सांकेतिक भाषा को अपनाना और इसे सीखने का आनंद लेना मुश्किल हो जाता है।

शिक्षक प्रशिक्षण की चुनौती से निपटने के लिए, विद्यालय भारतीय सांकेतिक भाषा प्रशिक्षण प्रदान करते वाले व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों में निवेश कर सकते हैं। इसके अलावा, स्थानीय श्रवण बाधित समुदायों या संगठनों के साथ सहयोग मूल्यवान संसाधन और सहायता प्रदान कर सकता है। जहां तक हितधारकों के प्रतिरोध का सवाल है, उन्हें भारतीय सांकेतिक भाषा के लाभों के बारे में शिक्षित करने से भारतीय सांकेतिक भाषा सीखने के संज्ञानात्मक, सामाजिक और सांस्कृतिक लाभों पर प्रकाश डालने में मदद मिल सकती है। सफलता की कहानियाँ और शोध निष्कर्ष साझा करें जो कक्षा में भारतीय सांकेतिक भाषा के सकारात्मक प्रभाव को रेखांकित कर सकते हैं।

नियमित विद्यालयों में श्रवणबाधित छात्र को मुख्यधारा में लाने की आवश्यकता नियमित विद्यालय शिक्षकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम की आवश्यकता सीखने के लिए न्यूनतम प्रतिबंधात्मक वातावरण की आवश्यकता भारतीय सांकेतिक भाषा विशिष्ट पुस्तकों के साथ पुस्तकालय को अद्यतन करना श्रवण बाधित छात्रों के साथ मैनुअल संचार का उपयोग करते समय व्यवहार करने की तरीका जानना भी जरुरी है।

- संवाद करते समय अपना ध्यान श्रवण बाधित/बधिर व्यक्ति पर केंद्रित करें ।
- यदि कोई सुनने में सक्षम वाला संवाद में भाग लेना चाहते है, तो श्रवण बाधित / बधिर व्यक्ति से मुड़ने से पहले पहले उनको सूचित करना जरुरी है ।
- चेहरे की अभिव्यक्ति और प्राकृतिक मुँह की गति का उपयोग करें ।
- यदि किसी ऐसे व्यक्ति के साथ संवाद कर रहे हैं जो होंठ पढ़ सकता है, तो सामान्य स्वर के साथ धीरे–धीरे और स्पष्ट रूप से बात करें ।
- यदि संभव हो तो भारतीय सांकेतिक भाषा में संवाद के दौरान जब कोई सुनने में सक्षम वाला व्यक्ति जुड़ता है तो उसको को भी शामिल करें ।
- कभी भी इस बात पर जोर न दें कि श्रवण बाधित व्यक्ति बात करने की कोशिश करें ।
- संवाद करते समय बहरे व्यक्ति से कभी दूर न जाएँ ।
- बधिरों की रुचियों और राय का पता लगाने की कोशिश करें और और उन्हें स्वतंत्र रूप से खुद को अपनी भाषा में व्यक्त करने की अनुमति दीजिए।

5.4.4 हाथ–संबंधी / मैनुअल संचार विकल्प का उपयोग करने वाले छात्रों के साथ होनेवाले व्यवहार शैली

करने योग्य (Do's)

सुलभ सामग्री प्रदान करें :–. सुनिश्चित करें कि भारतीय सांकेतिक भाषा में पाठ्यपुस्तकों, कार्यपत्रकों और ऑनलाइन संसाधनों सहित सभी शिक्षण सामग्री, मैन्युअल संचार या सांकेतिक भाषा का उपयोग करने वाले छात्रों के लिए उपयुक्त प्रारूपों में उपलब्ध कराएँ।

प्रशिक्षित कर्मचारीः– . मैन्युअल संचार का उपयोग करके छात्रों के साथ प्रभावी ढंग से बातचीत करने के लिए शिक्षकों और सहायक कर्मचारियों को बुनियादी भारतीय सांकेतिक भाषा और संचार रणनीतियों में प्रशिक्षित करें ।

सहकर्मी समर्थनः– . सहपाठियों को मैन्युअल संचार या भारतीय सांकेतिक भाषा के बारे में शिक्षित करके और एक समावेशी वातावरण को बढ़ावा देकर सहकर्मी समर्थन और समावेशन को प्रोत्साहित करें।

व्यक्तिगत समर्थनः– . प्रत्येक छात्र की विशिष्ट आवश्यकताओं के आधार पर भारतीय सांकेतिक भाषा के साथ साथ व्यक्तिगत समर्थन और आवास की पेशकश करें, जैसे अधिमान्य बैठने की व्यवस्था, नोट लेने में सहायता, या असाइनमेंट के लिए अतिरिक्त समय इत्यादी।

क्या न करें (Don'ts)

अलगाव :– समावेशी गतिविधियों और समूह कार्य को बढ़ावा देकर मैन्युअल संचार या भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग करने वाले छात्रों को अलग–थलग करने से बचाएँ।

एकरूपता मानना :– यह न मानें कि मैन्युअल संचार या भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग करने वाले सभी छात्रों की ज़रूरतें या क्षमताएं समान हैं। प्रत्येक छात्र अद्वितीय है, और उनका समर्थन उसी के अनुसार तैयार किया जाना चाहिए।

संचार प्राथमिकताओं को नज़रअंदाज़ करना :– किसी छात्र के संचार के पसंदीदा तरीके भारतीय सांकेतिक भाषा हो तो उसको नज़रअंदाज़ या ख़ारिज न करें। उनकी पसंद का सम्मान करें और आवश्यक सहायता प्रदान करें।

प्रशिक्षण का अभाव :– मैन्युअल संचार या भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग करने वाले छात्रों के साथ काम करने के लिए उचित प्रशिक्षण के बिना कर्मचारियों को नियुक्त नहीं करना चाहिए, क्योंकि इससे गलतफहमी और अप्रभावी संचार हो सकता है ।

सांकेतिक भाषा सभी छात्रों को, सुनने की क्षमता की परवाह किए बिना, प्रभावी ढंग से संवाद करने में सक्षम बनाकर समावेशी कक्षाएँ बनाने में मदद करती है। यह सुनिश्चित करता है कि श्रवण बाधित या कम सुनने वाले छात्र कक्षा की गतिविधियों और चर्चाओं में पूरी तरह से भाग ले सकें। शिक्षक प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम संशोधन और दैनिक कक्षा की गतिविधियों में भारतीय सांकेतिक भाषा के नियमित उपयोग के माध्यम से प्रभावी ढंग से कक्षा में एकीकृत किया जा सकता है। विद्यालय संसाधनों और सहायता के लिए स्थानीय श्रवण बाधित समुदायों या संगठनों के साथ भी सहयोग कर सकते हैं। विद्यालयों में भारतीय सांकेतिक भाषा को शामिल करना एक अधिक समावेशी, समझदार और सहानुभूतिपूर्ण समाज की दिशा में एक कदम है। यह सभी प्रकार के छात्रों के लिए संचार, सीखने और विकास के अवसर देता है। यह मुख्यधारा के शैक्षणिक माहौल को बढ़ावा देने

का समय है जहां विविधता का स्वागत करता है और प्रत्येक छात्र को आगे बढ़ने का समान अवसर दिया जाता है।

मुख्यधारा के विद्यालय मे मैन्युअल संचार या भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग करने मे श्रवण बाधित छात्रों के लिए एक समावेशी और सहायक वातावरण बनाने में कुछ व्यवहारों को ध्यान में रखना और इन बातों को लागू करना आवश्यक हो सकते हैं।

बोध प्रश्न

टिप्पणी क – नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए ।

ख – इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की मिलान करें ।

प्र 3. मुख्यधारा के विद्यालयों में भारतीय सांकेतिक भाषा को लागू करने में चुनौतियाँ और समाधान बताइए ?

_____
_____

प्र 4. हाथ–संबंधी / मैनुअल संचार विकल्प का उपयोग करने वाले छात्रों के साथ होनेवाले व्यवहार शैली कैसे होना चाहिए ?

_____
_____
_____

5.5 सारांश

हाथ–संबंधी/मैनुअल विकल्प संचार का उपयोग सांकेतिक भाषाओं और हाथ–संबंधी रूप से कोडित भाषाओं में किया जाता है, हालांकि सांकेतिक भाषाओं में गैर– हाथ–संबंधी तत्व भी होते हैं । हाथ–संबंधी /मैन्युअल संचार की अन्य प्रणालियाँ विशिष्ट उद्देश्यों के लिए विकसित की गई हैं, विशेष रूप से उन स्थितियों में जहां भाषण व्यावहारिक नहीं है या अनुमति नहीं है, या जहां गोपनीयता वांछित है। सांकेतिक भाषाएं, विशेष रूप से भारतीय सांकेतिक भाषा पढ़ाना, श्रवण बाधित या कम सुनने वाले छात्रों के लिए संचार का एक साधन प्रदान करता है और सुनने में सक्षम वाले छात्रों को संचार और भाषा की व्यापक समझ प्रदान करता है। यह संज्ञानात्मक लाभ भी प्रदान करता है और सांस्कृतिक जागरूकता को बढ़ावा देता है। सुनने में सक्षम वाले छात्रों को सांकेतिक भाषा सिखाने से उनकी संज्ञानात्मक क्षमताएं बढ़ सकती हैं, विविधता के बारे में उनकी समझ में सुधार हो सकता है और उन्हें श्रवण बाधित या कम सुनने वाले साथियों के साथ संवाद करने में सक्षम बनाया जा सकता है। हाथ–संबंधी/मैन्युअल संचार एक समावेशी शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देता है जहां सभी छात्र एक–दूसरे से बातचीत कर सकते हैं और सीख सकते हैं। श्रवण

बाधित बच्चे स्वाभाविक रूप से सामान्य मात्रा में बोलते है। सुनिश्चित करें कि वक्ता का चेहरा छात्र को दिखाई दे। इस प्रकार की कुछ प्रणालियों की उपलब्धि जरुरी है।

5.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

उ 1. मुख्यधारा के विद्यालयों में सांकेतिक भाषा का उपयोग/शिक्षण के लाभ

कुशल संचार – मुख्यधारा के विद्यालयों में भारतीय सांकेतिक भाषा सिखाने से सुनने में सक्षम वाले और श्रवण बाधित या कम सुनने वाले छात्रों के बीच कुशल संचार संभव हो पाता है। यह संचार अंतर को पाटता है और सभी छात्रों को एक–दूसरे से बातचीत करने और सीखने में सक्षम बनाता है । यह केवल बातचीत को सुविधाजनक बनाने के बारे में नहीं है, यह कक्षा में समुदाय और अपनेपन की भावना पैदा करने के बारे में भी है ।

समावेशी शिक्षण वातावरण – समावेशी शिक्षा केवल एक साधारण शब्द नहीं है; यह एक मौलिक अधिकार है । एक समावेशी कक्षा वह है जहाँ हर एक छात्र, अपनी क्षमताओं की परवाह किए बिना, सीख सकता है और आगे बढ़ सकता है । जब भारतीय सांकेतिक भाषा पाठ्यक्रम का हिस्सा होती है, तो श्रवण बाधित या कम सुनने वाले छात्र कक्षा की चर्चाओं और गतिविधियों में पूरी तरह से भाग ले सकते हैं, जिससे एक समावेशी शिक्षण वातावरण को बढ़ावा मिलता है ।

उन्नत संज्ञानात्मक क्षमताएँ – शोध से पता चलता है कि मुख्यधारा के विद्यालयों में सांकेतिक भाषा सहित दूसरी भाषा सीखने से संज्ञानात्मक क्षमताओं में विकास हो सकती है । यह याददाश्त, ध्यान अवधि, समस्या सुलझाने के कौशल और यहां तक कि रचनात्मकता में भी सुधार कर सकता है। इसके अतिरिक्त, भारतीय सांकेतिक भाषा की दृश्य–स्थानिक प्रकृति छात्रों को बेहतर स्थानिक जागरूकता और दृश्य धारणा कौशल विकसित करने में मदद कर सकती है। इसका तात्पर्य यह है कि व्यक्ति अपने परिवेश की वस्तुओं के प्रति अधिक जागरूक हो जाते हैं, जिससे उनके सामाजिक कार्यों में सुधार हो सकता है जैसे कि व्यक्तिगत स्थान बनाए रखना और शारीरिक भाषा पढ़ना जैसा है ।

उ 2. भारतीय सांकेतिक भाषा को कक्षा में एकीकृत करने के कुछ तरीके यहां दिए गए हैं।

शिक्षक प्रशिक्षण – कक्षा में भारतीय सांकेतिक भाषा को लागू करने में शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । उन्हें न केवल भारतीय सांकेतिक भाषा में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए, बल्कि उन शिक्षण रणनीतियों में भी प्रशिक्षित किया जाना चाहिए जो भारतीय सांकेतिक भाषा को अपने पाठों में प्रभावी ढंग से शामिल कर सकें । इसे ध्यान में रखते हुए, विद्यालयों में सांकेतिक भाषा, विशेष रूप से भारतीय सांकेतिक भाषा सिखाने के लिए, उन्हे भारतीय सांकेतिक भाषा प्रमाणन प्राप्त करना होगा या भारतीय सांकेतिक भाषा शिक्षा पर व्यावसायिक विकास कार्यशालाओं में भाग लेना होगा ।

सांकेतिक भाषा कक्षाएँ – एक बार जब शिक्षक पर्याप्त रूप से भारतीय सांकेतिक भाषा में प्रशिक्षित हो जाएं, तो अगला कदम भारतीय सांकेतिक भाषा को पाठ्यक्रम में एकीकृत करना है । सरल संकेतों से शुरुआत करें, जैसे कि अभिवादन, सामान्य कक्षा की वस्तुएँ, या बुनियादी निर्देश करना । बाद में, आप धीरे–धीरे अधिक जटिल भाषा संरचनाओं का निर्माण कर सकते हैं क्योंकि छात्र सांकेतिक भाषा में अधिक कुशल हो जाते हैं।

वर्णमाला चिह्न एवं अभिवादन – सांकेतिक भाषा सिखाने का एक सरल लेकिन प्रभावी तरीका भारतीय सांकेतिक भाषा वर्णमाला के संकेतों से शुरुआत करना है । यह एक बेहतरीन पहला कदम है जिसे विभिन्न कक्षा गतिविधियों में लागू किया जा सकता है । इसी तरह, छात्रों को सामान्य अभिवादन पर हस्ताक्षर करने का तरीका सिखाने से सुनने में सक्षम वाले और श्रवण बाधित या कम सुनने वाले छात्रों के बीच संचार को बढ़ावा मिलता है।

उ 3. मुख्यधारा के विद्यालयों में भारतीय सांकेतिक भाषा को लागू करने में चुनौतियाँ और समाधान

सबसे आम चुनौतियों में से एक उन शिक्षकों की कमी है जो भारतीय सांकेतिक भाषा में निपुण हैं और सांकेतिक भाषा को प्रभावी ढंग से सिखाने में प्रशिक्षित हैं ।

एक और आम चुनौती माता–पिता या विद्यालय प्रशासकों का प्रतिरोध है, जो सुनने में सक्षम वाले छात्रों को भारतीय सांकेतिक भाषा सिखाने के तत्काल लाभ नहीं देख पाना होगा। वे इसे अन्य शैक्षणिक विषयों से ध्यान भटकाने के रूप में देख सकते हैं, जिससे सुनने में सक्षम वाले समुदाय के लिए सांकेतिक भाषा को अपनाना और इसे सीखने का आनंद लेना मुश्किल हो जाता है।

- संवाद करते समय अपना ध्यान श्रवण बाधित/बधिर व्यक्ति पर केंद्रित करें ।
- यदि कोई सुनने में सक्षम वाला संवाद में भाग लेना चाहते है, तो श्रवण बाधित / बधिर व्यक्ति से मुड़ने से पहले पहले उनको सूचित करना जरुरी है ।
- चेहरे की अभिव्यक्ति और प्राकृतिक मुँह की गति का उपयोग करें ।
- यदि किसी ऐसे व्यक्ति के साथ संवाद कर रहे हैं जो होंठ पढ़ सकता है, तो सामान्य स्वर के साथ धीरे–धीरे और स्पष्ट रूप से बात करें ।
- यदि संभव हो तो भारतीय सांकेतिक भाषा में संवाद के दौरान जब कोई सुनने में सक्षम वाला व्यक्ति जुड़ता है तो उसको को भी शामिल करें ।
- कभी भी इस बात पर जोर न दें कि श्रवण बाधित व्यक्ति बात करने की कोशिश करें ।

उ 4. हाथ–संबंधी/मैनुअल संचार विकल्प का उपयोग करने वाले छात्रों के साथ होनेवाले

व्यवहार शैली

करने योग्य (Do's)

सुलभ सामग्री प्रदान करें :–. सुनिश्चित करें कि भारतीय सांकेतिक भाषा में पाठ्यपुस्तकों, कार्यपत्रकों और ऑनलाइन संसाधनों सहित सभी शिक्षण सामग्री, मैन्युअल संचार या सांकेतिक भाषा का उपयोग करने वाले छात्रों के लिए उपयुक्त प्रारूपों में उपलब्ध कराएँ।

प्रशिक्षित कर्मचारीः– . मैन्युअल संचार का उपयोग करके छात्रों के साथ प्रभावी ढंग से बातचीत करने के लिए शिक्षकों और सहायक कर्मचारियों को बुनियादी भारतीय सांकेतिक भाषा और संचार रणनीतियों में प्रशिक्षित करें।

सहकर्मी समर्थनः–. सहपाठियों को मैन्युअल संचार या भारतीय सांकेतिक भाषा के बारे में शिक्षित करके और एक समावेशी वातावरण को बढ़ावा देकर सहकर्मी समर्थन और समावेशन को प्रोत्साहित करें।

व्यक्तिगत समर्थनः– . प्रत्येक छात्र की विशिष्ट आवश्यकताओं के आधार पर भारतीय सांकेतिक भाषा के साथ साथ व्यक्तिगत समर्थन और आवास की पेशकश करें, जैसे अधिमान्य बैठने की व्यवस्था, नोट लेने में सहायता, या असाइनमेंट के लिए अतिरिक्त समय इत्यादी।

क्या न करें (Don'ts)

टलगावः– . समावेशी गतिविधियों और समूह कार्य को बढ़ावा देकर मैन्युअल संचार या भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग करने वाले छात्रों को अलग–थलग करने से बचाएँ।

एकरूपता माननाः– . यह न मानें कि मैन्युअल संचार या भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग करने वाले सभी छात्रों की ज़रूरतें या क्षमताएं समान हैं। प्रत्येक छात्र अद्वितीय है, और उनका समर्थन उसी के अनुसार तैयार किया जाना चाहिए।

संचार प्राथमिकताओं को नज़रअंदाज़ करनाः– . किसी छात्र के संचार के पसंदीदा तरीके भारतीय सांकेतिक भाषा हो तो उसको नज़रअंदाज़ या ख़ारिज न करें। उनकी पसंद का सम्मान करें और आवश्यक सहायता प्रदान करें।

प्रशिक्षण का अभावः– मैन्युअल संचार या भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग करने वाले छात्रों के साथ काम करने के लिए उचित प्रशिक्षण के बिना कर्मचारियों को नियुक्त नहीं करना चाहिए, क्योंकि इससे गलतफहमी और अप्रभावी संचार हो सकता है।

5.7 अभ्यास कार्य

प्र0–1 हाथ–संबंधी / मैनुअल विकल्प संचार का उपयोग करने वाले श्रवण बाधित छात्रों के लिए मुख्यधारा के विद्यालयों/कक्षाओं को व्यवस्थित करते समय क्या नहीं करनी चाहिए?

प्र0–2 हाथ–संबंधी / मैनुअल विकल्प संचार का उपयोग करने वाले श्रवण बाधित छात्रों को मुख्यधारा के विद्यालयों/कक्षाओं को व्यवस्थित करने के लिए आप की सुझाव बताइये ?

5.8 चर्चा के बिन्दु

प्र0–1 आपके नजदीकी पाठशाला में हाथ–संबंधी/ मैनुअल विकल्प संचार का उपयोग करने वाले श्रवण बाधित छात्रों से बात करके उनके समस्यों को बारें मे जानने कि कोशिश कीजिये ।

5.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- पोलाक, डी. (1985),सीमित श्रवण वाले शिशु और प्रीस्कूलर के लिए शैक्षिक ऑडियोलॉजी (दूसरा संस्करण): स्प्रिंगफील्ड, आईएलः सी.सी. थॉमस प्रकाशन.
- पावर, डी., और लेह, जी. (2004), श्रवण बाधित छात्रों को शिक्षित करना–वैश्विक परिप्रेक्ष्य, वाशिंगटन, डीसीः गैलॉडेट यूनिवर्सिटी प्रेस।
- मूरेस, डोनाल्ड एफ. (1990),बहरेपन के शैक्षिक और विकासात्मक पहलू,गैलॉडेटः यूनिवर्सिटी प्रेस।
- जोन्स, एम. (2002), "संस्कृति के रूप में बहरापनः एक मनोसामाजिक परिप्रेक्ष्य",न्यूयॉर्कः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
- पावर, डी.,और लेह, जी.(2004) श्रवण बाधित छात्रों को शिक्षित करना–वैश्विक परिप्रेक्ष्य, वाशिंगटन, डीसीः गैलॉडेट यूनिवर्सिटी प्रेस।
- पेट्टाला, आर. (2020),श्रवण बाधित बच्चों के लिए पाठ्यचर्या संबंधी पहलू,नई दिल्लीः कनिष्क प्रकाशक।
- आर.सी.आई. (2011), संचार विकल्प और बाहरेपन छाज, नई दिल्ली, भारतीय पुनर्वास परिषद् प्रेस प्रकाशन।
- टॉमकिंस, डब्लू. (1969), भारतीय सांकेतिक भाषा, न्यूयार्क, डोबर प्रकाशन।

इकाई 6

संक्षिप्त सामान्य वार्तालापों में प्राकृतिक संकेतों का अभ्यास करना

इकाई संरचना

6.1 प्रस्तावना

6.2 इकाई के उद्देश्य

6.3 श्रवण बाधित समुदायों के साथ संक्षिप्त सामान्य वार्तालापों में प्राकृतिक संकेतों का अभ्यास करना

6.3.1 विभिन्न वार्तालापों के लिए प्राकृतिक संकेत में शामिल कुछ गतिविधियाँ

6.3.2 सामान्य वार्तालापों के दौरान सांकेतिक भाषा के कविताएँ

6.3.3 सामान्य वार्तालापों के दौरान सांकेतिक भाषा के चुटकुले

6.3.4 सामान्य वार्तालापों के दौरान सांकेतिक भाषा के कहानियाँ

6.4 सारांश

6.5 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.6 अभ्यास कार्य

6.7 चर्चा के बिन्दु

6.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

6.1 प्रस्तावना

सांकेतिक भाषा के साथ बधिर संस्कृति के ज्ञान को उजागर करना और बधिर/श्रवण बाधित समुदाय में विभिन्न प्रकार की स्थितियों में सहजता से संवाद करने के लिए आवश्यक कौशल प्रदान करना प्राकृतिक संकेतन का लक्ष्य होता है। प्राकृतिक संकेत भाषा कौशल और सांस्कृतिक जानकारी के माध्यम से कक्षा के दौरान छात्रों को बधिर समुदाय के साथ सम्मानजनक और जागरूक तरीके से बातचीत करने की अनुमति मिलती है। प्राकृतिक सांकेतिक भाषा शिक्षण का पहला और सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य सांकेतिक भाषा में संवाद करने में असमर्थ व्यक्ति को संवादात्मक क्षमता के बुनियादी स्तर तक लाना है। प्राकृतिक सांकेतिक भाषा जरूरतमंद लोगों को संचार, संस्कृति, संबंध, तुलना और समुदाय के पांच क्षेत्रों को पूरा करने में मदद करती है। इस इकाई में संक्षिप्त सामान्य वार्तालापों में प्राकृतिक संकेतों का प्रयोग करने की आवश्यकता और उनकी अभ्यास के महत्व के बारें में जानने की कोशश करेंगें।

6.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप इस योग्य हो जायेगे कि :–

- श्रवण बाधित समुदायों के साथ संक्षिप्त सामान्य वार्तालापों में प्राकृतिक संकेतों की आवश्यकता को समझ सकेगें।
- श्रवण बाधित समुदायों के साथ संक्षिप्त सामान्य वार्तालापों में प्राकृतिक संकेतों के अभ्यास करने के महत्व को बता सकेगें।
- प्राकृतिक संकेत सम्बन्धी गतिविधियों को जानकर उनका उपयोग कर सकेंगे।
- सांकेतिक भाषा में कविताओं का पाठ कर सकेगे।
- संकेतिक भाषा में कहानियाँ कह सकेगें।
- वार्तालाप में चुटकुलों को सांकेतिक भाषा में अभिव्यक्ति कर सकेगें।

6.3 श्रवण बाधित समुदायों के साथ संक्षिप्त सामान्य वार्तालापों में प्राकृतिक संकेतों का अभ्यास करना

श्रवण बाधित समुदायों की प्राकृतिक सांकेतिक भाषाएँ मौखिक भाषाओं की तरह ही समय के पैमाने पर हासिल की जाती हैं। यदि श्रवण बाधित बच्चों को जन्म से ही धाराप्रवाह सांकेतिक भाषा

उपयोगकर्ताओं तक पहुंच उपलब्ध हो तो वे स्वाभाविक सांकेतिक भाषा प्रयोक्ता बन जाएंगे। श्रवण बाधित शिशु दृश्य रूप से प्रदान की गई भाषाई जानकारी के प्रति संवेदनशील होते हैं, और प्रारंभिक चरण में कई समानताएँ दिखाई देती हैं। तौर–तरीके भाषा अधिग्रहण के विभिन्न क्षेत्रों को प्रभावित कर सकते हैं; ऐसे प्रभावों में संकेतों का रूप (संकेत ध्वनिविज्ञान), दृश्य प्रतिष्ठितता द्वारा प्रस्तुत संभावित लाभ, और संदर्भों, स्थानों और आंदोलन की घटनाओं का प्रतिनिधित्व करने के लिए स्थानिक स्थानों का उपयोग भी शामिल है। दुर्भाग्य से, अधिकांश श्रवण बाधित बच्चों को शैशवावस्था में सुलभ सांकेतिक भाषाई अनुभव प्राप्त नहीं होता है, और ये बच्चे भाषा के अभाव का अनुभव करते हैं। प्रथम–भाषा अधिग्रहण में देरी होने पर भाषा पर नकारात्मक प्रभाव देखा जाता है। जो लोग अंततः सांकेतिक भाषा सीखना शुरू करते हैं, उनके लिए पहले का अनुभव बेहतर भाषा और शैक्षणिक परिणामों से जुड़ा होता है। प्रतिभागियों की व्यापक विविधता के साथ विशेष रूप से आगे सांकेतिक भाषाओं के शोध की आवश्यकता है।

कुछ श्रवण बाधित /बधिर समुदायों में प्राकृतिक संकेत पाठ्यक्रम में शिक्षण भी दी जाती है। प्राकृतिक संकेत पाठ्यक्रम में कई प्रकार के पाठ शामिल हैं जैसे संवादात्मक (कार्यात्मक) कौशल निर्माण, सांस्कृतिक और समीक्षा इत्यादि। वार्तालाप (कार्य) पाठ मुख्य संवादों के संदर्भ में शब्दावली और प्रमुख व्याकरण संरचनाओं का परिचय देते हैं। संख्याओं, उंगली की वर्तनी, स्थानिक तत्वों और अन्य सहायक कौशलों को पेश करने पर कौशल पाठ ध्यान केंद्रित करते हैं। सांस्कृतिक पाठ उन व्यवहारों पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो छात्रों को भाषाई और सामाजिक रूप से स्वीकार्य तरीकों से कार्य करने में सक्षम बनाते हैं। यह छात्रों को उनके बचपन से एक कहानी बताने के लिए तैयार करने के लिए कथा कौशल के निर्माण पर भी ध्यान केंद्रित करता है।

रोजमर्रा का संवाद हर पाठ का केंद्र बिंदु होता है। इन विषयों में हमारे पर्यावरण और हमारे बारे में जानकारी शामिल है। व्याकरण को संदर्भ के साथ पेश किया जाता है, जिसमें प्रश्न और उत्तर कौशल विकसित करने पर जोर दिया जाता है। इसके माध्यम से यह सीखा जा सकता है कि संवादात्मक रणनीतियाँ संचार को सफलतापूर्वक बनाए रखने में मदद करेंगी। बातचीत की गतिविधियाँ प्राकृतिक संकेतों के माध्यम से सीखी गई बातों का अभ्यास करने की अनुमति देती हैं। निम्नलिखित कुछ संवादात्मक रणनीतियों को पालन करने से बेहतरीन संप्रेषण संभव होता है जैसेः–

- अपना परिचय देना।
- व्यक्तिगत जानकारी का आदान–प्रदान करना।
- परिवार के बारे में बात करना।
- आवासीय वातावरण के बारे में बात करना।
- रोजमर्रा की गतिविधियों के बारे में बात करना।

पाठ्यक्रम भाषा विकास और द्वितीय भाषा सीखने के बारे में हमारी जानकारी को एकत्रित करता है। हम संदर्भ के अनुसार भाषा का परिचय देने तथा विभिन्न पारस्परिक गतिविधियों में भाग लेकर सीखी गई बातों को सुदृढ़ बनाने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। एक संवादात्मक पाठ्यक्रम के लिए यह आवश्यक है कि हर कोई एक सक्रिय भागीदार हो। हर किसी को प्रशिक्षक और अन्य सहपाठियों के साथ संकेतों/ हस्ताक्षर करने के लिए तैयार रहने की आवश्यकता है। कक्षाएं पहले दिन से ही भारतीय सांकेतिक भाषा (आई. एस. एल.) में आयोजित की जाती हैं। अपने भाषा सीखने की क्षमता को अधिकतम करने के लिए सभी को सप्ताह में छह घंटे भारतीय सांकेतिक भाषा के शिक्षण लेना जरुरी होता है। शिक्षक अपनी बात समझाने के लिए इशारों, संकेतों, रेखाचित्रों और अभिनय स्थितियों का उपयोग करेंगे और शिक्षार्थी उसको प्रयास करते रहना है। पहले तो यह कठिन लग सकता है, लेकिन बाद में यह आदत बन जाएगी।

दो कारणों से कक्षा में हर समय संकेतों करने का वातावरण बनाए रखने पर जोर दिया जाता है; पहला कारण, श्रवण बाधित व्यक्ति के सामने मौखिक रुप से बात करना अशिष्ट और अपमानजनक माना जाता है। चूंकि शिक्षकों की एक बड़ी संख्या बधिर होगी और सभी का लक्ष्य समुदाय में बधिर लोगों को जानना होगा। यह जरूरी है कि जब श्रवण बाधित लोग मौजूद हों तो हर कोई संकेतों करने की आदत विकसित करें। दूसरा कारण, यह एक विसर्जन वर्ग है, जिसका अर्थ है कि केवल लक्षित भाषा का उपयोग किया जाता है। केवल भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग करने से हर किसी को समझ कौशल और अभिव्यंजक कौशल दोनों को जल्दी और प्रभावी ढंग से विकसित करने में मदद मिलती है। मौखिक रुप में बात करने से यह प्रक्रिया बाधित होती है और भाषा विकास में देरी होती है। यदि कोई सहपाठी आपसे मदद मांगता है, तो आप सीखे गए संकेतों का उपयोग करके या आगे–पीछे लिखकर मदद करने के लिए स्वतंत्र महसूस करें। इस कक्षा में सफलता के लिए कक्षा की गतिविधियों में भागीदारी बहुत महत्वपूर्ण है। कक्षा एक छोटा समुदाय बनाती है और हर किसी का प्रयास या कमी समूह की सफलता को प्रभावित करती है।

6.3.1 विभिन्न वार्तालापों के लिए प्राकृतिक संकेत में शामिल कुछ गतिविधियाँ

- अँगुली की वर्तनी का अभ्यास करना।
- अपना परिचय देते हुए परिवार के बारें में बताना।
- आदेश देने का अभ्यास करना।
- स्थानों की पहचान करना।
- भाषाओं के साथ अनुभव का वर्णन करना।
- अवकाश गतिविधियों के बारे में बात करना।

- लोगों की पहचान करना।
- अपने निवास पर चर्चा करते हुए चेहरे के साथ संवाद करना।
- आदेश देना।
- बुनियादी निर्देश देनाः जरूरतों को व्यक्त करना।
- परिवार के बारे में बात करना।
- रोजमर्रा की गतिविधियों के बारे में बात करना।
- दूसरों के साथ गतिविधियों के बारे में बात करना।
- वर्तमान लोगों की पहचान करना।
- व्यक्तिगत वस्तुओं का वर्णन करना।
- खोयी हुई वस्तुओं का वर्णन करना।
- खाने के लिए जगह का सुझाव देना।
- प्रवृत्तियों के बारे में राय देना।
- व्यक्तिगत गुणों के बारे में राय देना।
- व्यक्तिगत गुणों की तुलना करना।
- गलत जगह पर रखी गई वस्तु की तलाश करना।
- अपने ज्ञान और क्षमताओं पर चर्चा करना।
- किसी के बारे में राय मांगना।
- योजनाएं बनाना और रद्द करना।
- व्यक्तिगत लक्ष्यों पर चर्चा करना।
- कहानियों का वर्णन।
- भूमिका परिवर्तन के साथ समझौते की क्रियाओं का वर्णन करना।

- पात्रों के बीच भूमिका परिवर्तन आदान–प्रदान करना।
- प्रतिक्रियाओं का वर्णन करना।
- दिशा–निर्देश देना।
- वस्तुओं का स्थान बताना।
- प्रतिक्रियाओं का वर्णन करना।
- अभिवादन और विदा लेना।
- व्यवधानों को कम करना।
- दूसरों को चीज़ों के बारे में सूचित रखना।
- दैनिक समाचार के बारें में बात करना।
- मोहल्ला/गली में हुई किसी घटना के बारें में वर्णन करना।

दुनिया भर में श्रवण बाधित लोगों के समुदायों द्वारा चर्चा के तहत उपयोग की जाने वाली भाषाएँ संकेत भाषाएँ होते हैं। वे प्राकृतिक भाषाएँ हैं, इस अर्थ में कि वे किसी के द्वारा सचेत रूप से आविष्कार नहीं की गई हैं, बल्कि जहां भी श्रवण बाधित लोगों को एक–दूसरे के साथ नियमित रूप से इकट्ठा होने और संवाद करने का अवसर मिलता उस समय पर वे अनायास विकसित हुआ हैं।

बोली जाने वाली मौखिक भाषाओं से सांकेतिक भाषाऔं को नहीं ली गयी हैं; उनकी अपनी स्वतंत्र शब्दावली और अपनी व्याकरणिक संरचनाएँ होती हैं। हालाँकि ऐसी कल्पित संकेत प्रणालियाँ मौजूद हैं जो बोली जाने वाली मौखिक भाषाओं (जैसे हस्ताक्षरित अंग्रेजी, हस्ताक्षरित हिंदी, हस्ताक्षरित तमिल, हस्ताक्षरित मराठी आदि) पर आधारित हैं। ऐसी प्रणालियाँ प्राकृतिक भाषाएँ नहीं हैं, और वे रुचि का आधारित बना हुआ विषय नहीं हैं। बल्कि, भाषाविद और संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिक प्राकृतिक संकेत भाषाओं में रुचि रखते हैं जो एक श्रवण बाधित पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में बिना निर्देश के पारित की जाती हैं, और दुनिया भर में अपने स्वयं के समुदायों में श्रवण बाधित लोगों द्वारा उपयोग की जाती हैं ।

6.3.2 सामान्य वार्तालापों के दौरान सांकेतिक भाषा की कविताएँ

सांकेतिक भाषाएँ अभिव्यक्ति की पूरी श्रृंखला प्रदर्शित करती हैं जैसे बोली जाने वाली मौखिक भाषाएँ अपने उपयोगकर्ताओं को प्रदान करती हैं। विभिन्न सामाजिक सन्दर्भों के लिए भिन्न–भिन्न शैलियाँ

अपनाई जाती हैं। कुछ श्रवण बाधित समुदायों में कहानी कहने को एक कला के रूप में विकसित किया गया है। श्रवण बाधित कवि कलात्मक कविता रचते है।

सांकेतिक भाषा में, छवियों को संप्रेषित करने के लिए भाषाओं के गठनात्मक तत्वों का प्रबंधन करना, भावनाएँ, और विचार जरुरी होगा। सांकेतिक भाषा वह सब कुछ कर सकती है जो बोली जाने वाली किसी भी मौखिक भाषा कर सकती है। अब हम इसकी जांच की ओर मुड़ते हैं कि यह सांकेतिक भाषओं में ऐसा कैसे करता है।

कविता, भाषा को रोजमर्रा के संचार के उसके प्राथमिक कार्य से कहीं आगे ले जाती है। भाषा के रूपों और अर्थों में कलात्मक ढंग से हेरफेर करके कवि मानवीय अनुभव की विशेष या उन्नत समझ से संबंधित एक संदेश देता है। दर्शकों के मन में एक छवि का प्रभाव या ध्यान केंद्रित करने के लिए छंद और अनुप्रास जैसे उपकरण किसी कविता को बनाने के लिए उसकी सार्थक सामग्री को स्पष्ट कर सकते हैं। एक पारंपरिक अर्थ को जानबूझकर इस तरह से विकृत किया जा सकता है कि कवि जिस परिप्रेक्ष्य को प्रस्तुत करना चाहता है उसे बढ़ाया जा सके।

कवि द्वारा उपयोग किए गए उपकरणों में हाथ के आकार का दोहरावपूर्ण उपयोग शामिल हैं जो संक्रमणकालीन आंदोलनों के उन्मूलन के परिणामस्वरूप होता है। पूरा कविताओं की विशेषता एक या दो बुनियादी हाथों की आकृतियों से हो सकती है, जैसे कि विस्तारित तर्जनी हाथ की आकृति या वह आकृति जो सभी अंगुलियों को फैलाती है। सौन्दर्यपरक प्रभाव मौखिक कविता में तुकबंदी या अनुप्रास के समान होता है। जबकि सांकेतिक भाषा उपयोगकर्ता की चेहरे, अंगुलियों, तर्जनी और शरिर के गति को तरह तरह से बनाए रखा या संशोधित किया जाता है क्यों कि वे भी संकेतों का हिस्सा है। कविता की पंक्तियाँ कुशलतापूर्वक होती हैं इसका निर्माण इस प्रकार किया जाता है कि एक चिन्ह के अंत और दूसरे के आरंभ के बीच संक्रमण के परिणामस्वरूप होने वाली गतिविधियों को छोड़ दिया जाता है, जिससे प्रवाहित छंद का निर्माण हो सकता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी क – नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए ।

ख– इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की मिलान करें।

प्र **1-** विभिन्न वार्तालापों के लिए प्राकृतिक संकेतों में शामिल कुछ गतिविधियाँ बताइये ?

_____

_____

_____

प्र 2- सांकेतिक भाषा में कविताओं को कैसे करते है ?

_____
_____
_____

6.3.3 सामान्य वार्तालापों के दौरान सांकेतिक भाषा के चुटकुले

बधिर हास्य को चुटकुलों की दो मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है, जैसे इन श्रेणियों में भाषा से संबंधित चुटकुले और बधिर अनुभव चुटकुले शामिल हैं। इन श्रेणियों से पूर्ण रूप से आनंद लेने के लिए या तो सांकेतिक भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है, या फिर यह जानना आवश्यक है कि बधिर होना कैसा होता है। श्रेणियों को उपविभाजित किया जा सकता है, लेकिन अधिकांश बधिर हास्य इनमें से एक या दोनों वर्गीकरणों में शामिल होंगे।

भाषा आधारित हास्य के सबसे आम प्रकारों में से एक है चुटकुला। चुटकलों के कई प्रकार हैं, और लोग हमेशा इस बात पर सहमत नहीं हो सकते कि कौन सा चुटकुला सही है, लेकिन चुटकुला का मूल विचार शब्दों पर एक नाटक है जिसमें हास्यपूर्ण दोहरे अर्थ का सुझाव देने के लिए होमोफोन या रूपकों का उपयोग किया जाता है। इस प्रकार का चुटकुला इसे प्रस्तुत करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली भाषा पर बहुत निर्भर करता है। इस चुटकुले में समध्वनि और रूपक दोनों प्रकार की सामग्री का प्रयोग किया जाता है। होमोफोन के समतुल्य सांकेतिक भाषा वह संकेत हो सकता है जिसमें सभी या अधिकांश पैरामीटर समान होता है।

हालाँकि कई चुटकले पूरी तरह से उन्हें व्यक्त करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली भाषा पर निर्भर करते हैं, कुछ चुटकलों के लिए एक से अधिक भाषाओं की समझ की आवश्यकता होती है, और हास्य प्रभाव प्राप्त करने के लिए एक या दोनों भाषाओं में होमोफोन्स का उपयोग किया जाता है।

भाषा–आधारित हास्य के सबसे सामान्य प्रकारों में से यमक एक है। विभिन्न प्रकार के श्लेष भी इसमे होते हैं, और लोग हमेशा इस बात पर सहमत नहीं हो सकते हैं कि क्या योग्य है, लेकिन श्लेष का मूल विचार शब्दों पर एक नाटक है जो एक विनोदी दोहरे अर्थ का सुझाव देने के लिए होमोफ़ोन या रूपकों का उपयोग करता है।

इस प्रकार का चुटकुले इसे प्रस्तुत करने के लिए उपयोग की जाने वाली भाषा पर बहुत निर्भर है। एक भाषा में होमोफ़ोन का एक सेट किसी अन्य भाषा में दोहराया नहीं जाएगा। परिणामस्वरूप, किसी चुटकुले का अनुवाद नई भाषा में उसके पंच लाइन के समान लगने वाले शब्दों के उचित

प्रयोग पर निर्भर करता है, अन्यथा समान अर्थ व्यक्त करना असफल हो जाएगा। यह प्रभाव विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है, जिससे अक्सर लोगों को इस बात का दुःख होता है कि अनुवाद में कौन सी महत्वपूर्ण या मनोरंजक जानकारी खो गई है।

इसी तरह, भारतीय सांकेतिक भाषा सहित कई भाषाओं में आम मुहावरों का अपना अनूठा संग्रह होता है, जिसका उपयोग लोग अपनी रूपक कल्पना के लिए कर सकते हैं। इन वाक्यांशों के अर्थ अक्सर इतने विशिष्ट और सूक्ष्म होते हैं कि उनका वर्णन किसी ऐसे व्यक्ति के लिए करना मुश्किल या असंभव होता है जो यह नहीं जानता कि बड़ा होकर उनका क्या मतलब है या उनका उपयोग कैसे करना है।

6.3.4 सामान्य वार्तालापों के दौरान सांकेतिक भाषा के कहानियाँ

सांकेतिक भाषा का उपयोग करके कहानियाँ सुनाना – कहानी सुनाने का समय किसा बच्चे को भी नई और रोमांचक दुनिया से परिचित कराने का एक मज़ेदार तरीका है, जो उनके ध्यान और जुड़ाव को विकसित करने, उनकी कल्पना को बढ़ाने और नई शब्दावली सीखने में उनकी मदद करता है। जब आप अपने बच्चे को सांकेतिक भाषा में कहानियाँ सुना रहे हों, तो सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आपके संकेतों की गति के बजाय आपकी स्पष्टता और सटीकता होना जरुरी है।

सांकेतिक भाषा वर्णमाला के साथ एक मज़ेदार चीज़ एबीसी कहानी बनाना है। एबीसी कहानियां किसी चीज़ का प्रतिनिधित्व करने के लिए सांकेतिक भाषा वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर का उपयोग करती हैं। उदाहरण के लिए, "C" हस्तरेखा का प्रयोग कॉफी पीने के लिए किया जा सकता है। एबीसी कहानियों को ए–टू–जेड कहानियां भी कहा जाता है। वे मनोरंजन और शैक्षिक उपकरण दोनों हैं जिनका उपयोग सांकेतिक भाषा कौशल विकसित करने में मदद के लिए किया जाता है। वे सांकेतिक भाषा का अभ्यास करते समय अभिव्यंजक होने और एक अनूठी कहानी बनाने के लिए अपनी कल्पना का उपयोग करने का अवसर प्रदान करते हैं। चूँकि यह सांकेतिक भाषा का एक अभिव्यंजक रूप है, इसलिए इसकी व्याख्या करने और इसे लिखने का कोई वास्तविक तरीका नहीं है। एबीसी कहानी अवश्य देखी जानी चाहिए और इसका अनुसरण करने के लिए आपको सांकेतिक भाषा समझने की आवश्यकता है। इससे दर्शकों को देखने के साथ–साथ सीखने का भी मौका मिलता है।

सांकेतिक भाषा का उपयोग करके कहानियाँ सुनाने के लिए कुछ सुझाव

- सुनिश्चित करें कि आपका बच्चा किताब, आपका चेहरा और आपके द्वारा इस्तेमाल किए जा रहे संकेतों को देख सकता है। इससे उन्हें यह समझने में मदद मिलेगी कि कहानी सुनाने के तत्व आपस में कैसे जुड़े हुए हैं।

- सुनिश्चित करें कि आप पर पर्याप्त रोशनी हो ताकि आपका बच्चा आपके चेहरे के भाव और संकेतों को आसानी से देख सके।

- उनका ध्यान बनाए रखने के लिए आँखों से संपर्क बनाएँ।
- पात्रों की भावनाओं को दिखाने के लिए चेहरे के भावों का भरपूर उपयोग करें।
- कहानी के पात्रों के अनुरूप हाव – भाव और तौर – तरीके इस्तेमाल करने की कोशिश करें, जैसे हाथी के लिए बड़ा, ज़ोरदार और भारी होना और चूहे के लिए छोटा और डरपोक होना।
- अगर आप अपनी आवाज़ का इस्तेमाल कर रहे हैं, तो अलग–अलग पात्रों के लिए अलग–अलग आवाज़ों का इस्तेमाल करें। भले ही आपका बच्चा आपकी आवाज़ न सुन पाए, लेकिन वह आपके हाव–भाव और हाव–भाव देखकर पात्रों के उन तत्वों को समझ जाएगा।
- याद रखें, कहानी सुनाना मज़ेदार रखें और जितना हो सके उतना अभिव्यंजक बनें

याद रखें, आपकी कहानियाँ हमेशा किताबों से ही नहीं आती हैं। आप अपने और अपने परिवार के बारे में वास्तविक जीवन की कहानियाँ बता सकते हैं। यह परिवार के अन्य सदस्यों को शामिल करने का एक बढ़िया तरीका है क्योंकि वे अपने और आपके परिवार के अन्य लोगों के बारे में कहानियाँ बता सकते हैं। आप सचमुच रचनात्मक हो सकते हैं और परिवार के फोटोग्राफों का उपयोग करके एक कहानी की किताब बना सकते हैं, या परिवार के किसी अवकाश या मनोरंजक गतिविधि के बारे में मिलकर एक स्क्रैप बुक बना सकते हैं और अपने बच्चे के साथ उस कहानी को फिर से सुना सकते हैं ।

बोध प्रश्न

टिप्पणी क – नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए ।

ख – इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की मिलान करें ।

प्र 3– सांकेतिक भाषा के चुटकुले के बारें में बताइए

_____

_____

_____

प्र 4– सांकेतिक भाषा में कहानियों को व्यक्त करने की क्या फायदा है ?

_____

_____

_____

6.4 सारांश

सांकेतिक भाषाएँ अभिव्यक्ति की पूरी श्रृंखला को प्रदर्शित करती हैं जो बोली जाने वाली मौखिक भाषाएँ अपने उपयोगकर्ताओं को प्रदान करती हैं। विभिन्न सामाजिक संदर्भों के लिए विभिन्न शैलियों को अपनाया जाता है; कुछ श्रवण बाधित समुदायों में कथा–कथन को एक कला के रूप में उन्नत किया गया है; श्रवण बाधित कवि संकेतों में कलात्मक कविता बनाते हैं, छवियों, भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने के लिए भाषाओं के रचनात्मक तत्वों को जोड़ते हैं। सांकेतिक भाषा वह सब कुछ कर सकती है जो बोली जाने वाली मौखिक भाषा कर सकती है। संक्षिप्त सामान्य वार्तालापों में कविताएँ, कहानियाँ औक चुटकुले की इस्तेमाल प्राकृतिक संकेतों का अभ्यास करते हैं।

6.5 बोध प्रश्नों के उत्तर

उ0 1 - विभिन्न वार्तालापों के लिए प्राकृतिक संकेतों में शामिल कुछ गतिविधियाँ

- अँगुली की वर्तनी का अभ्यास करना।
- अपना परिचय देते हुए परिवार के बारें में बताना।
- आदेश देने का अभ्यास करना।
- स्थानों की पहचान करना।
- भाषाओं के साथ अनुभव का वर्णन करना ।
- अवकाश गतिविधियों के बारे में बात करना।
- लोगों की पहचान करना।
- अपने निवास पर चर्चा करते हुए चेहरे के साथ संवाद करना।
- आदेश देना।
- बुनियादी निर्देश देनाः जरूरतों को व्यक्त करना।
- परिवार के बारे में बात करना।
- रोजमर्रा की गतिविधियों के बारे में बात करना।
- दूसरों के साथ गतिविधियों के बारे में बात करना।
- वर्तमान लोगों की पहचान करना।

उ0 2- **सांकेतिक भाषा में कविताएँ**

कुछ श्रवण बाधित समुदायों में कहानी कहने को एक कला के रूप में विकसित किया गया है। श्रवण बाधित कवि कलात्मक कविता रचते हैं। कवि द्वारा उपयोग किए गए उपकरणों में हाथ के आकार का दोहरावपूर्ण उपयोग शामिल हैं जो संक्रमणकालीन आंदोलनों के उन्मूलन के परिणामस्वरूप होता है। पूरा कविताओं की विशेषता एक या दो बुनियादी हाथों की आकृतियों से हो सकती है, जैसे कि विस्तारित तर्जनी हाथ की आकृति या वह आकृति जो सभी अंगुलियों को फैलाती है। सौन्दर्यपरक प्रभाव मौखिक कविता में तुकबंदी या अनुप्रास के समान होता है। जबकि सांकेतिक भाषा उपयोगकर्ता की चेहरे, अंगुलियों, तर्जनी और शरिर के गति को तरह तरह से बनाए रखा या संशोधित किया जाता है क्यों कि वे भी संकेतों का हिस्सा है। कविता की पंक्तियाँ कुशलतापूर्वक होती हैं इसका निर्माण इस प्रकार किया जाता है कि एक चिन्ह के अंत और दूसरे के आरंभ के बीच संक्रमण के परिणामस्वरूप होने वाली गतिविधियों को छोड़ दिया जाता है, जिससे प्रवाहित छंद का निर्माण हो सकता है।

उ0 3- **सांकेतिक भाषा के चुटकुले**

बधिर हास्य को चुटकुलों की दो मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है, जैसे इन श्रेणियों में भाषा से संबंधित चुटकुले और बधिर अनुभव चुटकुले शामिल हैं। इन श्रेणियों से पूर्ण रूप से आनंद लेने के लिए या तो सांकेतिक भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है, या फिर यह जानना आवश्यक है कि बधिर होना कैसा होता है। श्रेणियों को उपविभाजित किया जा सकता है, लेकिन अधिकांश बधिर हास्य इनमें से एक या दोनों वर्गीकरणों में शामिल होंगे।

उ0 4- **सांकेतिक भाषा में कहानियाँ**

सांकेतिक भाषा का उपयोग करके कहानियाँ सुनाना – कहानी सुनाने का समय किसा बच्चे को भी नई और रोमांचक दुनिया से परिचित कराने का एक मज़ेदार तरीका है, जो उनके ध्यान और जुड़ाव को विकसित करने, उनकी कल्पना को बढ़ाने और नई शब्दावली सीखने में उनकी मदद करता है। जब आप अपने बच्चे को सांकेतिक भाषा में कहानियाँ सुना रहे हों, तो सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आपके संकेतों की गति के बजाय आपकी स्पष्टता और सटीकता होना जरुरी है। सांकेतिक भाषा वर्णमाला के साथ एक मज़ेदार चीज़ ष्एबीसी कहानीष बनाना है। एबीसी कहानियां किसी चीज़ का प्रतिनिधित्व करने के लिए सांकेतिक भाषा वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर का उपयोग करती हैं। उदाहरण के लिए, "C" हस्तरेखा का प्रयोग कॉफी पीने के लिए किया जा सकता है।

6.6 अभ्यास कार्य

प्र0–1 संक्षिप्त सामान्य वार्तालापों में प्राकृतिक संकेतों का अभ्यास करना जरुरी क्यों है ?

प्र0–2 संक्षिप्त सामान्य वार्तालापों में रोजमर्रा क्रियाओं को प्राकृतिक संकेतों का अभ्यास की आवश्यकता पर अपने विचार दीजिए।

6.7 चर्चा के बिन्दु

प्र0–1 आपके अपने पाठशाला में संक्षिप्त सामान्य वार्तालापों के दौरान कहानी को प्राकृतिक संकेतों का अभ्यास पर चर्चा कीजिये ।

6.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- आरसीआई. (2011), संचार विकल्प और बहरेपन वाले छात्र, नई दिल्लीः भारतीय पुनर्वास परिषद प्रेस प्रकाशन।
- ग्रेगरी, एस., और माइल्स, डी. (1991), बहरा होना,लंदनः पिंटर प्रेस।
- टॉमकिंस, डब्लू. (1969), भारतीय सांकेतिक भाषा, न्यूयॉर्कःडोवर प्रकाशन।
- पावर, डी. और लेह, जी. (2004),श्रवण बाधित छात्रों को शिक्षित करना–वैश्विक परिप्रेक्ष्य,वाशिंगटन, डीसीः गैलॉडेट यूनिवर्सिटी प्रेस।
- मूरेस, डोनाल्ड एफ. (1990),बहरेपन के शैक्षिक और विकासात्मक पहलू,गैलॉडेटः यूनिवर्सिटी प्रेस।
- जोन्स, एम. (2002), "संस्कृति के रूप में बहरापनः एक मनोसामाजिक परिप्रेक्ष्य",न्यूयॉर्कः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
- पावर, डी.,और लेह, जी.(2004) श्रवण बाधित छात्रों को शिक्षित करना–वैश्विक परिप्रेक्ष्य, वाशिंगटन, डीसीः गैलॉडेट यूनिवर्सिटी प्रेस।
- पेट्टाला, आर. (2020),श्रवण बाधित बच्चों के लिए पाठ्यचर्या संबंधी पहलू,नई दिल्लीः कनिष्क प्रकाशक।

इकाई 7

बातचीत और चर्चाओं में लिंग, संख्या, व्यक्ति, काल और पहलू को सांकेतिक भाषा में व्यक्त करना सीखना

इकाई संरचना

7.1 प्रस्तावना

7.2 इकाई के उद्देश्य

7.3 श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ बातचीत और चर्चाओं में लिंग, संख्या, व्यक्ति, काल और पहलू को सांकेतिक भाषा में व्यक्त करना सीखना।

7.3.1 श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ बातचीत और चर्चाओं में लिंग को सांकेतिक भाषा में व्यक्त करना सीखना।

7.3.2 श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ बातचीत और चर्चाओं में संख्या के संबंधित विषयों को सांकेतिक भाषा में व्यक्त करना सीखना।

7.3.3 श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ बातचीत और चर्चाओं में व्यक्ति के संबंधित विषयों को सांकेतिक भाषा में व्यक्त करना सीखना।

7.3.4 श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ बातचीत और चर्चाओं में काल और पहलू को सांकेतिक भाषा में व्यक्त करना सीखना।

7.4 सारांश

7.5 बोध प्रश्नों के उत्तर

7.6 अभ्यास कार्य

7.7 चर्चा के बिन्दु

7.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

7.1 प्रस्तावना

श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ बातचीत और चर्चाओं के दौरान भारतीय सांकेतिक भाषा (आई. एस. एल.) में लिंग, संख्या, व्यक्ति, काल और पहलू जैसे व्याकरणिक तत्वों को व्यक्त करना सीखने में विशिष्ट चीजों को ध्यान में रखना, समझना और अभ्यास करना जरुरी है। इन कौशलों को विकसित करने के लिए अलग–अलग जगहों और स्तरों पर अभ्यास करना आवश्यक होगा। इस इकाई मे सांकेतिक भाषा माध्यम से श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ बातचीत और चर्चाओं में लिंग, संख्या, व्यक्ति, काल और पहलू को व्यक्त करना सीखना और अभ्यास करने की कोशिश करेंगे।

7.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप इस योग्य हो जायेगे कि–

- श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ बातचीत और चर्चाओं में लिंग को सांकेतिक भाषा में व्यक्त करना सीखने की महत्व के बारें मे समझेंगे।
- श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ बातचीत और चर्चाओं में संख्या के संबंधित विषयों को सांकेतिक भाषा में व्यक्त करना सीखने की महत्व के बारे मे चर्चा कर सकेगे।
- श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ बातचीत और चर्चाओं में व्यक्ति के संबंधित विषयों को सांकेतिक भाषा में व्यक्त करना सीखने की महत्व के बारें मे समझेंगे।
- श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ बातचीत और चर्चाओं में काल और पहलू को सांकेतिक भाषा में व्यक्त करना सीखने का अनुप्रयोग कर सकेगे।

7.3 श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ बातचीत और चर्चाओं में लिंग, संख्या, व्यक्ति, काल और पहलू को सांकेतिक भाषा व्यक्त करना सीखना

बातचीत और चर्चाओं के अंतर्गत दुनिया भर के श्रवण बाधित समुदायों द्वारा उपयोग किया जाने वाले एक विकल्प सांकेतिक भाषा होता है। वे प्राकृतिक सांकेतिक भाषाएँ हैं, इसलिए कि वे सांकेतिक भाषाएँ जानबूझकर किसी के द्वारा आविष्कार नहीं किया गया है, बल्कि जहां भी श्रवण बाधित लोगों को एकत्र होने और एक–दूसरे के साथ नियमित रूप से संवाद करने का अवसर मिलता है, वहां स्वचालित रूप से विकसित होता है। सांकेतिक भाषाएँ बोली जाने वाली मौखिक भाषाओं से नहीं बनी हैं; उनका अपनी स्वतंत्र शब्दावलियाँ और उनकी अपनी व्याकरणिक संरचनाएँ। हालाँकि कुछ हस्ताक्षरित भाषाएँ काल्पनिक संकेत प्रणालियाँ भी मौजूद हैं, जो बोली जाने वाली मौखिक भाषाओं (जैसे हस्ताक्षरित) पर आधारित हैं, सांकेतिक हिंदी, सांकेतिक तमिल, सांकेतिक मराठी आदि), ऐसी प्रणालियाँ प्राकृतिक भाषाएँ नहीं हैं, और वे यहाँ रुचि की वस्तु नहीं हैं। बल्कि, भाषाविदों और संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिकों की रुचि उन प्राकृतिक सांकेतिक भाषाओं में है जो एक

श्रवण बाधित पीढ़ी से दूसरी श्रवण बाधित पीढ़ी तक बिना किसी निर्देश के हस्तांतरित होती हैं, और दुनिया भर में अपने समुदायों में श्रवण बाधित लोगों द्वारा उपयोग की जाती हैं।

सांकेतिक भाषा के विभिन्न पहलुओं को सीखने से पहले, हमें विभिन्न अवधारणाओं, शब्दों, वाक्यांशों और वाक्यों को व्यक्त करना और सांकेतिक भाषा की कुछ बुनियादी चीजों को भी समझना आवश्यक होगा। सांकेतिक भाषा की विशेषताएं, घटक संचार को इतना प्रभावी बनाते हैं। इस संबंध में हर किसी को दोषरहित संवाद करने के लिए सांकेतिक भाषा के सभी महत्वपूर्ण पहलुओं को सीखना चाहिए।

सांकेतिक भाषा के भाषाई तत्व संकेत (इशारे) हैं, जिनमें से प्रत्येक को 5 मापदंडों द्वारा वर्णित किया जा सकता है– ए) हाथ का आकार, बी) हाथ का अभिविन्यास, सी) स्थान, डी) गति और ई) गैर–मैनुअल घटक। किसी एक घटक में परिवर्तन आम तौर पर पूरे सांकेतिक भाषा का चिह्न के अर्थ को बदल देता है। इसलिए इन पाँच मापदंडों को ढंग से अभ्यास करना एक धारा प्रवाह सांकेतिक भाषा में संप्रेषण के लिए उपयुक्त होगा। सांकेतिक भाषा में संवाद के लिए सभी को इनके बारे में जानकारी होना अतिआवश्यक चीज होगा।

The movement of the hands is depicted by the arrow marks. The definitions of the arrow marks are as follows:
हाथों की गति तीर के चिन्ह के द्वारा दर्शाई गई है। तीर के चिन्हों की परिभाषा इस प्रकार है:

Hand moves up
हाथ ऊपर जाता है

Hand moves down
हाथ नीचे आता है

Hand moves from
right to left
हाथ दाहिने से बायें जाता है

Hand moves from
left to right
हाथ बायें से दाहिने जाता है

Hand moves
side to side
repeatedly
हाथ एक ओर से दूसरी ओर
कई बार जाता है

Hand moves
up and down
repeatedly
हाथ ऊपर से नीचे
कई बार जाता है

Hand moves from
right to left
in a slant
हाथ तिरछी दिशा में
दाहिने से बायें जाता है

Hand moves from
left to right in a slant
हाथ तिरछी दिशा में
बायें से दाहिने जाता है

Hand moves from
right to left in a slant
repeatedly
हाथ तिरछी दिशा में दाहिने से
बायें कई बार जाता है

Hand moves from
left to right in a slant
repeatedly
हाथ दाहिने से बायें
कूदता हुआ जाता है

Hand hops from
right to left
हाथ बायें से दाहिने
कूदता हुआ जाता है

Hand hops from
left to right
हाथ दाहिने से बायें
वक्राकार जाता है

Hand moves from
right to left in a curve
हाथ बायें से दाहिने वक्राकार जाता है

Hand moves from
left to right in a curve
हाथ बायें से दाहिने वक्राकार जाता है

Hand moves from
side to side in a curve repeatedly
हाथ इधर से उधर वक्राकार कई बार जाता है

Hand moves in a vertical circle

हाथ लम्बवत् गोले में जाता हैहै

Hand moves in a horizontal circle

हाथ क्षैतिज गोले में जाता है

Hand moves in a vertical circle and twists

हाथ लम्बवत् गोले में जाते हुए मुड़ता है

Hand moves in a horizontnal circle and twists

हाथ क्षैतिज गोले में जाते हुए मुड़ता है

Hand moves horizontally forward in a semicircle while twisting

हाथ क्षैतिज दिशा में अर्धवृत्ताकार आगे जाते हुए मुड़ता है

Hand moves horizontally backward in a semicircle while twisting

हाथ क्षैतिज दिशा में अर्धवृत्ताकार पीछे जाते हुए मुड़ता है

Hand moves vertically forward in a semicircle while twisting

हाथ लम्बवत् दिशा में अर्धवृत्ताकार आगे जाते हुए मुड़ता है

Hand moves vertically backward in a semicircle while twisting

हाथ लम्बवत् दिशा में अर्धवृत्ताकार पीछे जाते हुए मुड़ता है

Hand moves from right to left in a wavy motion

हाथ लहराते हुए दाहिनी से बायीं ओर जाता है

Hand moves from left to right in a wavy motion

हाथ लहराते हुए बायीं से दाहिनी ओर जाता है

Hand moves from right to left in a zigzag motion

हाथ वक्राकार मुड़ते हुए दाहिनी से बायीं ओर जाता है

Hand moves from left to right in a zigzag motion

हाथ वक्राकार मुड़ते हुए बायीं से दाहिनी ओर जाता है

Wriggle fingers

हिलती हुई उँगलियां

Shake whole hand

हिलता हुआ पूरा हाथ

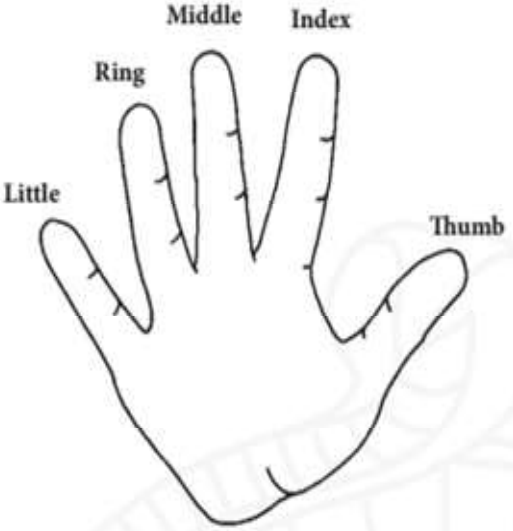

Thumb finger - अंगूठा
Index finger - तर्जनी
Middle finger - मध्यमा
Ring finger - अनामिका
Little finger - छोटी उँगली

Names of the Fingers
हथेलियों के आकार

Open hand
खुला हाथ

Bent hand
मुड़ा हाथ

Five hand
हाथ की पाँचों उँगलियां

Bent Five hand
मुड़े हाथ की पाँचों उँगलियां

Claw hand
पंजाकार हाथ

Bowl hand
कटोरे जैसा हाथ

Fist hand
मुट्ठी

Thumbs-up hand
थम्स-अप हाथ

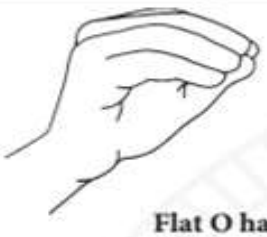

Flat O hand
चोंच जैसा हाथ

Full O hand
पूर्ण शून्याकार हाथ

O hand
शून्याकार हाथ

Zero hand
ध्यानमुद्राकार हाथ

One hand
तर्जनी

V hand
V आकार हाथ

Closed Two hand
बंद हाथ की दो उँगलियां

Bent V hand
मुड़ा V आकार हाथ

Three hand
हाथ की तीन उँगलियां

Closed Four hand
बंद हाथ की चार उँगलियां

C hand
C आकार हाथ

Full C hand
पूर्ण C आकार हाथ

U hand
U आकार हाथ

Full U hand
पूर्ण U आकार हाथ

L hand
L आकार हाथ

Y hand
Y आकार हाथ

A

(Sign-1) (संकेत-1)

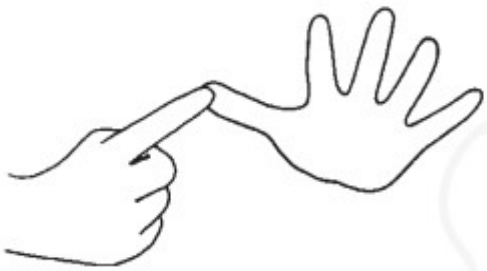

A

(Sign-2) (संकेत-2)

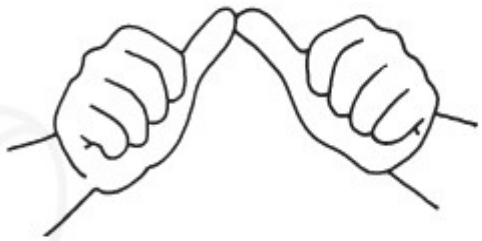

B

(Sign-1) (संकेत-1)

B

(Sign-2) (संकेत-2)

C

D

E

F

G

H

I
(Sign-1)
(संकेत-1)

I
(Sign-2)
(संकेत-2)

J

K

L

M

N

O
(Sign-1)
(संकेत-1)

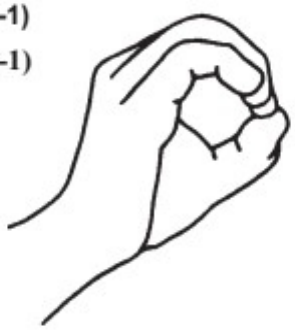

O
(Sign-2)
(संकेत-2)

P

Q

R

S

T
(Sign-1)
(संकेत-1)

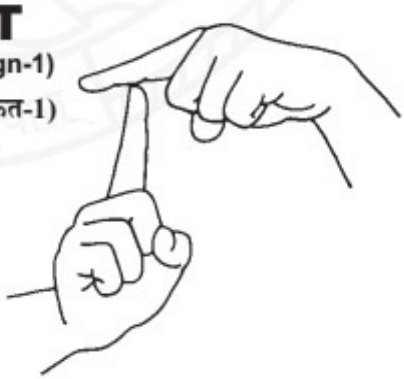

T
(Sign-2)
(संकेत-2)

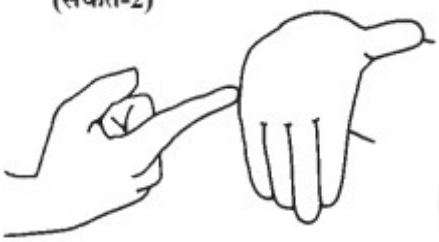

U
(Sign-1)
(संकेत-1)

U
(Sign-2)
(संकेत-2)

V

W

X

Y

Z

7.3.1 श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ बातचीत और चर्चाओं में लिंग को सांकेतिक भाषा में व्यक्त करना सीखना

Man - पुरुष

Woman – महिला

BOY

Sign **"FATHER"** (Pg:37). Place right **"Bent"** hand, facing down, at chest level and move down slightly.

लड़का

पिता (पृष्ठ 37) को साँकेतिक भाषा में बतायें व दाहिने झुके हाथ को नीचे की ओर करके वक्ष स्तर से नीचे लायें।

GIRL

Sign **"MOTHER (Sign-1)"** (Pg:37). Place right **"Bent"** hand, facing down, at chest level and move down slightly.

लड़की

माता (संकेत-1) (पृष्ठ 37) को साँकेतिक भाषा में बतायें व दाहिने झुके हाथ को नीचे की ओर करके वक्ष स्तर से नीचे लायें।

FATHER

Place right **"Fist"** with thumb and index finger touching, facing out, near the mouth and twist in.

पिता

दाहिनी मुट्ठी (अंगूठा तर्जनी को छू रहा हो) व
बाहर करके मुँह के पास लायें व अंदर की अ
घुमायें।

FATHER

Place right **"Fist"** with thumb and index finger touching, facing out, near the mouth and twist in.

पिता

दाहिनी मुट्ठी (अंगूठा तर्जनी को छू रहा हो) व
बाहर करके मुँह के पास लायें व अंदर की अं
घुमायें।

WOMAN

Sign **"MOTHER (Sign-1)"** (Pg:37). Place right **"Bent"** hand, facing down, pointing left, at head level.

स्त्री

माता (पृष्ठ 37) को सांकेतिक भाषा में बतायें
दाहिने झुके हाथ को बायीं ओर करके सिर त
ऊपर लायें।

MOTHER (Sign-1)

Place right **"One"** hand, facing left, on the right side of the nose.

माता (संकेत -1)

दाहिने हाथ की तर्जनी को (दिशा बायीं ओर
बाहर की ओर से नाक को दाहिनी ओर छुएं।

7-3-2 श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ बातचीत और चर्चाओं में संख्या के संबंधित विषयों को सांकेतिक भाषा में व्यक्त करना सीखना

0 – ZERO (शून्य)

1 – ONE (एक)

2 – TWO (दो)

3 – THREE (तीन)

4 – FOUR (चार)

5 – FIVE (पाँच)

6 – SIX (छः) (संकेत-1)

6 – SIX (छः) (संकेत-2)

7 – SEVEN (सात) (संकेत-1)

7 – SEVEN (सात) (संकेत-2)

8 – EIGHT (आठ) (संकेत - 1)

8 – EIGHT (आठ) (संकेत - 2)

9 – NINE (नौ) (संकेत - 1)

9 – NINE (नौ) (संकेत - 2)

10 – TEN (दस) (संकेत - 1)

10 – TEN (दस) (संकेत - 2)

50 – FIFTY (पचास)

500 – FIVE HUNDRED (पाँच सौ)

5,000 – FIVE THOUSAND (पाँच हज़ार)

50,000 – FIFTY THOUSAND (पचास हज़ार)

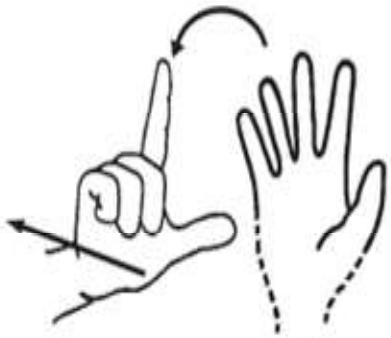

5,00,000 – FIVE LAKHS (पाँच लाख)

5,00,00,000 – FIVE CRORES (पाँच करोड़)

FIRST

Place right **"One"** hand, facing out, at chest level and twist in.

प्रथम

वक्ष स्तर पर दाहिने हाथ की तर्जनी (दिशा बाहर की ओर हो) को मोड़कर अंदर की ओर करें।

SECOND

Place right **"V"** hand, facing out, at chest level, touch the thumb and middle finger twice.

द्वितीय

दाहिने आकार हाथ (दिशा बाहर की ओर हो) से अंगूठे व मध्यमा को दो बार स्पर्श करें।

LAST

Place left **"Fist"**, right **"One"** hand, facing in, right touching the back of the left, at shoulder level and move down the right hand in an arc up to elbow.

अंतिम

कंधे के स्तर पर बायीं मुट्ठी को अंदर की ओर करके दाहिने हाथ की तर्जनी (दिशा अंदर की ओर हो) को ऊपर बायें हाथ से अर्धवृत्ताकार घुमाते हुए नीचे कोहनी तक लायें।

7-3-3 श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ बातचीत और चर्चाओं में व्यक्ति के संबंधित विषयों को सांकेतिक भाषा में व्यक्त करना सीखना

PARENT

Sign **"FATHER"** (Pg:37) and sign **"MOTHER (Sign-1)"** (Pg:37).

माता-पिता

पहले **पिता** (पृष्ठ 37) को सांकेतिक भाषा में बतायें फिर **माता** (पृष्ठ 37) को सांकेतिक भाषा में बतायें।

BABY

Place both **"Bent"** hands, facing up, at chest level and sway from side to side.

बच्चा

दोनों झुके हाथों को वक्ष स्तर पर ऊपर की ओर करके एक से दूसरी तरफ़ हिलायें।

FATHER

Place right **"Fist"** with thumb and index finger touching, facing out, near the mouth and twist in.

पिता

दाहिनी मुट्ठी (अंगूठा तर्जनी को छू रहा हो) को बाहर करके मुँह के पास लायें व अंदर की ओर घुमायें।

MOTHER (Sign-1)

Place right **"One"** hand, facing left, on the right side of the nose.

माता (संकेत -1)

दाहिने हाथ की तर्जनी को (दिशा बायीं ओर हो) बाहर की ओर से नाक को दाहिनी ओर छुएं।

MOTHER (Sign-2)

Place right **"Bent"** hand, facing left, on the right temple and shoulder.

माता (संकेत -2)

दाहिने झुके हाथ को बायीं ओर करके माथे के दाहिने भाग से छूते हुए कंधे तक लायें।

MOTHER (Sign-3)

Place right **"Fist"**, facing left, on the cheek, twice.

माता (संकेत -3)

दाहिनी मुट्ठी को बायीं दिशा में करके गाल को दो बार छुएं।

SON

Sign **"FATHER"** (Pg:37). Place both **"Bent"** hands, facing each other, right pointing left, left pointing right, right above the left, at chest level and move down till waist.

पुत्र

पिता (पृष्ठ 37) को साँकेतिक भाषा में बतायें व दोनों झुके हाथों को एक-दूसरे की ओर करके वक्ष स्तर से कमर स्तर तक नीचे लायें।

DAUGHTER

Sign **"MOTHER (Sign-1)"** (Pg:37). Place both **"Bent"** hands, facing each other, right pointing left, left pointing right, right above the left, at chest level and move down till waist.

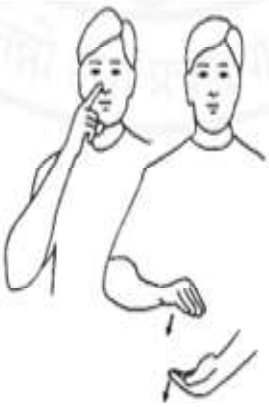

पुत्री

माता (संकेत-1) (पृष्ठ 37) को साँकेतिक भाषा में बतायें व दोनों झुके हाथों को एक दूसरे की ओर करके वक्ष स्तर से कमर स्तर तक नीचे लायें।

BROTHER

Sign **"FATHER"** (Pg:37). Place right **"Bent"** hand, facing down, on the shoulder and move to right in an arc.

भाई

पिता (पृष्ठ 37) को सांकेतिक भाषा में बतायें व दाहिने झुके हाथ को नीचे की ओर करके कंधे से चाप के आकार में घुमाकर नीचे लायें।

SISTER

Sign **"MOTHER (Sign-1)"** (Pg:37). Place right **"Bent"** hand, facing down, on the shoulder and move to right in an arc.

बहन

माता (संकेत-1) (पृष्ठ 37) को सांकेतिक भाषा में बतायें व दाहिने झुके हाथ को नीचे की ओर करके कंधे से चाप के आकार में घुमाकर नीचे लायें।

GRANDFATHER

Sign **"FATHER"** (Pg:37). Place right **"Fist"**, facing left, at chest level and hop forward.

दादा

पिता (पृष्ठ 37) को सांकेतिक भाषा में बतायें व वक्ष स्तर पर दाहिनी मुट्ठी (दिशा बायीं ओर हो) को रखकर आगे कूदें।

GRANDMOTHER

Sign **"MOTHER (Sign-1)"** (Pg:37). Place right **"Fist"**, facing left, at chest level and hop forward.

दादी

माता (संकेत-1) (पृष्ठ 37) को सांकेतिक भाषा में बतायें व वक्ष स्तर पर दाहिनी मुट्ठी (दिशा बायीं ओर हो) को रखकर आगे कूदें।

GRAND SON

Sign **"FATHER"** (Pg:37). Place both **"Bent"** hands, facing each other, right pointing left, left pointing right, right above the left, on left side, at chest level and move to right side in an arc till waist.

पोता

पिता (पृष्ठ 37) को साँकेतिक भाषा में बतायें व दोनों झुके हाथों को एक दूसरे की ओर करके ऊपर-नीचे करें और वक्ष स्तर से कमर स्तर तक थोड़ा सा घुमाकर नीचे लायें।

GRAND DAUGHTER

Sign **"MOTHER (Sign-1)"** (Pg:37). Place both **"Bent"** hands, facing each other, right pointing left, left pointing right, right above the left, on left side, at chest level and move to right side in an arc till waist.

पोती

माता (संकेत-1) (पृष्ठ 37) को साँकेतिक भाषा में बतायें व दोनों झुके हाथों को एक दूसरे की ओर करके ऊपर-नीचे करें और वक्ष स्तर से कमर स्तर तक थोड़ा सा घुमाकर नीचे लायें।

BOY

Sign **"FATHER"** (Pg:37). Place right **"Bent"** hand, facing down, at chest level and move down slightly.

लड़का

पिता (पृष्ठ 37) को साँकेतिक भाषा में बतायें व दाहिने झुके हाथ को नीचे की ओर करके वक्ष स्तर से नीचे लायें।

GIRL

Sign **"MOTHER (Sign-1)"** (Pg:37). Place right **"Bent"** hand, facing down, at chest level and move down slightly.

लड़की

माता (संकेत-1) (पृष्ठ 37) को साँकेतिक भाषा में बतायें व दाहिने झुके हाथ को नीचे की ओर करके वक्ष स्तर से नीचे लायें।

CHILDREN

Place both **"Bent"** hands, facing down, side by side, at chest level and hop away from each other.

बच्चे

दोनों झुके हाथों को वक्ष स्तर पर नीचे की ओर करके कुदवाते हुए एक-दूसरे से दूर लायें।

HUSBAND (Sign-1)

Sign **"FATHER"** (Pg:37) and sign **"WEDDING (Sign-2)"**.

पति (संकेत-1)

पहले **पिता** (पृष्ठ 37) को सांकेतिक भाषा में बतायें फिर **विवाह (संकेत-2)** को सांकेतिक भाषा में बतायें।

HUSBAND (Sign-2)

Sign **"FATHER"** (Pg:37). Place right **"One"** hand, facing in, at left shoulder and move towards right shoulder in an arc.

पति (संकेत-2)

पिता को सांकेतिक भाषा में बतायें व दाहिने चाप के आकार हाथ को अंदर की ओर करके बायें से दाहिने कंधे तक घुमाकर लायें।

WIFE (Sign-1)

Sign **"MOTHER (Sign-1)"** (Pg:37) and sign **"WEDDING (Sign-2)"** (Pg:42).

पत्नी (संकेत-1)

पहले **माता** (संकेत-1) को सांकेतिक भाषा में बतायें (पृष्ठ 37) फिर **विवाह** (संकेत-2) को सांकेतिक भाषा में बतायें (पृष्ठ 42)।

WIFE (Sign-2)

Sign **"MOTHER (Sign-1)"** (Pg:37). Place right **"One"** hand, facing in, at left shoulder and move towards right shoulder in an arc.

पत्नी (संकेत-2)

माता (संकेत-1) को सांकेतिक भाषा में बतायें (पृष्ठ 37) व दाहिने चाप के आकार हाथ को अंदर की ओर करके बायें से दाहिने कंधे तक घुमाकर लायें।

PERSON

Place right **"C"** hands, pointing out, at face level and move down.

व्यक्ति

दाहिने C आकार हाथ को बाहर की ओर करके चेहरे के स्तर से नीचे लायें।

FRIEND

Place both **"Open"** hands, left facing up, pointing right, right facing down, pointing out, right on the left, at chest level then hold each other and shake.

मित्र

दोनों खुले हाथों को वक्ष स्तर पर एक-दूसरे प
ऐसे रखें कि उनकी दिशा एक-दूसरे की ओर हो व
उन्हें हिलायें।

ENEMY

Place both **"One"** hands with index finger bending, at chest level, hook and move apart.

शत्रु

दोनों हाथों की मुड़ी तर्जनी को वक्ष स्तर पर फँसा
व विपरीत दिशा में खींचें।

NEIGHBOUR

Place both **"Open"** hands, facing each other, slantingly with fingers touching, at chest level, move down and apart then, turn up the right hand in an arc.

पड़ोसी

दोनों तिरछे खुले हाथों को वक्ष स्तर पर एक-दूसरे के सामने उँगलियों से छूते हुए नीचे लायें व अलग करें। दाहिने हाथ को घुमाकर बाहर करें।

7.3.4 श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ बातचीत और चर्चाओं में काल और पहलू को सांकेतिक भाषा में व्यक्त करना सीखना संख्या को व्यक्त करना

TODAY

Place right **"One"** hand, pointing down, at waist level, move up and down slightly, twice.

आज

कमर स्तर पर दाहिने हाथ की तर्जनी को नीचे करके ऊपर नीचे दो बार करें।

YESTERDAY

Place right **"One"** hand, facing in, at head level and bend down behind.

बीता हुआ कल

सिर के स्तर पर दाहिने हाथ की तर्जनी को अंदर करके पीछे की ओर गिरायें।

TOMORROW

Place right **"One"** hand, facing down, pointing left, at chest level, move forward in an arc, facing up.

आने वाला कल

वक्ष स्तर पर दाहिने हाथ की तर्जनी को नीचे करके आगे की ओर अर्धवृत्ताकार घुमायें।

DAY BEFORE

Place right **"One"** hand, facing in, at head level and hop backward, twice.

एक दिन पहले

सिर के स्तर पर दाहिने हाथ की तर्जनी को अंदर करके पीछे की ओर दो बार कुदवायें।

DAY AFTER

Place right **"One"** hand, pointing left, at chest level and hop forward, twice.

एक दिन बाद

वक्ष स्तर पर दाहिने हाथ की तर्जनी को बायीं ओर करके आगे दो बार कुदवायें।

प्रत्येक भाषा में समय यानी काल के लिए अलग–अलग व्याकरणिक नियम होते हैं। अंग्रेजी में क्रिया शब्द समय (वर्तमान, भविष्य, भूत) को इंगित करने के लिए (-ed, -ing, -s) प्रत्ययों से विभक्त करते हैं। अलग–अलग तरीकों से काल के लिए भारतीय सांकेतिक भाषा के अपने व्याकरणिक नियम हैं। एक अंग्रेजी वाक्य में, उसने मुझे पिछले साल एक उपहार दिया था, देना के लिए भूतकाल को दिया होना चाहिए। इसे भारतीय सांकेतिक भाषा अर्थ में अनावश्यक माना जा सकता है; हालाँकि, यह अंग्रेजी में गलत नहीं है। भारतीय सांकेतिक भाषा में (कुछ अन्य बोली जाने वाली मौखिक भाषाओं की तरह), पिछले वर्ष चिन्ह पहले से ही एक भूतकाल है, पिछले साल उसने मुझे उपहार दिया था। संकेतों एक काल्पनिक समय रेखा का उपयोग समय संकेतक के रूप में करता है ताकि यह पता लगाया जा सके कि भूत या भविष्य कितना दूर है। समय माप को व्यक्त करने में स्थान, गति, दोहराव और चेहरे का व्याकरण सामान्य संकेतक हैं।

बोध प्रश्न

टिप्पणीक – नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए ।

ख – इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की मिलान करें ।

प्र 1– बातचीत और चर्चाओं में लिंग को सांकेतिक भाषा मे कैसे व्यक्त करेंगे ?

_____

_____

_____

प्र 2– बातचीत और चर्चाओं में को संख्या को सांकेतिक भाषा मे कैसे व्यक्त करेंगे ?

_____

_____

_____

प्र 3– बातचीत और चर्चाओं में व्यक्ति को कैसे व्यक्त करते हैं ?

_____

_____

_____

प्र 4– बातचीत और चर्चाओं में को काल को सांकेतिक भाषा मे कैसे व्यक्त करेंगे ?

_____

_____

7.4 सारांश

किसी भी अन्य बोली जाने वाली मौखिक भाषा की तरह, सांकेतिक भाषा भी एक भाषा है। यह दुनिया भर में श्रवण बाधित लोगों द्वारा उपयोग की जाने वाली स्वदेशी भाषा को संदर्भित करता है। यह मूल रूप से संचार का एक दृश्य रूप है जिसमें हाथ, चेहरा और शरीर शामिल होता है, जिसमें होंठों का थोड़ा सा हिलना भी शामिल होता है। लिंग, संख्या, व्यक्ति, काल किसी भी भाषा में एक व्याकरणिक विशेषता है, लेकिन सांकेतिक भाषाओं में यह कुछ अलग है। प्रतिनिधि टाइपोलॉजिकल नमूने के अनुसार दुनिया की लगभग आधी भाषाऔं में व्याकरण के रुप में लिंग को अत्यंत महत्व माना जाता हैं क्योंकि हर भाषा में लिंग एक व्याकरण के रुप में शामिल है। यह एक ऐसा गुण है जो संज्ञाओं को वर्गों में अलग करता है। ये वर्ग अक्सर अर्थपूर्ण होते हैं और अक्सर जैविक लिंग से जुड़े होते हैं, यही कारण है कि कई भाषाओं में पुलिंग और स्त्रीलिंग लिंग कहा जाता है। इसी तरह कई व्याकरण अंश श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ संप्रेषण के दौरान उपयोग किया जाता है। व्याकरण अंश लिंग, संख्या, व्यक्ति, काल, पहलू को सांकेतिक भाषा में व्यक्त करना सीखना प्रत्येक सांकेतिक भाषा को आकर्षक बनाता है। इसलिए, जब हम श्रवण बाधित बच्चों के साथ संवाद करते हैं तो इन्हें सीखना और अभ्यास करना बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन, स्वाभाविक बातचीत में इन सुविधाओं का उपयोग करना स्वाभाविक रूप से आकस्मिक बन जाता है। श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ संवाद करने के इच्छुक प्रत्येक व्यक्ति को सांकेतिक भाषा में व्याकरण के इन पहलुओं को अवश्य सीखना चाहिए।

7.5 बोध प्रश्नों के उत्तर

उ 1. श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ बातचीत और चर्चाओं में लिंग को सांकेतिक भाषा में व्यक्त करना सीखना।

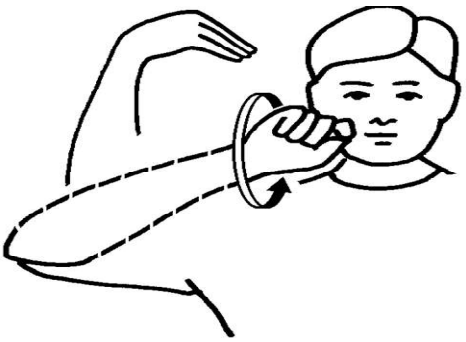

Man - पुरुष

Woman – महिला

BOY

Sign **"FATHER"** (Pg:37). Place right **"Bent"** hand, facing down, at chest level and move down slightly.

लड़का

पिता (पृष्ठ 37) को साँकेतिक भाषा में बतायें व दाहिने झुके हाथ को नीचे की ओर करके वक्ष स्तर से नीचे लायें।

GIRL

Sign **"MOTHER (Sign-1)"** (Pg:37). Place right **"Bent"** hand, facing down, at chest level and move down slightly.

लड़की

माता (संकेत-1) (पृष्ठ 37) को साँकेतिक भाषा में बतायें व दाहिने झुके हाथ को नीचे की ओर करके वक्ष स्तर से नीचे लायें।

FATHER

Place right **"Fist"** with thumb and index finger touching, facing out, near the mouth and twist in.

पिता

दाहिनी मुट्ठी (अंगूठा तर्जनी को छू रहा हो) व
बाहर करके मुँह के पास लायें व अंदर की अ
घुमायें।

FATHER

Place right **"Fist"** with thumb and index finger touching, facing out, near the mouth and twist in.

पिता

दाहिनी मुट्ठी (अंगूठा तर्जनी को छू रहा हो) व
बाहर करके मुँह के पास लायें व अंदर की अं
घुमायें।

WOMAN

Sign **"MOTHER (Sign-1)"** (Pg:37). Place right **"Bent"** hand, facing down, pointing left, at head level.

स्त्री

माता (पृष्ठ 37) को सांकेतिक भाषा में बतायें
दाहिने झुके हाथ को बायीं ओर करके सिर त
ऊपर लायें।

MOTHER (Sign-1)

Place right **"One"** hand, facing left, on the right side of the nose.

माता (संकेत -1)

दाहिने हाथ की तर्जनी को (दिशा बायीं ओर
बाहर की ओर से नाक को दाहिनी ओर छुएं।

उ 2- श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ बातचीत और चर्चाओं में संख्या को सांकेतिक भाषा में व्यक्त करना सीखना

0 – ZERO (शून्य)

1 – ONE (एक)

2 – TWO (दो)

3 – THREE (तीन)

4 – FOUR (चार)

5 – FIVE (पाँच)

6 – SIX (छः) (संकेत-1)

6 – SIX (छः) (संकेत-2)

7 – SEVEN (सात) (संकेत-1)

7 – SEVEN (सात) (संकेत-2)

8 – EIGHT (आठ) (संकेत - 1)

8 – EIGHT (आठ) (संकेत - 2)

9 – NINE (नौ) (संकेत - 1)

9 – NINE (नौ) (संकेत - 2)

10 – TEN (दस) (संकेत - 1)

10 – TEN (दस) (संकेत - 2)

50 – FIFTY (पचास)

500 – FIVE HUNDRED (पाँच सौ)

5,000 – FIVE THOUSAND (पाँच हज़ार)

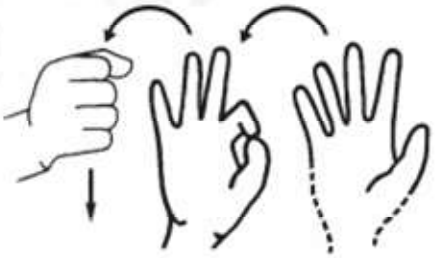

50,000 – FIFTY THOUSAND (पचास हज़ार)

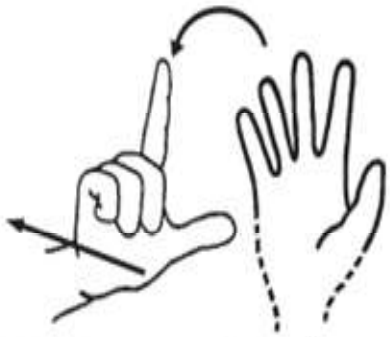

5,00,000 – FIVE LAKHS (पाँच लाख)

5,00,00,000 – FIVE CRORES (पाँच करोड़)

FIRST

Place right **"One"** hand, facing out, at chest level and twist in.

प्रथम

वक्ष स्तर पर दाहिने हाथ की तर्जनी (दिशा बाहर की ओर हो) को मोड़कर अंदर की ओर करें।

SECOND

Place right **"V"** hand, facing out, at chest level, touch the thumb and middle finger twice.

द्वितीय

दाहिने आकार हाथ (दिशा बाहर की ओर हो) से अंगूठे व मध्यमा को दो बार स्पर्श करें।

LAST

Place left **"Fist"**, right **"One"** hand, facing in, right touching the back of the left, at shoulder level and move down the right hand in an arc up to elbow.

अंतिम

कंधे के स्तर पर बायीं मुट्ठी को अंदर की ओर करके दाहिने हाथ की तर्जनी (दिशा अंदर की ओर हो) को ऊपर बायें हाथ से अर्धवृत्ताकार घुमाते हुए नीचे कोहनी तक लायें।

उ 3- श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ बातचीत और चर्चाओं में व्यक्ति से संबंधित चीजों को सांकेतिक भाषा में व्यक्त करना

PARENT

Sign **"FATHER"** (Pg:37) and sign **"MOTHER (Sign-1)"** (Pg:37).

माता-पिता

पहले **पिता** (पृष्ठ 37) को साँकेतिक भाषा में बतायें फिर **माता** (पृष्ठ 37) को साँकेतिक भाषा में बतायें।

BABY

Place both **"Bent"** hands, facing up, at chest level and sway from side to side.

बच्चा

दोनों झुके हाथों को वक्ष स्तर पर ऊपर की ओर करके एक से दूसरी तरफ़ हिलायें।

FATHER

Place right **"Fist"** with thumb and index finger touching, facing out, near the mouth and twist in.

पिता

दाहिनी मुट्ठी (अंगूठा तर्जनी को छू रहा हो) को बाहर करके मुँह के पास लायें व अंदर की ओर घुमायें।

MOTHER (Sign-1)

Place right **"One"** hand, facing left, on the right side of the nose.

माता (संकेत -1)

दाहिने हाथ की तर्जनी को (दिशा बायीं ओर हो) बाहर की ओर से नाक को दाहिनी ओर छुएं।

MOTHER (Sign-2)

Place right **"Bent"** hand, facing left, on the right temple and shoulder.

माता (संकेत -2)

दाहिने झुके हाथ को बायीं ओर करके माथे के दाहिने भाग से छूते हुए कंधे तक लायें।

MOTHER (Sign-3)

Place right **"Fist"**, facing left, on the cheek, twice.

माता (संकेत -3)

दाहिनी मुट्ठी को बायीं दिशा में करके गाल को दो बार छुएं।

SON

Sign **"FATHER"** (Pg:37). Place both **"Bent"** hands, facing each other, right pointing left, left pointing right, right above the left, at chest level and move down till waist.

पुत्र

पिता (पृष्ठ 37) को साँकेतिक भाषा में बतायें व दोनों झुके हाथों को एक-दूसरे की ओर करके वक्ष स्तर से कमर स्तर तक नीचे लायें।

DAUGHTER

Sign **"MOTHER (Sign-1)"** (Pg:37). Place both **"Bent"** hands, facing each other, right pointing left, left pointing right, right above the left, at chest level and move down till waist.

पुत्री

माता (संकेत-1) (पृष्ठ 37) को साँकेतिक भाषा में बतायें व दोनों झुके हाथों को एक दूसरे की ओर करके वक्ष स्तर से कमर स्तर तक नीचे लायें।

BROTHER

Sign **"FATHER"** (Pg:37). Place right **"Bent"** hand, facing down, on the shoulder and move to right in an arc.

भाई

पिता (पृष्ठ 37) को साँकेतिक भाषा में बतायें व दाहिने झुके हाथ को नीचे की ओर करके कंधे से चाप के आकार में घुमाकर नीचे लायें।

SISTER

Sign **"MOTHER (Sign-1)"** (Pg:37). Place right **"Bent"** hand, facing down, on the shoulder and move to right in an arc.

बहन

माता (संकेत-1) (पृष्ठ 37) को साँकेतिक भाषा में बतायें व दाहिने झुके हाथ को नीचे की ओर करके कंधे से चाप के आकार में घुमाकर नीचे लायें।

GRANDFATHER

Sign **"FATHER"** (Pg:37). Place right **"Fist"**, facing left, at chest level and hop forward.

दादा

पिता (पृष्ठ 37) को साँकेतिक भाषा में बतायें व वक्ष स्तर पर दाहिनी मुट्ठी (दिशा बायीं ओर हो) को रखकर आगे कूदें।

GRANDMOTHER

Sign **"MOTHER (Sign-1)"** (Pg:37). Place right **"Fist"**, facing left, at chest level and hop forward.

दादी

माता (संकेत-1) (पृष्ठ 37) को साँकेतिक भाषा में बतायें व वक्ष स्तर पर दाहिनी मुट्ठी (दिशा बायीं ओर हो) को रखकर आगे कूदें।

उ 4- श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ बातचीत और चर्चाओं में काल और पहलू को सांकेतिक भाषा में व्यक्त करना सीखनासंख्या को व्यक्त करना

TODAY

Place right **"One"** hand, pointing down, at waist level, move up and down slightly, twice.

आज

कमर स्तर पर दाहिने हाथ की तर्जनी को नीचे करके ऊपर नीचे दो बार करें।

YESTERDAY

Place right **"One"** hand, facing in, at head level and bend down behind.

बीता हुआ कल

सिर के स्तर पर दाहिने हाथ की तर्जनी को अंदर करके पीछे की ओर गिरायें।

TOMORROW

Place right **"One"** hand, facing down, pointing left, at chest level, move forward in an arc, facing up.

आने वाला कल

वक्ष स्तर पर दाहिने हाथ की तर्जनी को नीचे करके आगे की ओर अर्धवृत्ताकार घुमायें।

DAY BEFORE

Place right **"One"** hand, facing in, at head level and hop backward, twice.

एक दिन पहले

सिर के स्तर पर दाहिने हाथ की तर्जनी को अंदर करके पीछे की ओर दो बार कुदवायें।

DAY AFTER

Place right **"One"** hand, pointing left, at chest level and hop forward, twice.

एक दिन बाद

वक्ष स्तर पर दाहिने हाथ की तर्जनी को बायीं ओर करके आगे दो बार कुदवायें।

7.6 अभ्यास कार्य

प्र0–1 श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ बातचीत और चर्चाओं में काल को सांकेतिक भाषा मे कैसे व्यक्त करेंगे ?

प्र0–2 श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ बातचीत और चर्चाओं में लिंग, संख्या, काल और पहलू को सांकेतिक भाषा मे अभ्यास करने की आवश्यकता को स्पष्ट कीजिए।

7.7 चर्चा के बिन्दु

प्र0–1 श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ बातचीत और चर्चाओं में लिंग और पहलू को सांकेतिक भाषा मे अभ्यास करने का प्रयास कीजिये।

प्र0–2 श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ बातचीत और चर्चाओं में लिंग, संख्या, काल और पहलू को सांकेतिक भाषा मे अभ्यास करने की आवश्यकता पर चर्चा कीजिए।

7.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- आरसीआई. (2011),संचार विकल्प और बहरेपन वाले छात्र, नई दिल्लीः भारतीय पुनर्वास परिषद प्रेस।
- कोकली, डी. और बेकर–शेंक, सी. एल. (1980), अमेरिकी सांकेतिक भाषा एक छात्र पाठ, सिल्वर स्प्रिंगः टी.जे. प्रकाशक।
- पोलाक, डी. (1985),सीमित श्रवण वाले शिशु और प्रीस्कूलर के लिए शैक्षिक ऑडियोलॉजी (दूसरा संस्करण): स्प्रिंगफील्ड, आईएलः सी.सी. थॉमस प्रकाशन.
- पावर, डी., और लेह, जी. (2004), श्रवण बाधित छात्रों को शिक्षित करना–वैश्विक परिप्रेक्ष्य, वाशिंगटन, डीसीः गैलॉडेट यूनिवर्सिटी प्रेस।
- मूरेस, डोनाल्ड एफ. (1990),बहरेपन के शैक्षिक और विकासात्मक पहलू,गैलॉडेटः यूनिवर्सिटी प्रेस।
- जोन्स, एम. (2002), "संस्कृति के रूप में बहरापनः एक मनोसामाजिक परिप्रेक्ष्य",न्यूयॉर्कः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
- पावर, डी.,और लेह, जी.(2004) श्रवण बाधित छात्रों को शिक्षित करना–वैश्विक परिप्रेक्ष्य, वाशिंगटन, डीसीः गैलॉडेट यूनिवर्सिटी प्रेस।
- पेट्टाला, आर. (2020),श्रवण बाधित बच्चों के लिए पाठ्यचर्या संबंधी पहलू,नई दिल्लीः कनिष्क प्रकाशक।

इकाई 8

बातचीत और चर्चाओं के दौरान भारतीय सांकेतिक भाषा में वाक्य संरचना का अभ्यास करना

इकाई संरचना

8.1 प्रस्तावना

8.2 इकाई के उद्देश्य

8.3 भारतीय सांकेतिक भाषा (आई.एस.एल) में शब्दों और वाक्यों की संरचना

8.3.1 भारतीय सांकेतिक भाषा संकेतों को संयोजित करने के तरीके

8.4 श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ बातचीत और चर्चाओं के दौरान भारतीय सांकेतिक भाषा में वाक्य संरचना का प्रयोग एवं अभ्यास करना सीखना

8.4.1 भारतीय सांकेतिक भाषा में सादा क्रियाओं के साथ शब्द क्रम

8.4.2 भारतीय सांकेतिक भाषा में शब्द–स्तरीय संरचनाएं

8.4.3 किसी संकेत की गति, पुनरावृत्ति, दिशा के आधार पर उसका अर्थ बदलना

8.4.4 अंगुलियों के वर्तनी द्वारा बनाए गए अक्षरों के साथ संयुक्त संकेत

8.4.5 भारतीय सांकेतिक भाषा में वाक्यों के प्रकार

8.4.6 वस्तु–विषय–क्रिया शब्द क्रम

8.4.7 दिशात्मक क्रियाओं के साथ शब्द क्रम

8.5 सारांश

8.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

8.7 अभ्यास कार्य

8.8 चर्चा के बिन्दु

8.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

8.1 प्रस्तावना

सांकेतिक भाषा एक पूर्ण देशी भाषा है जिसको आम तौर पर श्रवण बाधित समुदाय या उनके परिवार या अन्य संबंधित लोगों द्वारा कहानी या परिच्छेद या समाचार इत्यादि कई चीजों को संचार करने के लिए उपयोग किया जाता है। किसी भी भाषा में कहानी या परिच्छेद या समाचार आदि के रूप में संचार करने के लिए वाक्य संरचना बहुत जरुरी है। भारतीय सांकेतिक भाषा मे वाक्य संरचना बोली जाने वाली अन्य मौखिक भाषाओं की तुलना में भिन्न है। इसके बारें में आगामी अनुभागों में जानने की कोशिश करेंगें। वाक्य संरचना, या वाक्यविन्यास, भाषाविज्ञान की एक शाखा है जो भाषाओं के व्याकरण के उत्पन्न होने और वाक्यों के निर्माण के तरीके को समझने का प्रयास करती है। किसी भाषा के मूल वक्ताओं के लिए, वाक्यविन्यास अक्सर सहज महसूस होगा, लेकिन इसे शब्दों में वर्णित करना कठिन हो सकता है। सभी भाषाओं में वाक्यविन्यास अत्यधिक जटिल है। इसका मतलब है कि भाषाविदों को भाषण के नियमों को समझने के लिए भाषण के बारे में सावधानीपूर्वक अध्ययन करने की आवश्यकता है। वाक्यविन्यास भाषाविज्ञान को आमतौर पर शाखायुक्त वृक्ष जैसे आरेखों का उपयोग करके वर्णित किया जाता है जो वाक्य में विभिन्न शब्दों के बीच संबंधों को दर्शाते हैं। लेकिन शिक्षकों और छात्रों के लिए वाक्यविन्यास जानने का क्या अर्थ है। ? सांकेतिक भाषा में व्याकरणिक रूप से सही वाक्य बनाने का तरीका समझना उन छात्रों के लिए आवश्यक है जो अपनी साक्षरता और लेखन कौशल में सुधार करने पर काम कर रहे हैं, क्योंकि यह उन्हें अधिक आत्मविश्वास और सटीकता के साथ वाक्यों को व्यक्त करने की अनुमति दे सकता है। इसलिए भारतीय सांकेतिक भाषा में वाक्यविन्यास की जानकारी और प्रयोग अत्यंत आवश्यक होता है, यह सिर्फ शिक्षकों और छात्रों तक सीमित नहीं बल्की श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ संप्रेषण करने वाले हर व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण है। इस इकाई में इसी वाक्यविन्यास को भारतीय सांकेतिक भाषा में व्यक्त करना सीखने की कोशिश करेंगें ।

8.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप इस योग्य हो जायेगे कि :–

- श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ बातचीत और चर्चाओं में वाक्य संरचना का अभ्यास और प्रयोग भारतीय सांकेतिक भाषा में करने की महत्व के बारें मे समझेंगे।
- भारतीय साकेतिक भाषा में शब्द स्तरीय संरचनांए कर सकेगे।
- भारतीय साकेतिक भाषा के संकेतों को संयोजित कर सकेगे।
- श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ बातचीत और चर्चाओं में वाक्य संरचना का अभ्यास और प्रयोग भारतीय सांकेतिक भाषा में अनुप्रयोग कर सकेगे।
- अंगुलियों के वर्तनी द्वारा बनाए गए अक्षरों के साथ संयुक्त संकेत करने में सक्षम हो सकेगे।

8.3 भारतीय सांकेतिक भाषा (आई.एस.एल) में शब्दों और वाक्यों की संरचना

भारतीय सांकेतिक भाषा एक पूर्ण और संपूर्ण भाषा है, जो अवधारणाओं को अंग्रेजी, हिंदी या किसी अन्य बोली जाने वाली मौखिक या लिखित भाषा की तरह पूरी तरह और उतनी ही जटिलता के साथ व्यक्त कर सकती है। भारतीय सांकेतिक भाषा को एक भाषा की परिभाषा में शामिल किया गया है क्योंकि इसमें एक भाषा के सभी तत्व शामिल हैं ।

सभी मानव भाषाओं में शब्द और वाक्य छोटे–छोटे तत्वों से बने होते हैं। विभिन्न स्तरों पर तत्वों को एकत्रित करके भाषा को एक साथ रखा जाता है। सबसे छोटे स्तर पर, जिसे ध्वनिविज्ञान कहा जाता है, हमें संकेतों के ऐसे हिस्से मिलते हैं जिनका अपना कोई अर्थ नहीं होता है। उदाहरण के लिए, महिला (WOMAN) एक विस्तारित तर्जनी का उपयोग करती है, और नाक के किनारे पर चिन्ह बनाती है। चिन्हों के मुख्य भाग हैं हाथ का आकार, चाल और वह स्थान जहाँ चिन्ह बनाया जाता है।

अगले स्तर पर, आकृति विज्ञान कहा जाता है, जिसमें संकेतों या संकेतों के हिस्सों को एक साथ जोड़ा जा सकता है। उदाहरण के लिए, पत्नी के लिए हम स्त्री और विवाह चिह्नों को साथ में बारीकी से जोड़ सकते हैं, तब यह पत्नी (WIFE) बन जाती है। अक्सर आपको ऐसा लगता होगा कि कोई चीज सिर्फ एक ही संकेत है, लेकिन जब हम करीब से देखते हैं तो पाते हैं कि वह कई हिस्सों से मिलकर बनी है ।

WIFE (Sign-1)

Sign **"MOTHER (Sign-1)"** (Pg:37) and sign **"WEDDING (Sign-2)"** (Pg:42).

पत्नी (संकेत-1)

पहले **माता** (संकेत-1) को साँकेतिक भाषा में बतायें (पृष्ठ 37) फिर **विवाह** (संकेत-2) को साँकेतिक भाषा में बतायें (पृष्ठ 42)।

भाषा संरचना के बारे में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हम शब्दों को लंबे वाक्यों में जोड़ सकते हैं, इसे वाक्यविन्यास/वाक्य रचना कहा जाता है। जब हम वाक्य बनाते हैं, तो शब्दों या संकेतों को वाक्यविन्यास में व्यवस्थित करने कि लिए कई प्रकार और नियम होते हैं। हमें उसकी जानकारी होना आवश्यक है।

उदाहरण के लिए, भारतीय सांकेतिक भाषा में प्रश्न चिह्न का उपयोग करते समय, सामान्य प्रश्न चिह्न WHAT को वाक्य के अंत में रखा जाना चाहिए, आरंभ या मध्य में नहीं। हम असीमित संख्या में वाक्य बना सकते हैं क्योंकि वाक्य बनाने के लिए संकेतों को कई अलग–अलग तरीकों से जोड़ा जा सकता है। ऐसा केवल मनुष्य ही कर सकता है।

भारतीय सांकेतिक भाषा का अपना अनूठा वाक्यविन्यास, व्याकरण और संरचना है, जो बोली जाने वाली मौखिक भाषाओं से अलग है। शिक्षण में भारतीय सांकेतिक भाषा का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए शिक्षकों के लिए इन भाषाई विशेषताओं को समझना आवश्यक होता है।

किसी भाषा में वाक्य संरचना का अध्ययन को वाक्यविन्यास कहा जाता है। यह निरीक्षण करता है कि शब्द वाक्यांशों और वाक्यों में कैसे संयोजित होते हैं। प्रत्येक भाषा का अपना वाक्यविन्यास या वाक्य में शब्द क्रम के नियम होते हैं। कर्ता–क्रिया–कर्म क्रम अंग्रेजी में संरचना का एक उदाहरण है।

निम्नलिखित व्यवस्थाएँ भारतीय सांकेतिक भाषा में कुछ बुनियादी वाक्य संरचनाएँ हैं।

विषय + टिप्पणी जहां विषय सामयिकीकरण है और टिप्पणी एक कथन, प्रश्न या विधेय हो सकती है । इसे उद्देश्य + विधेय के नाम से भी जाना जाता है।

इसके अलावा, समय + कर्ता + विधेय या समय + विषय + टिप्पणी, कर्ता + क्रिया + कर्म भी मौजूद है।

वाक्यविन्यास, वाक्य निर्माण का अध्ययन है। वाक्यविन्यास, वाक्य संरचना के नियमों और सिद्धांतों को भी संदर्भित करती है। सांकेतिक भाषा में, वाक्यविन्यास को शब्द क्रम और गैर–मैनुअल मार्करों के माध्यम से व्यक्त किया जाता है।

सांकेतिक भाषा वाक्य एक विषय–टिप्पणी संरचना का पालन करते हैं। यह अंग्रेजी उद्देश्य–विधेय संरचना के समान है। हालाँकि, विषय हमेशा उद्देश्य होने के बजाय, सांकेतिक भाषा में विषय वह है जिसका उल्लेख टिप्पणी में किया जा रहा है। यह या तो वाक्य का कर्ता या कर्म हो सकता है।

एक वाक्य का कर्ता वह व्यक्ति या वस्तु है जो क्रिया कर रहा है, एक वाक्य की क्रिया वह है जो क्रिया कर रही है, और एक वाक्य का कर्म वह है जो क्रिया प्राप्त कर रहा है। उदाहरण के लिए, वाक्य लड़के ने गेंद को मारी में कर्ता लड़का है, क्रिया मारना है और कर्म गेंद है। सांकेतिक भाषा में शब्द क्रम में कुछ विभिन्न भिन्नताएं होती हैं, जो प्रयुक्त शब्दावली और उद्देश्य पर निर्भर करती हैं।

8.3.1 भारतीय सांकेतिक भाषा संकेतों को संयोजित करने के तरीके

ऐसे कई तरीके हैं जिनके माध्यम से भारतीय सांकेतिक भाषा के अलग अलग संकेत मिलकर एक नए अर्थ के साथ एक नया शब्द बनाते हैं ।

1. संयोजन

उदाहरण - तीन (3) + वर्ष (Y) = 3 Y (1 संकेत)

2.संकेत की पुनरावृत्ति से अर्थ बदलना

उदाहरण - F एक बार करने से F वर्णमाला होता है ।

F को 2 बार करने से शुक्रवार होता है ।

3. अंगुलियों की वर्तनी वर्णमाला और संकेत का प्रयोग

उदाहरण - PM + BOSS करने से प्रधानमंत्री होता है ।

CM + BOSS करने से मुख्यमंत्री होता है ।

अब, हम देखेंगे कि भारतीय सांकेतिक भाषा की शब्द संरचना कैसे काम करती है और कैसे चिह्न मिलकर नए शब्द बनाते हैं। यह भारतीय सांकेतिक भाषा व्याकरण का हिस्सा है। यदि संकेतों को भारतीय सांकेतिक भाषा के नियमों के अनुसार ठीक से संयोजित नहीं किया गया है, तो उनका कोई मतलब नहीं होगा। भारतीय सांकेतिक भाषा सीखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि कैसे भारतीय सांकेतिक भाषा के चिह्नों को सार्थक ढंग से जोड़कर नए शब्द बनाए जा सकते हैं।

8.4 श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ बातचीत और चर्चाओं के दौरान भारतीय सांकेतिक भाषा में वाक्य संरचना का प्रयोग एवं अभ्यास करना सीखना

केवल भारतीय सांकेतिक भाषा शब्दावली सीखना ही पर्याप्त नहीं है। भारतीय सांकेतिक भाषा व्याकरण नियमों के अनुसार भारतीय सांकेतिक भाषा में नए शब्द बनाना सीखना आवश्यक है। उम्मीद है कि जैसे–जैसे आप इसमें बेहतर होते जाएंगे, आपको एहसास होगा कि भारतीय सांकेतिक भाषा किसी भी बोली जाने वाली मौखिक भाषा के बराबर है।

8.4.1 भारतीय सांकेतिक भाषा में सादी क्रियाओं के साथ शब्द क्रम

सादी क्रियाओं का उपयोग करते समय, सांकेतिक भाषा के वाक्य विभिन्न शब्द क्रमों का पालन कर सकते हैं। जबकि अंग्रेजी आम तौर पर केवल कर्ता – क्रिया – कर्म शब्द क्रम का पालन करती है। सादे क्रियाओं का उपयोग करते समय अंग्रेजी वाक्य माँ अपने बच्चों से प्यार करती है के लिए निम्नलिखित सभी वाक्य सांकेतिक भाषा में सही हैं–

कर्ता – क्रिया –कर्म (एस.वी.ओ) – माँ अपने बच्चों को प्यार करती है

वह उसे प्यार करती है ।

माँ उससे प्यार करती है ।

वह अपने बच्चों से प्यार करती है ।

8.4.2 भारतीय सांकेतिक भाषा में शब्द–स्तरीय संरचनाएं

हम भारतीय सांकेतिक भाषा में शब्द–स्तरीय संरचनाओं के तीन उदाहरण देखेंगे जैसे

- संकेत परिवार

  इसमें पुरुष और महिला संबंधित संकेत हैं । जैसे

  स्त्री + सहोदर = बहन

  पुरुष + सहोदर = भाई

BROTHER

Sign **"FATHER"** (Pg:37). Place right **"Bent"** hand, facing down, on the shoulder and move to right in an arc.

भाई

पिता (पृष्ठ 37) को सांकेतिक भाषा में बतायें व दाहिने झुके हाथ को नीचे की ओर करके कंधे से चाप के आकार में घुमाकर नीचे लायें।

SISTER

Sign **"MOTHER (Sign-1)"** (Pg:37). Place right **"Bent"** hand, facing down, on the shoulder and move to right in an arc.

बहन

माता (संकेत-1) (पृष्ठ 37) को सांकेतिक भाषा में बतायें व दाहिने झुके हाथ को नीचे की ओर करके कंधे से चाप के आकार में घुमाकर नीचे लायें।

पुरुष + जन्म = पुत्र

स्त्री + जन्म = पुत्री

SON

Sign **"FATHER"** (Pg:37). Place both **"Bent"** hands, facing each other, right pointing left, left pointing right, right above the left, at chest level and move down till waist.

पुत्र

पिता (पृष्ठ 37) को साँकेतिक भाषा में बतायें व दोनों झुके हाथों को एक-दूसरे की ओर करके वक्ष स्तर से कमर स्तर तक नीचे लायें।

DAUGHTER

Sign **"MOTHER (Sign-1)"** (Pg:37). Place both **"Bent"** hands, facing each other, right pointing left, left pointing right, right above the left, at chest level and move down till waist.

पुत्री

माता (संकेत-1) (पृष्ठ 37) को साँकेतिक भाषा में बतायें व दोनों झुके हाथों को एक दूसरे की ओर करके वक्ष स्तर से कमर स्तर तक नीचे लायें।

पुरुष + विवाह = पति

स्त्री + विवाह = पत्नी

HUSBAND (Sign-1)

Sign **"FATHER"** (Pg:37) and sign **"WEDDING (Sign-2)"**.

पति (संकेत-1)

पहले **पिता** (पृष्ठ 37) को साँकेतिक भाषा में बतायें फिर **विवाह (संकेत-2)** को साँकेतिक भाषा में बतायें।

WIFE (Sign-1)

Sign **"MOTHER (Sign-1)"** (Pg:37) and sign **"WEDDING (Sign-2)"** (Pg:42).

पत्नी (संकेत-1)

पहले **माता** (संकेत-1) को साँकेतिक भाषा में बतायें (पृष्ठ 37) फिर **विवाह** (संकेत-2) को साँकेतिक भाषा में बतायें (पृष्ठ 42)।

जब हम अंग्रेजी से तुलना करते हैं तो देखते हैं कि अंग्रेजी में केवल एक ही शब्द है । लेकिन भारतीय सांकेतिक भाषा में दो चिह्नों का मेल होता है ।

- प्रश्न संकेत

  चेहरा + प्रश्न = कौन

  स्थान + प्रश्न = कहाँ

समय + प्रश्न = कौन सा समय (कब)

दिन + प्रश्न = कौन सा दिन (कब)

जब हम अमेरिकी सांकेतिक भाषा से तुलना करते हैं, तो कौन/कहां आदि का एक ही संकेत होता है , लेकिन भारतीय सांकेतिक भाषा में हमारे पास दो संकेत संयुक्त हैं।

- समय संकेत

संख्या + वर्ष

3 + वर्ष = 3–वर्ष (एकल संकेत)

अंक + महीना

4 + महीना = 4–महीना (एकल संकेत)

अंक + घंटा

2 + घंटा = 2–घंटे (एकल संकेत)

8-4-3 किसी संकेत की गति, पुनरावृत्ति, दिशा के आधार पर उसका अर्थ बदलना

निम्नलिखित को बदलकर संकेतों का अर्थ बदलना संभव है -

- संकेत हस्ताक्षरकर्ता की ओर / दूर जाना

मदद – मैं आपकी मदद करता हूँ / आप मेरी मदद करते हैं

सिखाओ – मैं तुम्हें सिखाता हूँ / तुम मुझे सिखाते हो

अंग्रेजी से तुलना करते समय, यह उल्लेख करना महत्वपूर्ण है कि कौन किसकी मदद कर रहा है, लेकिन भारतीय सांकेतिक भाषा में – यह केवल एक संकेत से स्पष्ट होता है कि सांकेतिक भाषा उपयोगकर्ता की ओर या सांकेतिक भाषा उपयोगकर्ता से दूर मदद की संकेत (अर्थ के आधार पर) कर रहे है।

- संकेत की दुहराव

गुरुवार + + (अंग्रेजी अंगुली वर्तनी एफ संकेत को दो बार करना) जब हम दो बार एक संकेत का उपयोग करते हैं, तो यह प्रत्येक गुरुवार को संदर्भित करता है ।

शनिवार को प्रार्थना के लिए जाना + + , इसका अर्थ है मैं हर शनिवार को प्रार्थना के लिए जाता हूँ ।

मूवी देखें + + इसका अर्थ है मैंने यह मूवी कई बार देखी है ।

श्रवण बाधित मिलन देखें + + इसका अर्थ है मैं इस श्रवण बाधित व्यक्ति से कई बार मिल चुका हूँ ।

बच्चा + + इसका अर्थ है बच्चे

कक्षा बच्चा + + इसका अर्थ है छात्र

शिक्षक बच्चे को पढ़ाता है + + इसका अर्थ है शिक्षक विद्यार्थियों को पढ़ा रहा है ।

- संकेत की गति

विपरीतार्थ शब्द

सफल - असफल

जाना - आना

लाइट चालू - लाइट बंद

यहाँ हाथ का आकार वही है लेकिन गति में बदलाव के साथ अर्थ विपरीत बन जाता है ।

8-4-4 अंगुलियों के वर्तनी द्वारा बनाए गए अक्षरों के साथ संयुक्त संकेत

- समय से संबंधित

A के साथ गर्म = अप्रैल

D के साथ सर्दी = दिसंबर

S के साथ बंद = रविवार

- अंगुलियों के वर्तनी द्वारा बनाए गए अक्षर और एक अन्य संकेत

पी के साथ शीर्ष स्थान = प्रिंसिपल

एल के साथ पुस्तक = पुस्तकालय

टी के साथ सिखाना = प्रशिक्षण

एम के साथ बॉस = मंत्री

- हस्त आकृति के रूप में अंगुलियों के वर्तनी द्वारा बनाए गए अक्षर वाले संकेत

भाषा

कॉलेज / महाविद्यालय

तर्क

पाठ

शिकायत करना

अति आवश्यक

उपयोग

बोध प्रश्न

टिप्पणीक – नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए ।

ख – इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की मिलान करें ।

प्र 1- सांकेतिक भाषा मे सादा क्रियाओं के साथ शब्द क्रम कैसे व्यक्त करेंगे ?

_____
_____
_____

प्र 2- अंगुलियों के वर्तनी द्वारा बनाए गए अक्षरों के साथ संयुक्त संकेतों के बारे में लिखिए ?

_____
_____
_____

8.4.5 भारतीय सांकेतिक भाषा में वाक्यों के प्रकार

सांकेतिक भाषा में भी विभिन्न वाक्य प्रकार होते हैं। ये वाक्य प्रकार शब्द क्रम के समान नहीं हैं। शब्द क्रम उस क्रम को दर्शाता है जिसमें आप अपने शब्दों पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। वाक्य प्रकार दिखाते हैं कि कुछ प्रकार के वाक्य बनाने के लिए गैर–मैन्युअल मार्करों के साथ–साथ शब्द क्रम का उपयोग कैसे करें। हम भारतीय सांकेतिक भाषा (आईएसएल) में चार महत्वपूर्ण वाक्य प्रकारों पर चर्चा करेंगे –

- सरल वाक्य – सूचित करने, बताने के लिए उपयोग किया जाता है ।
- आदेश वाक्य – आदेश देने के लिए उपयोग किया जाता है

  जैसे न खाएँ

  न धूम्रपान करें

- पूछताछ वाक्य - प्रश्न / सवाल करने के लिए उपयोग किया जाता है ।

  जैसे खाना कहाँ ?

  खाना ख़त्म ?

- नकारात्मक वाक्य – नकारात्मक / निषेध सम्बंधित शब्दों के लिए उपयोग और प्रयोग किया जाता है ।

अब हम प्रत्येक वाक्य प्रकार को देखेंगे और व्याकरण के नियमों को समझेंगे ।

आइए कुछ उदाहरण देखें

- सरल वाक्य – आज रात घर देर से जाना (मैं आज रात देर से घर जाऊंगा।) यह एक सरल वाक्य है, जैसे कि सिर्फ सूचित करना या बताना।
- आदेश वाक्य – आज रात घर देर तक नहीं। समय अच्छा। (आज रात घर आने में देर मत करना। समय पर वापस आना।) यह समय पर वापस आने का आदेश है।
- पूछताछ वाक्य (प्रश्न से संबंधित) – आज रात आप देर से घर आए? (क्या आपको आज रात घर आने में देर हो जाएगी?) या आज रात घर का समय आपके लिए अच्छा रहेगा? (क्या आप आज रात समय पर वापस आएंगे?) यह वाक्य एक प्रश्न से संबंधित है।
- नकारात्मक वाक्य – आज रात घर आओ नहीं। (मैं आज रात घर नहीं आऊंगा।) यह एक नकारात्मक वाक्य है ।

सांकेतिक भाषा में तीन प्रकार के प्रश्नों का उपयोग किया जाता है जैसे कि कौन सा प्रश्न, हाँ/नहीं प्रश्न और अलंकारिक प्रश्न। सांकेतिक भाषा में इन प्रश्नों के बीच समझने का एकमात्र तरीका गैर–मैन्युअल मार्करों का उपयोग है। गैर–मैन्युअल मार्कर नकार का एक बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। उदाहरण के लिए, यदि आप हस्ताक्षर करते हैं, मुझे बर्गर पसंद नहीं है, तो एक अलग चेहरे की अभिव्यक्ति का अर्थ बदल सकता है– मुझे वास्तव में बर्गर पसंद नहीं है। समय संकेत आमतौर पर केवल वाक्यों की शुरुआत में ही हस्ताक्षरित होते हैं ।

8.4.6 कर्म – कर्ता – क्रिया शब्द क्रम

सांकेतिक भाषा में, आप किसी वाक्य के विषय के रूप में कर्ता या कर्म का उपयोग कर सकते हैं। विषय को कर्ता के रूप में उपयोग करना से कर्ता – क्रिया – कर्म (अंग्रेजी में एस – वी – ओ शब्द क्रम) शब्द क्रम बनता है। विषय के रूप में कर्म का उपयोग करना से कर्म – कर्ता – क्रिया शब्द क्रम शब्द क्रम में क्रम बनता है ।

विषय	उदाहरण	विषय	टिप्पणी	शाब्दिक अनुवाद
कर्ता (कर्ता – क्रिया – कर्म)	लड़की मारना बॉल	लड़की	मारना बॉल	लड़की ने बॉल को मारी।
कर्म (कर्म – कर्ता – क्रिया)	बॉल लड़की मारी	बॉल	लड़की मारी	बॉल को लड़की ने मारी थी।

8.4.7 दिशात्मक क्रियाओं के साथ शब्द क्रम

दिशात्मक क्रियाएँ वाक्यों में अतिरिक्त अर्थ जोड़ती हैं, जो बदले में, विभिन्न शब्द क्रम विविधताओं में योगदान करती हैं, क्योंकि वाक्य के कर्ता और कर्म को केवल दिशात्मक क्रिया की गति से ही दर्शाया जा सकता है, कभी–कभी केवल क्रिया को एक निश्चित दिशात्मक गति से ही संकेतों मे किया जाता है। समय संकेत आमतौर पर केवल वाक्यों की शुरुआत में ही हस्ताक्षरित होते हैं।

- **समय–विषय–टिप्पणी**

  जब आप सांकेतिक भाषा में किसी अतीत या भविष्य की घटना के बारे में बात करते हैं, तो आप शेष वाक्य पर हस्ताक्षर करने से पहले समय–सीमा स्थापित करेंगे।

  यह एक समय–विषय–टिप्पणी संरचना बनाता है। विषय–टिप्पणी संरचना के लिए शब्द क्रम के समान नियम लागू होते हैं, केवल अब वाक्य की शुरुआत में एक समय संकेत जोड़ा जाता है।

शब्द क्रम	संकेत उदाहरण	शाब्दिक अनुवाद
काल–कर्ता–क्रिया–कर्म	पिछले सप्ताह लड़की मारी बॉल	लड़की ने पिछले हफ्ते बॉल को मारी थी ।

बोध प्रश्न

टिप्पणी क – नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए ।

ख – इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की मिलान करें ।

प्र 3- भारतीय सांकेतिक भाषा में शब्द–स्तरीय संरचनाओं के कुछ उदाहरण लिखिए ?

_____
_____
_____

प्र 4- भारतीय सांकेतिक भाषा (आईएसएल) में चार महत्वपूर्ण वाक्य प्रकारों के बारें में लिखिए ?

_____
_____
_____

8.5 सारांश

सांकेतिक भाषाएँ (जिन्हें हस्ताक्षरित भाषाओं के रूप में भी जाना जाता है) ऐसी भाषाएँ हैं जो बोले गए शब्दों के बजाय अर्थ व्यक्त करने के लिए दृश्य–मैन्युअल पद्धति का उपयोग करती हैं। सांकेतिक भाषाएँ गैर–मैन्युअल मार्करों के संयोजन में मैन्युअल अभिव्यक्ति के माध्यम से व्यक्त की जाती हैं। सांकेतिक भाषाएँ अपने स्वयं के व्याकरण और शब्दकोष के साथ पूर्णतः प्राकृतिक भाषाएँ हैं। आम धारणा के विपरीत, सांकेतिक भाषाओं में जटिल व्याकरणिक संरचनाएँ होती हैं। सांकेतिक भाषाएँ सार्वभौमिक नहीं होती हैं और आमतौर पर परस्पर सुगम नहीं होती हैं, हालाँकि विभिन्न सांकेतिक भाषाओं में समानताएँ होती हैं। सांकेतिक भाषाओं में जटिल वाक्यविन्यास होता है, जिसमें वाक्य संरचना, क्रिया सहमति, नकारात्मक प्रश्नों के नियम शामिल होते हैं। इसलिए श्रवण बाधित व्यक्तियों के साथ बातचीत और चर्चाओं के दौरान भारतीय सांकेतिक भाषा में वाक्य संरचना का प्रयोग एवं अभ्यास करते समय ये सारे चीजों को ध्यान में रखना जरुरी है।

8.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

उ 1- सादे क्रियाओं का उपयोग करते समय, सांकेतिक भाषा के वाक्य विभिन्न शब्द क्रमों का पालन कर सकते हैं।जबकि अंग्रेजी आम तौर पर केवल कर्ता - क्रिया - कर्म शब्द क्रम का पालन करती है। सादे क्रियाओं का उपयोग करते समय अंग्रेजी वाक्य माँ अपने बच्चों से प्यार करती है के लिए निम्नलिखित सभी वाक्य सांकेतिक भाषा में सही हैं -

कर्ता - क्रिया - कर्म (एस.वी.ओ) – माँ अपने बच्चों को प्यार करती है

वह उसे प्यार करती है

माँ उससे प्यार करती है

वह अपने बच्चों से प्यार करती है

उ 2- अंगुलियों के वर्तनी द्वारा बनाए गए अक्षरों के साथ संयुक्त संकेत

समय से संबंधित

A के साथ गर्म = अप्रैल

D के साथ सर्दी = दिसंबर

S के साथ बंद = रविवार

अंगुलियों के वर्तनी द्वारा बनाए गए अक्षर और एक अन्य संकेत

पी के साथ शीर्ष स्थान = प्रिंसिपल

एल के साथ पुस्तक = पुस्तकालय

टी के साथ सिखाना = प्रशिक्षण

एम के साथ बॉस = मंत्री

- हस्त आकृति के रूप में अंगुलियों के वर्तनी द्वारा बनाए गए अक्षर वाले संकेत

भाषा

कॉलेज / महाविद्यालय

तर्क

पाठ

शिकायत करना

अति आवश्यक

उपयोग

उ 3- भारतीय सांकेतिक भाषा में शब्द–स्तरीय संरचनाओं के उदाहरण

संकेत परिवार – इसमें पुरुष और महिला संबंधित संकेत हैं। जैसे

स्त्री + सहोदर = बहन

पुरुष + सहोदर = भाई

BROTHER

Sign **"FATHER"** (Pg:37). Place right **"Bent"** hand, facing down, on the shoulder and move to right in an arc.

भाई

पिता (पृष्ठ 37) को सांकेतिक भाषा में बतायें व दाहिने झुके हाथ को नीचे की ओर करके कंधे से चाप के आकार में घुमाकर नीचे लायें।

SISTER

Sign **"MOTHER (Sign-1)"** (Pg:37). Place right **"Bent"** hand, facing down, on the shoulder and move to right in an arc.

बहन

माता (संकेत-1) (पृष्ठ 37) को सांकेतिक भाषा में बतायें व दाहिने झुके हाथ को नीचे की ओर करके कंधे से चाप के आकार में घुमाकर नीचे लायें।

प्रश्न चिन्ह

चेहरा + प्रश्न = कौन

स्थान + प्रश्न = कहाँ

समय + प्रश्न = कौन सा समय (कब)

दिन + प्रश्न = कौन सा दिन (कब)

जब हम अमेरिकी सांकेतिक भाषा से तुलना करते हैं, तो कौन/कहां आदि का एक ही संकेत होता है , लेकिन भारतीय सांकेतिक भाषा में हमारे पास दो चिह्न संयुक्त हैं।

उ 4. भारतीय सांकेतिक भाषा (आईएसएल) में चार महत्वपूर्ण वाक्य प्रकार

सांकेतिक भाषा में भी विभिन्न वाक्य प्रकार होते हैं। ये वाक्य प्रकार शब्द क्रम के समान नहीं हैं। शब्द क्रम उस क्रम को दर्शाता है जिसमें आप अपने शब्दों पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। वाक्य प्रकार दिखाते हैं कि कुछ प्रकार के वाक्य बनाने के लिए गैर–मैन्युअल मार्करों के साथ–साथ शब्द क्रम का उपयोग कैसे करें।

सरल वाक्य – सूचित करने, बताने के लिए उपयोग किया जाता है।

आदेश वाक्य – आदेश देने के लिए उपयोग किया जाता है।

जैसे न खाएँ

न धूम्रपान करें

पूछताछ वाक्य . प्रश्न / सवाल करने के लिए उपयोग किया जाता है ।

जैसे खाना कहाँ ?

खाना ख़त्म ?

नकारात्मक वाक्य – नकारात्मक / निषेध सम्बंधित शब्दों के लिए उपयोग और प्रयोग किया जाता है ।

अब हम प्रत्येक वाक्य प्रकार को देखेंगे और व्याकरण के नियमों को समझेंगे ।

आइए कुछ उदाहरण देखेंः–

सरल वाक्य – आज रात घर देर से जाना (मैं आज रात देर से घर जाऊंगा।) यह एक सरल वाक्य है, जैसे कि सर्फ सूचित करना या बताना।

आदेश वाक्य – आज रात घर देर तक नहीं। समय अच्छा। (आज रात घर आने में देर मत करना। समय पर वापस आना।) यह समय पर वापस आने का आदेश है।

पूछताछ वाक्य (प्रश्न से संबंधित) – आज रात आप देर से घर आए? (क्या आपको आज रात घर आने में देर हो जाएगी?) या आज रात घर का समय आपके लिए अच्छा रहेगा ? (क्या आप आज रात समय पर वापस आएंगे?) यह वाक्य एक प्रश्न से संबंधित है।

नकारात्मक वाक्य – आज रात घर आओ नहीं । (मैं आज रात घर नहीं आऊंगा।) यह एक नकारात्मक वाक्य है।

8.7 अभ्यास कार्य

प्र0–1 भारतीय संकेत भाषा शब्द–स्तरीय संरचनाओं के उदाहरण बताइये ।

प्र0–2 दिशात्मक क्रियाओं के साथ शब्द क्रम अभ्यास पर टिप्पणि लिखिए।

8.8 चर्चा के बिन्दु

प्र0–1 भारतीय सांकेतिक भाषा (आईएसएल) में चार महत्वपूर्ण वाक्य प्रकारों पर चर्चा कीजिए ?

8.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- बेकर–शेंक, सी., और कोकली, डी. (1980),अमेरिकी सांकेतिक भाषा, व्याकरण और संस्कृति पर एक शिक्षक का संसाधन पाठ, गैलाउडेटः यूनिवर्सिटी प्रेस।
- ग्रीनबर्ग, जोसेफ एच. (1963), सार्थक तत्वों के क्रम के विशेष संदर्भ के साथ व्याकरण के कुछ सार्वभौमिक, कैम्ब्रिजः एमआईटी प्रेस।
- होज़ा, जैक. (2007)। यह वह नहीं है जिस पर आप हस्ताक्षर करते हैं, बल्कि यह है कि आप इस पर हस्ताक्षर कैसे करते हैं। वाशिंगटन डी.सी., गैलॉडेट। लिडेल,
- भारतीय सांकेतिक भाषा शब्दकोश द्विभाषी (अंग्रेजी–हिन्दी). (2016), रामकृष्ण मिशन विद्यालय, कोयंबटूर।
- क्लिमा एड और बेलुगी उर्सुला (1979) भाषा के लक्षण, कैम्ब्रिज एमएः हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- क्लिमा, ई., और बेलुगी, यू. (1979), भाषा के लक्षण,हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज।

इकाई 9

भारतीय सांकेतिक भाषा पाठ्यक्रम पर विचार - सिद्धांत से अभ्यास तक

इकाई संरचना

9.1 प्रस्तावना

9.2 इकाई के उद्देश्य

9.3 भारतीय सांकेतिक भाषा पाठ्यक्रम पर विचारः सिद्धांत से अभ्यास तक

9.3.1 भारतीय सांकेतिक भाषा (ISL) के प्रशिक्षण और प्रयोग के लिए प्रौद्योगिकी के कुछ स्रोत

9.3.1.1 रामकृष्ण मिशन विवेकानंद शैक्षिक और अनुसंधान संस्थान, कोयम्बटूर

9.3.1.2 भारतीय सांकेतिक भाषा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र (आईएसएलआरटीसी) नई दिल्ली

9.3.1.3 टॉकिंग हैंड्स (Talking Hands)

9.3.1.4 ऑल इंडिया पिंगलवाड़ा चौरिटेबल सोसाइटी

9.3.1.5 श्रवण बाधित सक्षम फाउंडेशन (Deaf Enabled Foundation)

9.3.1.6 नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्पीच एंड हियरिंग (National Institute of Speech and Hearing - NISH)

9.3.1.7 भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गुवाहाटी (आइएसएलर्स) – IIT Gauhati (ISLERS)

9.4 सारांश

9.5 बोध प्रश्नों के उत्तर

9.6 अभ्यास कार्य

9.7 चर्चा के बिन्दु

9.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

9.1 प्रस्तावना

भारत अपनी विविध संस्कृतियों, परंपराओं और भाषाओं के लिए प्रसिद्ध भूमि है। इस समृद्ध विविधता के बीच, एक छिपा हुआ रत्न भारतीय सांकेतिक भाषा है। बहुत से लोग यह नहीं जानते कि भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग सदियों से श्रवण बाधित समुदाय के भीतर संचार के एक अनूठे रूप के रूप में किया जाता रहा है। अपने स्वयं के वाक्यविन्यास, व्याकरण और शब्दावली के साथ, यह दृश्य भाषा न केवल विविध भाषाई पृष्ठभूमियों के बीच की खाई को पाटती है बल्कि सांस्कृतिक संरक्षण के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में भी काम करती है। दुनिया भर में सांकेतिक भाषाओं की संख्या ठीक–ठीक ज्ञात नहीं है। आम तौर पर प्रत्येक देश की अपनी मूल सांकेतिक भाषा होती है; किसी के पास एक से अधिक भी हैं। सांकेतिक भाषाओं में बोली जाने वाली भाषाओं के बराबर क्षमता और जटिलता होती है; भाषा विज्ञान के क्षेत्र के हिस्से के रूप में उनके अध्ययन से पता चला है कि वे सभी भाषाओं में मौजूद मौलिक गुणों को प्रदर्शित करते हैं। इस इकाई में हम भारतीय सांकेतिक भाषा पाठ्यक्रम से संबंधित कई विषयों पर सिद्धांत से अभ्यास तक के विचार के बारें में जानने की कोशिश करेंगे।

9.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप इस योग्य हो जायेगे कि–

- भारतीय सांकेतिक भाषा पाठ्यक्रम के सिद्धांत से अवगत हो सकेगें।
- भारतीय सांकेतिक भाषा पाठ्यक्रम पर सिद्धांत से अभ्यास तक विचार के बारें मे जान सकेगें।
- भारतीय सांकेतिक भाषा पाठ्यक्रम का अनुप्रयोग कर सकेंगे।
- भारतीय सांकेतिक भाषा के प्रशिक्षण सम्बन्धी प्रौद्योगिकी के श्रोतों का उपयोग कर सकेगे।
- भारतीय सांकेतिक भाषा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र के बारे में जान सकेगे।

9.3 भारतीय सांकेतिक भाषा पाठ्यक्रम पर विचार : सिद्धांत से अभ्यास तक

संप्रेषण का एक माध्यम सांकेतिक भाषा है, जहाँ हाथ के इशारों और शरीर तथा चेहरे के हाव–भावों का उपयोग किया जाता है। इस प्रकार सांकेतिक भाषाएँ बोली जाने वाली मौखिक भाषाओं से संरचनात्मक रूप से अलग होती हैं और इनका प्रयोग अधिकांशतः श्रवण बाधित लोगों द्वारा किया जाता है। सांकेतिक भाषाएँ, बोली जाने वाली अन्य मौखिक भाषाओं की तरह ही जटिल व्याकरण युक्त भाषाएँ होती हैं। इनका स्वयं का व्याकरण तथा शब्दकोश होता है। यह उल्लेखनीय है कि सांकेतिक भाषा का कोई भी रूप सार्वभौमिक नहीं है। अलग–अलग देशों या क्षेत्रों में अलग–अलग सांकेतिक भाषाएँ प्रयोग की जाती हैं। जैसे– ब्रिटिश सांकेतिक भाषा, अमेरिकन सांकेतिक भाषा और

भारतीय सांकेतिक भाषा इत्यादि। इनके अलावा एक अंतर्राष्ट्रीय सांकेतिक भाषा भी मौजूद है जिसका प्रयोग अधिकांशतः अंतर्राष्ट्रीय और औपचारिक बैठकों के दौरान किया जाता है।

देश की नई शिक्षा नीति के अनुसार, भारतीय सांकेतिक भाषा (Indian Sign Language) को देश भर में मानकीकृत किया जाएगा, और इस भाषा में राष्ट्रीय तथा राज्य स्तर की पाठ्यक्रम सामग्री विकसित की जाएगी, जो कि श्रवण बाधित विद्यार्थियों द्वारा उपयोग में लाई जाएगी। इसके अलावा नई शिक्षा नीति में स्थानीय सांकेतिक भाषाओं को यथासंभव महत्त्व देने और बढ़ावा देने की भी बात की गई है।

सांकेतिक भाषाएँ दृश्य संकेतों वाली भाषाएँ है जो हाथों के संचलन, चेहरे के हाव–भावों और सिर/शरीर की अवस्था का प्रयोग करते हुए भाषाई सन्देश पहुंचाती हैं। 1960 के दशक में हुए अनुसंधानों ने बिना किसी संदेह के ये दर्शाया है कि सांकेतिक भाषाएँ पूर्ण रूप से नैसर्गिक भाषाएँ हैं, पूर्ण रूप से विकसित मानवी भाषाएँ हैं, जो कि भाषाई संगठन के हर स्तर पर बोलती भाषाओँ के समान हैं। विश्व के विभिन्न भागों में प्रयोग होने वाली विभिन्न सांकेतिक भाषाएँ एक दूसरे से अलग हैं और हर एक का अपना व्याकरण और शब्दावली है। भारतीय सांकेतिक भाषा का प्रयोग भारत भर में श्रवण बाधित समुदाय और उनके परिवारों द्वारा किया जाता है। भारत में श्रवण बाधित समुदाय मुख्य रूप से शहरी समुदाय है, जहाँ श्रवण बाधित लोग एक दूसरे से शैक्षिक संस्थानों, श्रवण बाधित क्लबों, संगठनों, और सामाजिक समारोह में मिलते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले श्रवण बाधित एक दूसरे से अलग रहते हैं और सांकेतिक भाषा तक उनकी पहुँच बिलकुल भी नहीं या फिर बहुत ही कम होती है, इसलिए, भारतीय सांकेतिक भाषा का प्रयोग ज्यादातर कस्बों और शहरों में ही केन्द्रित है। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले श्रवण बाधितों तक भारतीय सांकेतिक भाषा का पहुँचाना एक बड़ी चुनौती है। संयुक्त राष्ट्र दिव्यांगजन अधिकार सम्मेलन (UNCRPD) के अनुसार जीवन के हर एक क्षेत्र में दिव्यांगजनों को समान अवसर प्रदान करना सरकार के लिए अनिवार्य है।

जन्मजात श्रवण बाधिता/बहरापन एक बच्चे के लिए स्वाभाविक रूप से बोली जाने वाली मौखिक भाषा को सीखना असंभव बना देता है जैसा कि सुनने वाले बच्चे करते हैं। दरअसल, विभिन्न उम्र में श्रवण बाधित बच्चों की बोली जाने वाली मौखिक भाषा दक्षता के अध्ययन से पता चलता है कि अवशिष्ट श्रवण, श्रवण यंत्र और दृश्य लिप–रीडिंग (स्लेसिंगर और मीडो, 1972, मीडो, 1980) के साथ भी यह अधिग्रहण बेहद धीमा है।

भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग पूरे भारत में श्रवण बाधित अथवा उनके संबंधित श्रवण बाधित समुदाय में किया जाता है। भारत में श्रवण बाधित समुदाय मूलत: शहरी समुदाय है, जहां श्रवण बाधित लोग शैक्षिक संस्थाओं, श्रवण बाधित क्लबों और संस्थाओं तथा सामाजिक सभाओं में एकत्र होते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में, आमतौर पर श्रवण बाधित लोग एक.दूसरे से अलग.थलग रहते हैं और किसी भी सांकेतिक भाषा तक उनकी मामूली अथवा बिल्कुल भी पहुंच नहीं होती। इसलिए, वर्तमान में भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग कस्बों और शहरों तक सीमित है। ग्रामीण क्षेत्रों में श्रवण बाधित लोगों तक भारतीय सांकेतिक भाषा की पहुंच संभव बनाना बहुत बड़ी चुनौती बना हुआ है।

हालाँकि, भाषा की एक अलग पद्धति है जिसके माध्यम से श्रवण बाधित बच्चा मौखिक भाषा के बजाय सांकेतिक भाषा को अधिक स्वाभाविक रूप से सीख सकता है। इस साक्ष्य से हम समझ सकते हैं कि कैसे श्रवण बाधित बच्चे सांकेतिक भाषा सीखते हैं, सांकेतिक भाषा सीखना श्रवण पर नहीं बल्कि दृश्य प्रसंस्करण पर निर्भर करता है। हम मौखिक और सांकेतिक भाषा में भाषाई और संचार क्षमता हासिल करने में श्रवण बाधित और सुनने वाले बच्चों के बीच अंतर या समानता का भी पता लगा सकते हैं। तथ्य यह है कि श्रवण बाधित बच्चे केवल मौखिक भाषा के संपर्क में आते हैं जिसे वे स्वाभाविक रूप से उसी तरह से नहीं सीख सकते हैं जिस तरह सुनने में सक्षम वाले बच्चे करते हैं।

सांकेतिक भाषा किसी भी वास्तविक भाषा की तरह ही एक भाषा है। जैसा कि भाषाई अध्ययनों से पता चला है, सांकेतिक भाषाएँ दृश्य–स्थानिक भाषाएँ हैं जिनकी अपनी व्याकरणिक और भाषाई संरचना होती है। इसलिए, मौखिक भाषा से भिन्न रूप से संरचित, यह एक स्वतंत्र भाषा है जो श्रवण बाधित लोगों की एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित होती है। सांकेतिक भाषा का व्याकरण स्थान, हाथ के आकार और गति पर निर्भर करता है; इस भाषा में गैर–मैनुअल घटक भी हैं – चेहरे के भाव, शरीर की गति – जो दृश्य–स्थानिक कथनों के निर्माण में महत्वपूर्ण भाषाई भूमिका निभाते हैं। कुल मिलाकर, बोली जाने वाली मौखिक भाषाओं की तरह भारतीय सांकेतिक भाषा (आई.एस.एल) में भी वाक्य–विन्यास (लिलो–मार्टिन और क्लिमा, 1990), रूपात्मक (क्लिमा और बेलुगी, 1979) और ध्वनिविज्ञान (स्टोको, 1960) पर संरचित होती है।

श्रवण बाधित माता–पिता के श्रवण बाधित बच्चे आम तौर पर देशी सांकेतिक भाषा उपयोगकर्ता बन जाते हैं। श्रवण बाधित बच्चों द्वारा भारतीय सांकेतिक भाषा सीखने के चरणों पर उपलब्ध साहित्य के अनुसार सुझाव दिया गया है कि श्रवण बाधित माता–पिता के श्रवण बाधित बच्चे सांकेतिक भाषा को अपनी भाषा में बहुत व्यवस्थित, नियमित और उत्पादक तरीके से सीख रहे हैं, जैसे सुनने वाले बच्चे अपने माता–पिता से भाषा सीखते हैं। अर्थात एक श्रवण बाधित बच्चे की विभिन्न चरणों में भाषाई प्रगति, बच्चों द्वारा अपने माता–पिता से बोली जाने वाली भाषा सीखने के समान होती है।

कुछ अध्ययनों से संकेत मिलता है कि सांकेतिक भाषा का अधिग्रहण मौखिक भाषा की तुलना में तेज़ हो सकता है। जिस उम्र में हम देख सकते हैं कि श्रवण बाधित बच्चों में पहले संकेतों का उपयोग होता है, वह सुनने में सक्षम वाले बच्चों के लिए पहले शब्दों के उपयोग की उम्र से कम से कम 2 से 3 महीने पहले होता है (बोनविलियन एट अल., 1994)। मैकइंटायर (1977) ने बताया कि सांकेतिक भाषा शब्दावली का विकास भी तेजी से होता दिख रहा है। एक श्रवण बाधित बच्चे के पास 13 महीने में 85 से अधिक संकेतों की शब्दावली हो सकती है, जबकि उस उम्र में मौखिक भाषा के संपर्क में आने वाले बच्चे केवल अपने पहले शब्द सीख रहे होते हैं। इससे पता चलता है कि बोलने की तुलना में उपयोग की जाने वाली प्रणाली के न्यूरो–मस्कुलर विकास के कारण संकेत और सांकेतिक भाषा पहले उभर सकती है।

इसके अलावा, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि ये निष्कर्ष भाषण की तुलना में इशारों के संचार कार्य के पहले के विकासवादी विकास की ओर इशारा करते हैं। इसलिए, भाषा–पूर्व चरण में, श्रवण बाधित और सुनने में सक्षम वाले बच्चों द्वारा उपयोग किए जाने वाले इशारे (कोई संकेत नहीं) भाषा अधिग्रहण प्रक्रिया की जैविक नींव के अस्तित्व को प्रतिबिंबित कर सकते है। जिस प्रकार सुनने में सक्षम वाले बच्चों के हावभाव चल रहे भाषण का समर्थन करते हैं, उसी प्रकार श्रवण बाधित बच्चों के हावभाव चल रही सांकेतिक भाषा का समर्थन कर सकते हैं।

सांकेतिक भाषा के पहले अधिग्रहण की संभावना प्राकृतिक भाषा के विकास में संकेत संयोजनों के पहले उत्पादन की ओर ले जाती है। श्रवण बाधित बच्चे अपने श्रवण बाधित माता–पिता से सांकेतिक भाषा सीखकर 16 महीने में संकेत संयोजन बनाना शुरू कर देते हैं (बोनविलियन और फोल्वेन, 1993)। हालाँकि, अधिकांश सुनने में सक्षम वाले बच्चे 18 से 22 महीने के बीच पहली बार बोले गए शब्दों को संयोजित करना शुरू करते हैं। फिर भी, सांकेतिक भाषा में दो–हावभाव वाले उच्चारण आम तौर पर उसी उम्र में सामने आते हैं, जिस उम्र में बोली जाने वाली भाषा में दो–शब्द के उच्चारण होते हैं।

श्रवण बाधित बच्चों के उच्चारण में सांकेतिक भाषा की व्याकरणिक जटिलता के विकास पर अध्ययन से पता चला है कि श्रवण बाधित बच्चे मूल रूप से सांकेतिक भाषा सीखते हैं, लगभग तीन साल की उम्र में रूपात्मक वाक्य–विन्यास–स्थानिक वाक्य बनाना शुरू कर देते हैं जिन्हें क्रिया समझौता कहा जाता है। व्याकरणिक घटना में क्रिया समझौते का अर्थ है कि क्रिया अपने विषय स्थान से अपने वस्तु स्थान पर जाती है । इसके अलावा, लगभग तीन साल की उम्र में, श्रवण बाधित बच्चे क्रियाओं की गति में कुछ नियमित परिवर्तन कर सकते हैं, जिन्हें विभक्ति कहा जाता है, जिससे पता चलता है कि कोई कार्य कैसे किया जाता है, चाहे वह आदतन हो, जारी हो या दोहराव वाला हो।

दूसरी भाषा सीखना न केवल एक ही चीज़ के लिए अलग–अलग शब्द सीखना है, बल्कि चीजों के बारे में सोचने का एक और तरीका सीखना है। सदियों से, जीवन के सभी क्षेत्रों के लोग एक–दूसरे के साथ संवाद करने के लिए अपने हाथों का उपयोग करते रहे हैं, और सदियों से जीवन के सभी क्षेत्रों के लोग सीखते रहे हैं। सामान्य तौर पर, सांकेतिक भाषा– जैसा कि एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका द्वारा परिभाषित किया गया है, शारीरिक गतिविधियों के माध्यम से संचार का कोई भी साधन तब उपयोग किया जाता है जब मौखिक संचार असंभव या वांछनीय नहीं होता है– सदियों से दर्जनों संस्कृतियों द्वारा उपयोग किया जाता रहा है, लेकिन भारतीय सांकेतिक भाषा (आईएसएल) बिल्कुल नया है।

भारतीय सांकेतिक भाषा की तैयारी या अभ्यास के दौरान अभ्यर्थियों को श्रवण बाधित संस्कृति या सांकेतिक भाषा के बारे में बिल्कुल भी ज्ञान नहीं होने की संभावना अधिक हो सकता है। पहले तो उन्होंने सोचेंगे कि यह कुछ हद तक आसान हो सकता है, क्योंकि पहले दिन देखने पर उन्हें बीच में कुछ रुकावटें हो सकता है, लेकिन फिर भी कोई घबराने की जरुरत है। अभ्यास में आगे बढ़ने

के बाद, उन्हें पता चल जायेगा कि टोकने वाले केवल पहले दिन के लिए थे और पूरे पाठ्यक्रम के दौरान वे कक्षा में बात नहीं कर सकते हैं, और वे धीरे–धीरे सांकेतिक भाषा का अभ्यास करने में सक्षम बन जाएँगे।

बोध प्रश्न

टिप्पणी क – नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए ।

ख – इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की मिलान करें ।

प्र 1. भारतीय सांकेतिक भाषा पाठ्यक्रम के सिद्धांतों पर विचार बताइये ?

_____
_____
_____

प्र 2. भारतीय सांकेतिक भाषा की तैयारी या अभ्यास के दौरान अभ्यर्थियों के अनुभवों के बारें में लिखिए ?

_____
_____
_____

9.3.1 भारतीय सांकेतिक भाषा (ISL) के प्रशिक्षण और प्रयोग के लिए प्रौद्योगिकी के कुछ स्रोत

किसी देश में श्रवण बाधित समूह द्वारा प्रयुक्त स्वदेशी भाषा ही सांकेतिक भाषा होती है। हर देश की अपनी एक सांकेतिक भाषा होती है, जो श्रवण बाधित समूह के भीतर अनायास विकसित हो जाती है। श्रवण बाधित व्यक्तियों की रहने की स्थिति में सुधार के लिए किये जाने वाली हर प्रयास में और संप्रेषण बाधाओं को दूर करना सबसे महत्वपूर्ण है। एक श्रवण बाधित व्यक्ति को किसी भी सामाजिक परिस्थिति में सांकेतिक भाषा का उपयोग करने का अधिकार होना चाहिए। सांकेतिक भाषा एक प्रकार की भाषा है जो संवाद करने के लिए हाथ की गतिविधियों, चेहरे के भाव और शरीर की भाषा का उपयोग करती है। यह मुख्य रूप से श्रवण बाधितों और उनके संबंधित लोगों द्वारा उपयोग किया जाता है जो सुनने में सक्षम होते हैं लेकिन बोल नहीं सकते। लेकिन इसका उपयोग कुछ सुनने में सक्षम वाले लोगों द्वारा भी किया जाता है, ज्यादातर अक्सर परिवार और श्रवण बाधितों के रिश्तेदार, और दुभाषिए जो एक दूसरे के साथ संवाद करने के लिए श्रवण बाधितों और उनके व्यापक समुदायों को सक्षम करते हैं। सांकेतिक भाषा एक दूसरे के साथ संवाद करने के लिए श्रवण बाधितों की जरूरत को पूरा करने के लिए एक भाषा के रूप में विकसित की गई है। सांकेतिक भाषा एक दृश्य भाषा है जहां हाथों, चेहरे, सिर, ऊपरी धड़ और आंखों द्वारा इस्तेमाल

किया जाता है। पुस्तकों, पत्रिकाओं, शब्दकोशों, मोबाइल एप्लिकेशन, वेबसाइटों की मदद से सांकेतिक भाषा सीखने के कई तरीके हैं।

9.3.1.1 रामकृष्ण मिशन विवेकानंद शैक्षिक और अनुसंधान संस्थान, कोयम्बटूर

रामकृष्ण मिशन विवेकानंद शैक्षिक और अनुसंधान संस्थान (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) को फैकल्टी ऑफ डिसएबिलिटी मैनेजमेंट एंड स्पेशल एजुकेशन (FDMSE) संकाय (रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द विश्वविद्यालय, अंतर्राष्ट्रीय मानव संसाधन विकास केन्द्र के नाम से जाना जाता था) के साथ रामकृष्ण मिशन विद्यालय, कोयम्बटूर में स्थापित किया गया था। यह संकाय 2005 से विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में शामिल है। FDMSE के श्रवण बाधित विभाग के तहत, एक सांकेतिक भाषा इकाई है जो सांकेतिक भाषा के प्रचार और विकास के लिए काम कर रही है। यह इकाई श्रवण बाधित वाले बच्चों के शिक्षा और पुनर्वास के क्षेत्र में मानव संसाधन विकसित करने के लिए कई दीर्घकालिक और अल्पकालिक पाठ्यक्रम पेश कर रही है। शैक्षणिक समारोह के अलावा, सक्रिय रूप से सांकेतिक भाषा के विभिन्न पहलुओं में शोध करने में भी शामिल है। भारत के इतिहास में वर्ष 2002 में दृश्य चित्र सहित भारतीय सांकेतिक भाषा शब्दकोश को सर्व प्रथम RKMVERI-FDMSE द्वारा प्रकाशित किया गया था। और इसके अलावा भारतीय सांकेतिक भाषा शब्दकोश में विभिन्न श्रेणियों जैसे सामान्य, भौतिकी, बैंकिंग और वाणिज्य, तकनीकी शब्दकोशों में विभिन्न प्रकार के दृश्य चित्र सहित संकेतों का वर्णन किया गया था। भारतीय सांकेतिक भाषा के उपयोगकर्ताओं द्वारा भारत भर से हिंदी में भारतीय सांकेतिक भाषा शब्दकोश की आवश्यकता के लिए विभिन्न अनुरोध और सुझाव प्राप्त करने के बाद, विश्वविद्यालय ने 2016 में भारतीय सांकेतिक भाषा द्विभाषी (अंग्रेजी और हिंदी) शब्दकोश जारी किया। इसमें विभिन्न श्रेणियों जैसे सामान्य, भौतिकी, प्रिंट संस्करण, डीवीडी में, मोबाइल एप्लिकेशन (11 भारतीय भाषाओं में) में और वीडियो RKMVERI&FDMSE वेबसाइट (indiansignlanguage.org) पर श्रवण बाधित व्यक्तियों के लाभ के लिए उपलब्ध कराया गया है।

9.3.1.2 भारतीय सांकेतिक भाषा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र (आईएसएलआरटीसी) नई दिल्ली

भारतीय सांकेतिक भाषा के संबंध में किसी स्वतंत्र संस्थान का गठन किया जाना बहुत आवश्यक था, ताकि वहां भारतीय सांकेतिक भाषा को बढ़ावा देने और उसके संबंध में प्रशिक्षण और अनुसंधान करने पर विशिष्ट तौर पर ध्यान केंद्रित किया जा सके। भारतीय सांकेतिक भाषा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र (आईएसएलआरटीसी) नई दिल्ली, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग के अंतर्गत एक स्वायत्त निकाय है। इसकी स्थापना 2015 में की गई थी। इस केंद्र का विजन एक समावेशी समाज का निर्माण करना है जिसमें दिव्यांगजनों की उन्नति और विकास के लिए समान अवसर प्रदान किए जाना ताकि वे उपयोगी, सुरक्षित और सम्मानजनक जीवन व्यतीत हो सकें।

आईएसएलआरटीसी द्वारा वर्ष 2018 में, 3,000 शब्दों का पहला भारतीय सांकेतिक भाषा शब्दकोश प्रारंभ किया गया । आज इस शब्दकोश में 10,000 शब्द हैं। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता

मंत्रालय के दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग के अंतर्गत भारतीय सांकेतिक भाषा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र (आईएसएलआरटीसी) द्वारा विकसित किए गए इस शब्दकोश में विभिन्न श्रेणियों के शब्दों को समाहित किया गया है। आईएसएल शब्दकोश में पांच श्रेणियों के शब्द सम्मिलित हैं –

रोज़मर्रा की शब्दावली - इस श्रेणी में रोज़मर्रा की बातचीत में उपयोग में लाए जाने वाले शब्द शामिल किए गए हैं। इस वीडियो में संकेत और संबंधित अंग्रेजी शब्द सम्मिलित हैं।

कानूनी शब्दावली - इस श्रेणी में 237 कानूनी शब्दों के वीडियो शामिल हैं,जिनसे विभिन्न कानूनी स्थितियों में उपयोग में लाए जाने वाले हलफनामा बरी करने आदि जैसी जटिल कानूनी शब्दावली को समझाने में मदद मिलती है।

शैक्षणिक शब्दावली - श्रवण बाधित या श्रवण बाधित बच्चों को जटिल शैक्षणिक अवधारणाओं को समझने में सहायता देने के लिए शैक्षणिक शब्दकोश में तंत्रिकातंत्र, रोटेशन और क्रांति आदि जैसे शब्दों को समझाया गया है। भौतिकी, भूगोल, जीवविज्ञान, गणित आदि जैसे विभिन्न विषयों के शब्दों को इसमें समाहित किया गया है। इस श्रेणी में 212 शब्दावलियों के लिए 229 वीडियो हैं।

चिकित्सकीय शब्दावली - इस श्रेणी में 200 चिकित्सकीय शब्दावलियों के लिए 200 सांकेतिक वीडियो शामिल हैं, जो अस्पतालों और चिकित्सकीय स्थितियों में उपयोग की जाने वाली चिकित्सा शब्दावली को बेहतर ढंग से समझने में श्रवण बाधित समुदाय की मदद करेंगे।

तकनीकी शब्दावली - इस श्रेणी के अंतर्गत 204 तकनीकी शब्दावलियों के लिए आईएसएल में संकेतों और स्पष्टीकरण के 206 वीडियो हैं जिनका उपयोग व्यावसायिक प्रशिक्षण या कंप्यूटर पाठ्यक्रमों में किया जाता है।

भारतीय सांकेतिक भाषा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र ने श्रवण बाधित और सुनने में समक्ष वाले लोगों के लिए एक आईएसएल शब्दकोश विकसित किया है, जो उन्हें सीखने और अपनी भावनाओं, विचारों आदि को व्यक्त करने के लिए अधिकतम शब्द प्रदान करता है। आईएसएल शब्दकोश का उद्देश्य भारतीय सांकेतिक भाषा के उपयोग का प्रसार करना और इसके परिणाम स्वरूप श्रवण बाधित लोगों को बेहतर शिक्षा और रोजगार के अवसर प्राप्त करने में मदद करना है। शब्दकोश का उद्देश्य भारतीय सांकेतिक भाषा शिक्षकों, शिक्षार्थियों, बधिरों के शिक्षकों, दुभाषियों, श्रवण बाधित बच्चों के माता–पिता, शोधकर्ताओं आदि के लिए एक संसाधन के रूप में कार्य करना है। श्रवण बाधित उपयोगकर्ता इस शब्दकोश से लाभान्वित होंगे क्योंकि इससे वे किसी विशेष संकेत और उसके अंग्रेजी / हिंदी समकक्ष के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

भारतीय सांकेतिक भाषा शब्दकोश में देश के विभिन्न भागों में उपयोग होने वाले क्षेत्रीय संकेत भी शामिल हैं। इसका मूलभूत विचार श्रवण बाधितों/बधिरों और सुनने में सक्षम समुदायों के बीच संचार संबंधी बाधाओं को दूर करना है। इसका लक्ष्य श्रवण बाधितों/बधिरों को बोलने और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अवसर का संवैधानिक अधिकार देना तथा उन्हें समाज की मुख्यधारा में

लाना भी है। शब्दसूची में संकेतों के साथ उनके अंग्रेजी और हिंदी समकक्ष भी दिए गए हैं। भारतीय सांकेतिक भाषा में शैक्षणिक, चिकित्सकीय, कानूनी और तकनीकी शब्दावलियों की व्याख्याएं हैं, ताकि श्रवण बाधित लोग आमतौर पर शैक्षणिक या कानूनी या चिकित्सकीय स्थितियों में उपयोग में लाए जाने वाले जटिल शब्दों को समझ सकें। शब्दकोश से दुभाषियों, श्रवण बाधितों/बधिरों के शिक्षकों, श्रवण बाधित बच्चों के माता–पिता, आदि को लाभ होगा और इससे श्रवण बाधित/बहरे वयस्कों को अंग्रेजी/हिंदी सीखने में भी मदद मिलेगी। भारतीय सांकेतिक भाषा अनुसंधान और प्रशिक्षण केंद्र (ISLRTC) के भारतीय सांकेतिक भाषा शब्दकोश अपने वेबसाईट http://islrtc.nic.in/hi/video-hiearchy-select पर उपलब्ध हैं।

भारतीय सांकेतिक भाषा शब्दकोश के आरंभ होने के बाद विशेष शिक्षकों, भारतीय सांकेतिक भाषा दुभाषियों, श्रवण बाधित बच्चों के माता–पिता, क्षेत्र के पेशेवरों, श्रवण बाधित लोगों के साथ काम करने वाले संगठनों सहित आम जनता द्वारा उसका उपयोग किया गया है। शब्दकोश का उपयोग दिव्यांग बच्चों के लिए शैक्षिक सामग्री तैयार करने और स्पीच/टेक्स्ट– टू– साइन तथा साइन–टू–स्पीच/टेक्स्ट मशीन अनुवाद सॉफ़्टवेयर के संसाधन के रूप में भी किया जा रहा है। भारतीय सांकेतिक भाषा शब्दकोश, भारतीय सांकेतिक भाषा के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने, बातचीत में सहायता प्रदान करने और श्रवण बाधित व्यक्तियों को बेहतर सुगम्यता या एक्सेसेबिलिटी सेवाएं प्रदान करने का एक महत्वपूर्ण संसाधन है, और इस प्रकार यह दिव्यांगजन अधिकार (आरपीडब्ल्यूडी) अधिनियम, 2016 के लक्ष्यों को साकार करने की दिशा में एक आवश्यक कदम है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीय सांकेतिक भाषा – राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020, पैरा 4.22 में, अन्य बातों के साथ–साथ, देशभर में भारतीय सांकेतिक भाषा (आईएसएल) के मानकीकरण और श्रवण बाधित विद्यार्थियों के उपयोग के लिए राष्ट्रीय और राज्यस्तरीय पाठ्यचर्या की सामग्री तैयार करने की सिफारिश करती है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) ने भारतीय सांकेतिक भाषा में एनसीईआरटी की पाठ्य पुस्तकों पर आधारित वीडियो तैयार करने के उद्देश्य से भारतीय सांकेतिक भाषा अनुसंधान और प्रशिक्षण केंद्र (आईएसएलआरटीसी) के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किये हैं। भारतीय सांकेतिक भाषा शब्दकोश को वीडियो प्रारूप में लॉन्च किया गया है और यह हितधारकों के बीच व्यापक पहुंच और प्रसार के लिए दीक्षा पोर्टल पर उपलब्ध है। एनसीईआरटी वीडियो में ऑडियो और सब–टाइटल शामिल करके इस शब्दकोश को मजबूत बना रहा है, ताकि 10,000 शब्दों वाले इस शब्दकोश की पहुंच केवल श्रवणबाधितों तक ही सीमित न रहे। इसके अलावा, एनसीईआरटी आईएसएलआरटीसी के साथ मिलकर 10,000 शब्दों के मौजूदा भारतीय सांकेतिक भाषा शब्दकोश में स्कूली पाठ्यक्रम पर आधारित नई शब्दावलियां और शब्द जोड़ रहा है। अबतक, एनसीईआरटी ने कक्षा I से VI तक 800 से अधिक भारतीय सांकेतिक भाषा वीडियो बनाए हैं और उन्हें दीक्षा पर अपलोड किया है ताकि उनका उपयोग श्रवण बाधित (एचआई) लोग कर सके। ये वीडियो पीएमई विद्या (वन क्लास, वन चैनल), डीटीएचटीवी चैनलों के माध्यम से भी नियमित रूप से प्रसारित किए जाते हैं ताकि इन ई–कॉन्टेंट्स तक सुसंगत पहुंच सुनिश्चित की जा सके।

9.3.1.3 टॉकिंग हैंड्स (Talking Hands)

टॉकिंग हैंड्स 2013 में शुरू की गई एक साइन लैंग्वेज लर्निंग वेबसाइट है। यह दुनिया भर में रहने वाले श्रवण बाधित व्यक्तियों और सुनने वालों के बीच संप्रेषण के माहौल को बनाए रखने के लिए बनाई गई है। वेबसाइट में आमतौर पर भारतीय साइन लैंग्वेज रिसोर्स होता है, जहाँ कोई भी व्यक्ति जो साइन लैंग्वेज सीखने का इच्छुक है उपयोग कर सकता है। यह भारतीय, अंतर्राष्ट्रीय और स्थानीय सांकेतिक भाषाओं का एक संयोजन है। टॉकिंग हैंड्स वेबसाइट .talkinghands.co.in और यूट्यूब पर उपलब्ध साइन लैंग्वेज पिक्चर्स और वीडियोज में शामिल हैं – अक्षर, नंबर, रंग, परिवार और संबंध, भोजन, खेल, व्याकरण /अंग्रेजी, साक्षात्कार चिकित्सा/स्वास्थ्य, अन्य वाक्य उपलब्ध है।

9.3.1.4 ऑल इंडिया पिंगलवाड़ा चौरिटेबल सोसाइटी

ऑल इंडिया पिंगलवाड़ा चौरिटेबल सोसाइटी, अमृतसर के तत्वावधान में islpro-info श्रवण बाधित व्यक्तियों क्षितिज का विस्तार कर रहा है। श्रवण बाधित बच्चों, उनके माता–पिता, बधिरों के शिक्षकों या किसी और को योगदान करना और श्रवण बाधित समुदाय के कल्याण के लिए अप–टू–डेट जानकारी प्रदान करना इस साइट का इरादा है। पहली बार जानकारी पंजाबी में उपलब्ध कराई जा रही है। यह साइट भारतीय बच्चों के सांकेतिक भाषा वीडियो, लेख और केस स्टडी और उनके अभिभावकों के अनुभव प्रदान करती है। उनकी वेबसाइट www-islpro.info में इंडियन साइन लैंग्वेज डिक्शनरी (अंग्रेजी) और इंडियन साइन लैंग्वेज डिक्शनरी (पंजाबी), मैथ्स साइन लैंग्वेज डिक्शनरी उपलब्ध हैं।

9.3.1.5 श्रवण बाधित सक्षम फाउंडेशन (Deaf Enabled Foundation)

श्रवण बाधित सक्षम फाउंडेशन (DEF) सुनने में सक्षम वाले लोग और श्रवण बाधित व्यक्तियों के बीच संप्रेषण की अंतर के बारें में चिंतित है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए, श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए सांकेतिक भाषा पाठ्यक्रम अपने वेबसाइट www.def.org.in प्रदान कर रहे हैं जो इसे भाषा के रूप में सीखने में रुचि रखते हैं। यह उन लोगों के लिए एक आवश्यकता है जो सांकेतिक भाषा के दुभाषियों के रूप में काम करना चाहते हैं। निकट भविष्य में कई सांकेतिक भाषा दुभाषियों (इंटरप्रिटेटर) की आवश्यकता होगी, जो विभिन्न सार्वजनिक स्थानों जैसे अस्पतालों, रेलवे स्टेशनों, पुलिस स्टेशनों और अदालतों के भीतर एक श्रवण बाधित व्यक्ति की कार्यवाही के दौरान व्याख्या करेंगे।

9.3.1.6 नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्पीच एंड हियरिंग (National Institute of Speech and Hearing-NISH)

भारतीय सांकेतिक भाषा (ISL) पर ऑनलाइन कोर्स – नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्पीच एंड हियरिंग (NISH) भारतीय सांकेतिक भाषा (ISL) पर 6 सप्ताह का ऑनलाइन कोर्स मुफ्त में करा रहा है।

उम्मीदवार "भारतीय सांकेतिक भाषा से परिचय" शीर्षक वाले पाठ्यक्रम के लिए nish-ofabee-com http://nish.ofabee.com पर पंजीकरण कर सकते हैं। इस कोर्स में प्रत्येक सप्ताह 10–15 मिनट के वीडियो शामिल हैं जो कि Enfin Technologies Technopark} द्वारा विकसित ऑनलाइन प्रशिक्षण मंच के माध्यम से दिए जाएंगे। पंजीकृत उम्मीदवारों को असाइनमेंट में भाग लेना है। पाठ्यक्रम का उद्देश्य विशेष शिक्षकों और माता–पिता के लिए भारतीय सांकेतिक भाषा को परिचित करना है। इस के लिए कोई प्रमाण पत्र जारी नहीं किया जाएगा। पाठ्यक्रम सरल शब्दों के संकेत और वाक्यों में इसका उपयोग कैसे किया जाता है। भारतीय सांकेतिक भाषा का व्याकरण भी पेश किया गया है।

9.3.1.7 भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गुवाहाटी (आइएसएलर्स) – IIT Gauhati ISLERS

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गुवाहाटी के ISLERS परियोजना का उद्देश्य भारत के श्रवण बाधित छात्रों के लिए एक स्वचालित भारतीय संकेत भाषा शिक्षा और मान्यता मंच विकसित करना है। यह प्रणाली भारत के श्रवण बाधित छात्रों और लोगों को प्राथमिक/व्यावसायिक/उच्च शिक्षा में काफी मदद कर सकती है। ऑडियो–विजुअल मोड में व्यापक इंटरैक्टिव फीचर्स के साथ फ्रेमवर्क को भारत की 14 विभिन्न भाषाओं में विस्तारित करने का प्रस्ताव है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी क – नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए ।

ख – इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की मिलान करें ।

प्र 3. भारतीय सांकेतिक भाषा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र द्वारा निर्मित विभिन्न प्रकार के सांकेतिक भाषा शब्दकोश कौन से हैं?

_____
_____
_____

प्र 4. सांकेतिक भाषा के संबंध में IIT गुवाहाटी ने कौन सी परियोजना शुरू की है?

_____
_____
_____

9.4 सारांश

भारतीय सांकेतिक भाषा (आईएसएल) भारत में श्रवण बाधित समुदाय द्वारा उपयोग की जाने वाली संचार की दृश्य–संकेतात्मक पद्धति है। यह संचार का एक अनूठा रूप है जो अर्थ व्यक्त करने के लिए संकेतों, इशारों, चेहरे के भाव और शरीर की गतिविधियों के संयोजन का उपयोग करता है। भारतीय सांकेतिक भाषा का एक समृद्ध इतिहास है और यह भारत में श्रवण बाधित समुदाय के लिए संचार का एक महत्वपूर्ण साधन है। भारतीय सांकेतिक भाषा एक प्राकृतिक भाषा है जो भारत में श्रवण बाधित समुदाय के भीतर सदियों से विकसित हुई है। यह अपने व्याकरणिक नियमों और वाक्यविन्यास के साथ एक पूर्ण और स्वतंत्र भाषा है।भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग मुख्य रूप से उन व्यक्तियों द्वारा किया जाता है जो श्रवण बाधित हैं या कम सुन पाते हैं, जिससे उन्हें एक–दूसरे के साथ और भाषा सीख चुके सुनने में सक्षम वाले व्यक्तियों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करने की अनुमति मिलती है। भारतीय सांकेतिक भाषा श्रवण बाधित समुदाय के जीवन में महत्वपूर्ण महत्व रखती है, जो उन्हें संचार और अभिव्यक्ति के साधन प्रदान करती है। भारतीय सांकेतिक भाषा श्रवण बाधित व्यक्तियों के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और कई लाभ प्रदान करती है। भारतीय सांकेतिक भाषा का एक समृद्ध ऐतिहासिक महत्व है, जिसमें प्राचीन ग्रंथों में संदर्भ, ऐतिहासिक घटनाओं में भागीदारी और भारतीय लोककथाओं में इसकी भूमिका शामिल है। इसलिए समुदाय के सारे लोगों को भारतीय सांकेतिक भाषा की जानकारी, पहचान और अभ्यास से श्रवण बाधित लोगों से संप्रेषण करने में आसान हो सकता है।

9.5 बोध प्रश्नों के उत्तर

उ 1. भारतीय सांकेतिक भाषा पाठ्यक्रम के सिद्धांत

भाषा की एक अलग पद्धति है जिसके माध्यम से श्रवण बाधित बच्चा मौखिक भाषा के बजाय सांकेतिक भाषा को अधिक स्वाभाविक रूप से सीख सकता है। यह साक्ष्य हमें यह वर्णन करने की अनुमति देता है कि श्रवण बाधित बच्चे सांकेतिक भाषा कैसे सीखते हैं जो श्रवण पर नहीं बल्कि दृश्य प्रसंस्करण पर निर्भर करती है, और बोली जाने वाली और सांकेतिक भाषा में भाषाई और संचार क्षमता के अधिग्रहण में श्रवण बाधित और सुनने वाले बच्चों के बीच क्या अंतर या समानताएं होती हैं।

उ 2. भारतीय सांकेतिक भाषा की तैयारी या अभ्यास के दौरान अभ्यर्थियों को श्रवण बाधित संस्कृति या सांकेतिक भाषा के बारे में बिल्कुल भी ज्ञान नहीं होने की संभावना अधिक हो सकता है । पहले तो उन्होंने सोचेंगे कि यह कुछ हद तक आसान हो सकता है, क्योंकि पहले दिन देखने पर उन्हें बीच में कुछ रुकावटें हो सकता है, लेकिन फिर भी कोई घबराने की जरुरत है। अभ्यास में आगे बढ़ने के बाद, उन्हें पता चल जायेगा कि टोकने वाले केवल पहले दिन के लिए थे और पूरे पाठ्यक्रम के दौरान वे कक्षा में बात नहीं कर सकते हैं, और वे धीरे–धीरे सांकेतिक भाषा का अभ्यास करने में सक्षम बन जाएँगे ।

उ 3. भारतीय सांकेतिक भाषा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र द्वारा निर्मित विभिन्न प्रकार के सांकेतिक भाषा शब्दकोश

भारतीय सांकेतिक भाषा अनुसंधान और प्रशिक्षण केंद्र (ISLRTC) ने भारतीय सांकेतिक भाषा शब्दकोश को विकसित किया है। 3000 शब्दों के साथ शब्दकोश का पहला संस्करण मार्च 2018 में लॉन्च किया गया था। दूसरे संस्करण में शैक्षणिक, कानूनी, चिकित्सा, तकनीकी और रोजमर्रा की शर्तों के तहत 6000 शब्द शामिल करते हुए फरवरी 2019 में लॉन्च किया गया था। फरवरी 2021 को 10,000 शब्दों के साथ भारतीय सांकेतिक भाषा शब्दकोश का तीसरा संस्करण लॉन्च किया गया है। भारतीय सांकेतिक भाषा शब्दकोश, डीवीडी के रूप में जारी किया गया है, इसमें रोजमर्रा के उपयोग के संकेत और उनके अनुरूप अंग्रेजी और हिंदी शब्द हैं। भारतीय सांकेतिक भाषा में कानूनी, अकादमिक, चिकित्सा और तकनीकी क्षेत्रों से विशिष्ट शब्द स्पष्ट किए गए हैं। शब्दकोश से दुभाषियों, बधिरों के शिक्षकों, श्रवण बाधित बच्चों के माता–पिता, आदि को लाभ होगा और इससे बहरे वयस्कों को अंग्रेजी/हिंदी सीखने में भी मदद मिलेगी।

प्र 4. सांकेतिक भाषा के संबंध में IIT गुवाहाटी ने कौन सी परियोजना शुरू की है?

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गुवाहाटी के ISLERS परियोजना का उद्देश्य भारत के श्रवण बाधित छात्रों के लिए एक स्वचालित भारतीय संकेत भाषा शिक्षा और मान्यता मंच विकसित करना है। यह प्रणाली भारत के श्रवण बाधित छात्रों और लोगों को प्राथमिक/व्यावसायिक/उच्च शिक्षा में काफी मदद कर सकती है। ऑडियो–विजुअल मोड में व्यापक इंटरैक्टिव फीचर्स के साथ फ्रेमवर्क को भारत की 14 विभिन्न भाषाओं में विस्तारित करने का प्रस्ताव है।

9.6 अभ्यास के कार्य

प्र0–1 भारतीय सांकेतिक भाषा पाठ्यक्रम को कैसे प्रयोग मे ला सकते हैं ।

प्र0–2 भारतीय सांकेतिक भाषा पाठ्यक्रम पर सिद्धांत से अभ्यास तक विचारों पर अपने सुझाव दीजिये।

9.7 चर्चा के बिन्दु

प्र0–1 भारतीय सांकेतिक भाषा पाठ्यक्रम को आपके पाठशाला में प्रयोग के बारे में जानकारी प्राप्त कर चर्चा कीजिये।

9.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- पोलाक, डी. (1985),सीमित श्रवण वाले शिशु और प्रीस्कूलर के लिए शैक्षिक ऑडियोलॉजी (दूसरा संस्करण): स्प्रिंगफील्ड, आईएलः सी.सी. थॉमस प्रकाशन.
- पावर, डी., और लेह, जी. (2004), श्रवण बाधित छात्रों को शिक्षित करना–वैश्विक परिप्रेक्ष्य, वाशिंगटन, डीसीः गैलॉडेट यूनिवर्सिटी प्रेस।
- मूरेस, डोनाल्ड एफ. (1990),बहरेपन के शैक्षिक और विकासात्मक पहलू,गैलॉडेटः यूनिवर्सिटी प्रेस।
- जोन्स, एम. (2002), "संस्कृति के रूप में बहरापनः एक मनोसामाजिक परिप्रेक्ष्य",न्यूयॉर्कः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
- पावर, डी.,और लेह, जी.(2004) श्रवण बाधित छात्रों को शिक्षित करना–वैश्विक परिप्रेक्ष्य, वाशिंगटन, डीसीः गैलॉडेट यूनिवर्सिटी प्रेस।
- पेट्टाला, आर. (2020),श्रवण बाधित बच्चों के लिए पाठ्यचर्या संबंधी पहलू,नई दिल्लीः कनिष्क प्रकाशक।

Note

Note

Note